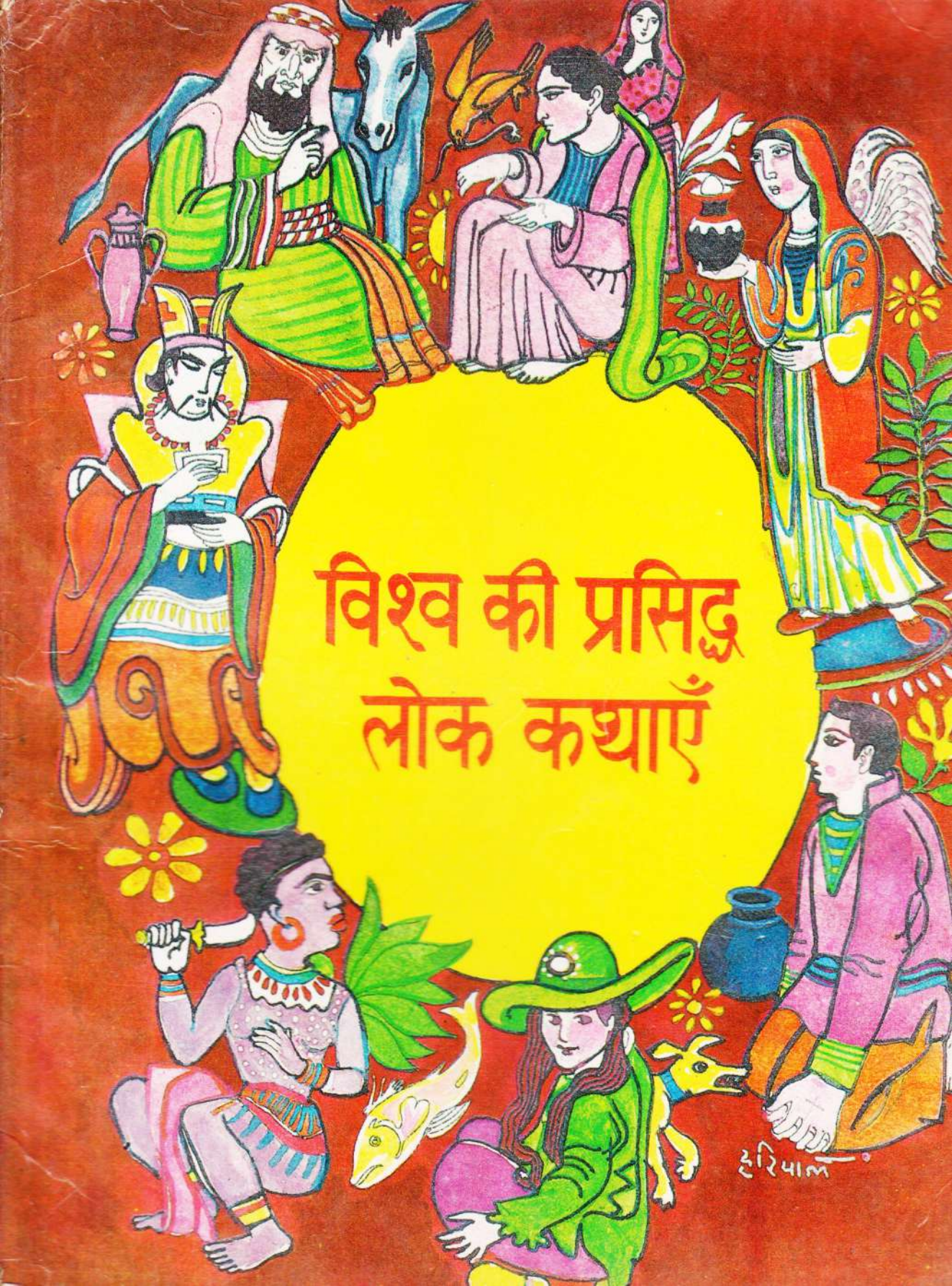
विश्व की प्रसिद्ध
लोक कथाएँ
હરિપાલ

विश्व की प्रसिद्ध लोक कथाएँ

पढ़ें और सीखें योजना

विश्व की प्रसिद्ध लोक कथाएँ

महेश दर्पण

विभागीय सहयोग
डॉ० रामजन्म शर्मा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
फरवरी 1987 माघ 1908

पुनर्मुद्रण
अगस्त 1997 भाद्रपद 1919

PD 5T GR

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 1987

सर्वाधिकार सुरक्षित

☐ प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

☐ इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय, या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

☐ इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन, बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110016	**बैंगलूर 560085**	**अहमदाबाद 380014**	**24 परगना 743179**

मूल्य : रू. 51.00

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा कोमल ऑफसैट, D-91/2 ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़ I, नई दिल्ली 110 020 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों के लिए अच्छे शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की दिशा में हमारी परिषद् पिछले पच्चीस वर्षों से कार्य कर रही है। हमारे कार्य का प्रभाव भारत के सभी राज्यों और संघशासित प्रदेशों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पड़ा है, और इस पर परिषद् के कार्यकर्ता संतोष का अनुभव कर सकते हैं।

किन्तु हमने देखा है कि अच्छे पाठ्यक्रम और अच्छी पाठ्यपुस्तकों के बावजूद, हमारे विद्यार्थियों की रुचि स्वतः पढ़ने की ओर अधिक नहीं बढ़ती। इसका एक मुख्य कारण अवश्य ही हमारी दूषित परीक्षा-प्रणाली है जिसमें पाठ्यपुस्तकों के द्वारा दिए गए ज्ञान की ही परीक्षा ली जाती है। इस कारण बहुत ही कम विद्यालयों में कोर्स के बाहर की पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है लेकिन अतिरिक्त पठन में बच्चों की रुचि न होने का एक बड़ा कारण यह भी है कि विभिन्न आयुवर्ग के बच्चों के लिए कम मूल्य की अच्छी पुस्तकें पर्याप्त संख्या में उपलब्ध भी नहीं हैं। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में इस कमी को पूरा करने के लिए कुछ काम प्रारंभ हुआ है पर वह बहुत ही नाकाफी है।

इस दृष्टि से परिषद् ने बच्चों के लिए पुस्तक लेखन की दिशा में महत्त्वाकांक्षी योजना प्रारंभ की है। इसके अंतर्गत "पढ़ें और सीखें" शीर्षक से एक पुस्तकमाला तैयार करने का विचार है जिसमें विभिन्न आयुवर्ग के बच्चों के लिए सरल भाषा और रोचक शैली में अनेक विषयों पर बड़ी संख्या में पुस्तकें तैयार की जाएँगी। हम आशा करते हैं कि 1987 के अंत तक हम निम्नलिखित विषयों पर हिन्दी में 50 पुस्तकें प्रकाशित कर सकेंगे।

(क) शिशुओं के लिए पुस्तकें
(ख) कथा-साहित्य
(ग) जीवनियाँ
(घ) देश-विदेश परिचय
(ङ) सांस्कृतिक विषय
(च) वैज्ञानिक विषय
(छ) सामाजिक विज्ञान के विषय

इन पुस्तकों के निर्माण में हम प्रसिद्ध लेखकों, अनुभवी अध्यापकों और योग्य कलाकारों का सहयोग ले रहे हैं। प्रत्येक पुस्तक के प्रारूप पर भाषा, शैली और विषय-विवेचन की दृष्टि से सामूहिक विचार करके उसे अंतिम रूप दिया जाएगा।

परिषद् इस माला की पुस्तकों को लागत-मूल्य पर ही प्रकाशित कर रही है ताकि ये अपने देश

के सभी कोनों में पहुँच सकें। भविष्य में इन पुस्तकों का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराने की भी योजना है।

हम आशा करते हैं कि शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के क्षेत्र में किए गए कार्य की भाँति ही परिषद् की इस योजना का भी व्यापक स्वागत होगा।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखन के लिए श्री महेश दर्पण ने हमारा निमंत्रण स्वीकार किया जिसके लिए हम उनके अत्यंत आभारी हैं। जिन-जिन विद्वानों, अध्यापकों और कलाकारों से इस पुस्तक को अंतिम रूप देने में हमें सहयोग मिला है उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

परिषद् में यह योजना प्रो० अनिल विद्यालंकार के मार्ग-दर्शन में चल रही है। उनके सहयोगियों में श्रीमती संयुक्ता लूदरा, डा० रामजन्म शर्मा, डा० सुरेश पाण्डेय, डा० हीरालाल बाछोतिया और डा० अनिरुद्ध राय सक्रिय सहयोग दे रहे हैं। विज्ञान की पुस्तकों के लेखन का कार्य हमारे विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के प्रो० रामदुलार शुक्ल देख रहे हैं। मैं अपने सभी सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद और बधाई देता हूँ।

इस माला की पुस्तकों पर बच्चों, अध्यापकों और बच्चों के माता-पिता की प्रतिक्रिया का हम स्वागत करेंगे ताकि उनसे इन पुस्तकों को और भी उपयोगी बनाने में हमें सहयोग मिल सके।

पी०एल० मल्होत्रा
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
जुलाई 1986

दो शब्द

लोक कथाएँ विश्व साहित्य की अमूल्य निधि हैं। सुनने-सुनाने की परंपरा से जन्मी लोक कथाओं का इतिहास मनुष्य की तरह इतना पुराना है कि उसे लिखित रूप में ढूँढ पाना कठिन है। हमारी कई पीढ़ियाँ दादी-नानी के मुँह से लोक कथाएँ सुनते हुए तैयार हुई होंगी और क्रमशः यही परंपरा आज तक बनी हुई है। आज भी, जब बच्चा सोने से पहले कहानी सुनने की ज़िद करता है तो अनायास हमारे भीतर से कोई लोक कथा उभर आती है और सुनने के बाद बच्चा पूछता है कि राक्षस को राजकुमार ने कैसे मारा? या राजकुमारी नदी में बहते-बहते इतनी दूर कैसे जा पहुँची? ...यानी लोक कथाओं के माध्यम से बच्चों में जिज्ञासा उत्पन्न होती है और हम उन्हें मानसिक विकास की पहली सीढ़ी तक ले जाते हैं।

जीवन के जितने भी संभव संदर्भ हैं, वे सब लोक कथाओं में कुछ इस तरह से खुलते चले जाते हैं कि बहुत-सी जानकारियाँ बच्चा पहले-पहल इन्हीं के माध्यम से अर्जित करता है। आदम और हव्वा से लेकर विविध राज्यों, राजाओं, प्रदेशों, महासागरों, नदियों, पहाड़ों, वृक्षों, फूलों, जातियों, वेश-भूषाओं, पशुओं, पक्षियों, भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ विकसित होते समाज की तमाम स्थितियों से परिचित कराने का पहला काम लोक कथाएँ ही करती हैं।

पहले जिज्ञासा फिर जानकारी और अंत में शिक्षा देते हुए लोक कथाएँ लंबे समय से जिस तरह मनोरंजन करती चली आ रही हैं, उससे यह विश्वास बना रहता है कि हमारी दुनिया सदैव बनी रहेगी। स्थान बदलकर लोग जहाँ-जहाँ जाएँगे अपने साथ लोक कथाओं का अक्षयकोष भी ले जाएँगे और यह दुनिया बढ़ती चली जाएगी।

विश्व की प्रसिद्ध लोक कथाएँ तैयार करते समय मुझे यह अनुभव हुआ कि लोक कथाएँ विश्व के सभी देशों के नागरिकों में लोकप्रिय हैं। इनके लिए पाठकों की कोई निश्चित आयु सीमा नहीं है। शिशुओं से लेकर वृद्धजनों तक लोक कथाएँ आकर्षण का केंद्र हैं। प्रायः लोक कथाओं का रूप एक जैसा है। यदि मेरे इस प्रयास से

विश्व की प्रसिद्ध लोक कथाओं की एक छोटी-सी झलक भी पाठकों को मिल सकी तो मेरा श्रम सार्थक होगा।

महेश दर्पण

विषय-सूची

	प्राक्कथन	v
	दो शब्द	vii
1.	पुण्य का महत्त्व (भारत की लोक कथा)	1
2.	आधा इनाम (तिब्बत की लोक कथा)	4
3.	बुद्धिमान जुलाहा (अर्मीनिया की लोक कथा)	7
4.	दुनिया की सबसे अद्भुत चीज़ (नेपाल की लोक कथा)	10
5.	सोने का घड़ा (मोल्दाविया की लोक कथा)	13
6.	असली उत्तराधिकारी (मैक्सिको की लोक कथा)	15
7.	चंदा की बेटी (जापान की लोक कथा)	18
8.	तिमोदी की कहानी (फिजी की लोक कथा)	21
9.	बहादुर राजकुमार (ब्रिटेन की लोक कथा)	24
10.	साधु बाबा के मित्र (भारत की लोक कथा)	27
11.	जैसे को तैसा (बर्मा की लोक कथा)	30
12.	माउई की कहानी (न्यूजीलैंड की लोक कथा)	33
13.	लालच बुरी बला (अजरबैजान की लोक कथा)	36
14.	राजकुमार आछू (तिब्बत की लोक कथा)	39
15.	छतरी ऐसे बनी (चीन की लोक कथा)	43
16.	मेहनत का फल (लाओस की लोक कथा)	46
17.	सच्चे मित्र (सिसली की लोक कथा)	49
18.	ज्योतिषी (अरब की लोक कथा)	52
19.	दोरबंका की कहानी (चेकोस्लोवाकिया की लोक कथा)	56
20.	शरारती मेंढक (कोरिया की लोक कथा)	60
21.	निकम्मा फिलिप और मछली (कनाडा की लोक कथा)	62

ले लीजिए।" सेठानी ने अपना सोने का हार ब्राह्मण को दे दिया।

इधर ब्राह्मण गया उधर सेठ जी ठीक हो गए। कुछ दिनों बाद ही देश के राजा की मृत्यु हो गई। राजकुमार को गद्दी पर बिठा दिया गया।

राजमाता धार्मिक कार्यों में रुचि लेने लगी थीं। एक बार उन्हें किसी महात्मा ने दो दर्पण दिए। इनमें किए हुए पुण्य दिखाई दे जाते थे। राजमाता ने राज्य भर में घोषणा करा दी – जो आदमी अपना पुण्य बेचना चाहे वह कीमत लेकर दे जाए।

सेठ जी ने यह ख़बर सुनी तो चल दिए पुण्य बेचने। चलते-चलते थक गए तो एक पेड़ के नीचे बैठ खाना खाने लगे। खाना शुरू ही किया था कि एक भूखी कुतिया आकर बैठ गई। सेठ जी को दया आ गई। उन्होंने कुतिया को अपनी रोटी खाने को दे दी। खुद भूखे ही रह गए। थोड़ा-सा पानी पिया और चल पड़े।

राजधानी पहुँचकर राजमाता से मिले। दरबारियों ने सेठजी को तुरंत पहचान लिया। राजमाता ने सेठजी को दर्पण दिया और कहा, "अपना पुण्य याद करो। अगर वह दर्पण में भी दिखा तो मैं उसे खरीद लूँगी।"

सेठ जी ने याद किया....

मंदिर, धर्मशालाएँ और अस्पताल बनवाए।

दर्पण में कुछ भी नज़र नहीं आया तो सेठजी बौखला गए, "आपका यह दर्पण बेकार है राजमाता।"

राजमाता ने सेठजी को समझाया, "आप जो पुण्य याद कर रहे हैं वह तो नाम कमाने के लिए किए गए थे। ऐसा पुण्य इस दर्पण में नहीं दिखाई देगा। दूसरा दर्पण लो। इसमें बिना याद किए ही सच्चा पुण्य दिखाई देगा।"

सेठजी ने दर्पण देखा तो उसमें पुण्य नज़र आने लगे। पहला पुण्य – सेठानी गरीब ब्राह्मण को अपने गले का हार दे रही है। दूसरे पुण्य में सेठ जी भूखी कुतिया को अपना खाना खिला रहे हैं।

राजमाता ने सेठजी से कहा, "आपके ये पुण्य एकदम सच्चे हैं। आप चाहें तो मैं ये पुण्य खरीद सकती हूँ। दस-दस लाख मुहरें ले लीजिए।"

सेठजी पुण्य का महत्त्व समझ गए उन्होंने राजमाता से कहा, "राजमाता, अब मैं ये पुण्य किसी भी कीमत पर नहीं बेचूँगा"

सेठ घर के लिए वापस चल दिए। तभी पीछे से आकर मंत्री ने कहा, "आपको महाराज ने याद किया है।"

सेठजी दरबार में पहुँचे तो राजा ने उन्हें आदर सहित बिठाते हुए कहा, "सेठजी, आपसे मेरे पिता ने पचास लाख मुहरें उधार ली थीं। संकट के समय दिया यह पैसा बहुत काम आया। अब आप ब्याज सहित अपना पैसा ले लीजिए।"

सेठजी को इतना पैसा मिला कि कारोबार फिर चल निकला। सेठ-सेठानी सुख से रहने लगे। दान-पुण्य का काम अब वे चुपचाप किया करते थे। नाम कमाने के लिए नहीं। पता ही नहीं लगता था कि दान किया किसने है!

2. आधा इनाम

तिब्बत के एक राजा को मछलियाँ बहुत अच्छी लगती थीं। तरह-तरह की मछलियाँ मँगवाकर खाना उसकी आदत बन गई। बिना मछली के तो खाना उसके गले से उतरता ही नहीं था।

एक बार उसके राज्य में भारी सूखा पड़ा। सारी नदियाँ सूख गईं। नदियाँ ही सूख गईं तो मछलियाँ कहाँ से आतीं। मछलियों के बिना राजा खाना कैसे खाता! धीरे-धीरे महल के तालाब की मछलियाँ भी समाप्त हो गईं। रसोइए ने आकर राजा को बताया, "महाराज, मछलियाँ पूरे राज्य में कहीं नहीं हैं...."

राजा ने अपने मंत्री को बुलवाकर बातचीत की। तय यह हुआ कि राज्य भर में ढिंढोरा पिटवा दिया जाए।

दूसरे ही दिन ढिंढोरा पिटवा दिया गया – "जो व्यक्ति राजा के लिए मछली पकड़ कर लाएगा, उसे भारी इनाम दिया जाएगा...."

जिसने सुना, वही मछली पकड़ने दौड़ा। मछलियाँ हों तो मिलें भी।

इधर राजा का मन मछली खाने को बैचेन था। वह चिड़चिड़ा हो गया था। बात-बात पर दरबारियों को फटकारने लगता।

दूर के किसी गाँव में एक मछुआरा रहता था। उसने अपने घर के पास एक गड्ढे में कुछ मछलियाँ पाल रखी थीं। राजा की हालत पता लगी तो उसने राजधानी जाने का निश्चय कर लिया।

दूसरे दिन वह राजधानी जा पहुँचा। महल के दरवाज़े पर दरबान ने उसे रोक लिया, "ऐ, किधर जाता है।"

"मैं राजा से मिलना चाहता हूँ..." मछुआरे ने बताया।

सिक्के दिए जाएँ।"

मछुआरे ने सुना तो वह बीच में बोल पड़ा, "नहीं-नहीं, मुझे सोना नहीं चाहिए। मुझे तो आप एक हज़ार कोड़े लगवा दीजिए..."

राजा हैरान था। कैसा अजीब आदमी है। मैं इसे इनाम देना चाहता हूँ और यह है कि कोड़े खाने की ज़िद कर रहा है।

"इसे धीरे-धीरे एक हज़ार कोड़े लगाए जाएँ!" राजा ने हुक्म दिया।

सिरफिरे मछुआरे को देखने के लिए भीड़ लग गई। धीरे-धीरे कोड़े लग रहे थे। पाँच सौ कोड़े लग गए तो मछुआरा खड़ा हो गया, "ठहरिए मेरा हिस्सा पूरा हो गया। आधा इनाम मेरे साथी को मिलना चाहिए।"

दरबार में हंगामा मच गया। मछुआरा जाकर दरबान को बुला लाया, "यह मेरा साथी है। आधे इनाम का हकदार....."

मछुआरे ने पूरी कहानी खुले दरबार में सुना दी। बस, अब क्या था! पाँच सौ कोड़े तो खाए ही, दरबान को अपनी नौकरी से भी हाथ धोना पड़ा। मछुआरे की सूझ-बूझ से राजा बहुत खुश हुआ। राजा ने मछुआरे को भारी इनाम तो दिया ही अपना मंत्री भी बना लिया।

3. बुद्धिमान जुलाहा

एक बार अर्मीनिया के राज-दरबार को पड़ोसी राजा के दूत ने आश्चर्य चकित कर दिया। उसने आते ही राजा के सिंहासन के चारों ओर एक घेरा खींचा। फिर वह एक खाली कुर्सी पर बैठ गया।

राजा ही नहीं दरबारी भी हैरान थे। आखिर इस पहेली का मतलब क्या है? सभी मंत्री चुपचाप लौट गए। राजा ने दरबारी को बुलाकर आदेश दिया, "राज्य भर के विद्वानों से पूछो। जो न बता सके उसका सर कलम कर दो!"

दरबारी पूरे राज्य में घूमते रहे। कोई विद्वान ऐसा न मिला जो पहेली का हल बता सके। घूमते-घूमते दरबारी एक जुलाहे के घर पहुँचे।

पहले कमरे में एक पालना झूल रहा था। दूसरे कमरे में एक और पालना झूल रहा था। दोनों पालने खाली थे। दरबारी चकराए। पालने अपने आप झूल रहे थे। घूमते-घूमते दरबारी छत पर पहुँचे। छत पर गेहूँ सूख रहा था। चिड़ियाँ बार-बार गेहूँ का दाना खाने को आतीं और लौट जातीं। दरबारी देखते रहे गए। चिड़िया गेहूँ के दाने खा क्यों नहीं रही। तभी उन्होंने देखा कि सरकंडे का एक पंखा अपने आप चल रहा है।

ऐसा आज तक किसी ने न देखा था। दरबारी हैरान होकर नीचे उतर आए। तभी उन्होंने देखा कि एक जुलाहा कपड़ा बुन रहा है। दरबारियों ने उससे पूछा, "तुम्हारे घर में यह क्या चमत्कार है? पालने अपने आप झूल रहे हैं! चिड़िया गेहूँ के दाने नहीं खाती। पंखा अपने आप चलता है..."

"यह कोई चमत्कार नहीं है" जुलाहे ने कहा, "मैं कपड़ा बुन रहा हूँ न! मेरे हाथ में तीन रस्सियाँ और हैं। दो रस्सियों से पालने झुला रहा हूँ। एक से पंखा चल रहा है। पंखे की तेज़ हवा ने ही चिड़ियों को गेहूँ खाने से रोक रखा है। यह सब तो मैं रोज़ ही करता हूँ।" दरबारी बड़े

खुश हुए। उन्होंने जुलाहे को दरबार की पहेली बताई।

"इसमें परेशान होने की क्या बात है? चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।" जुलाहे ने कहा।

चलते-चलते उसने दो पासे और एक मुर्गी अपने थैले में रख ली।

दरबार में पहुँचे तो जुलाहा दूत के पास जाकर बैठ गया। उसने दोनों पासे उसके सामने फेंक दिए।

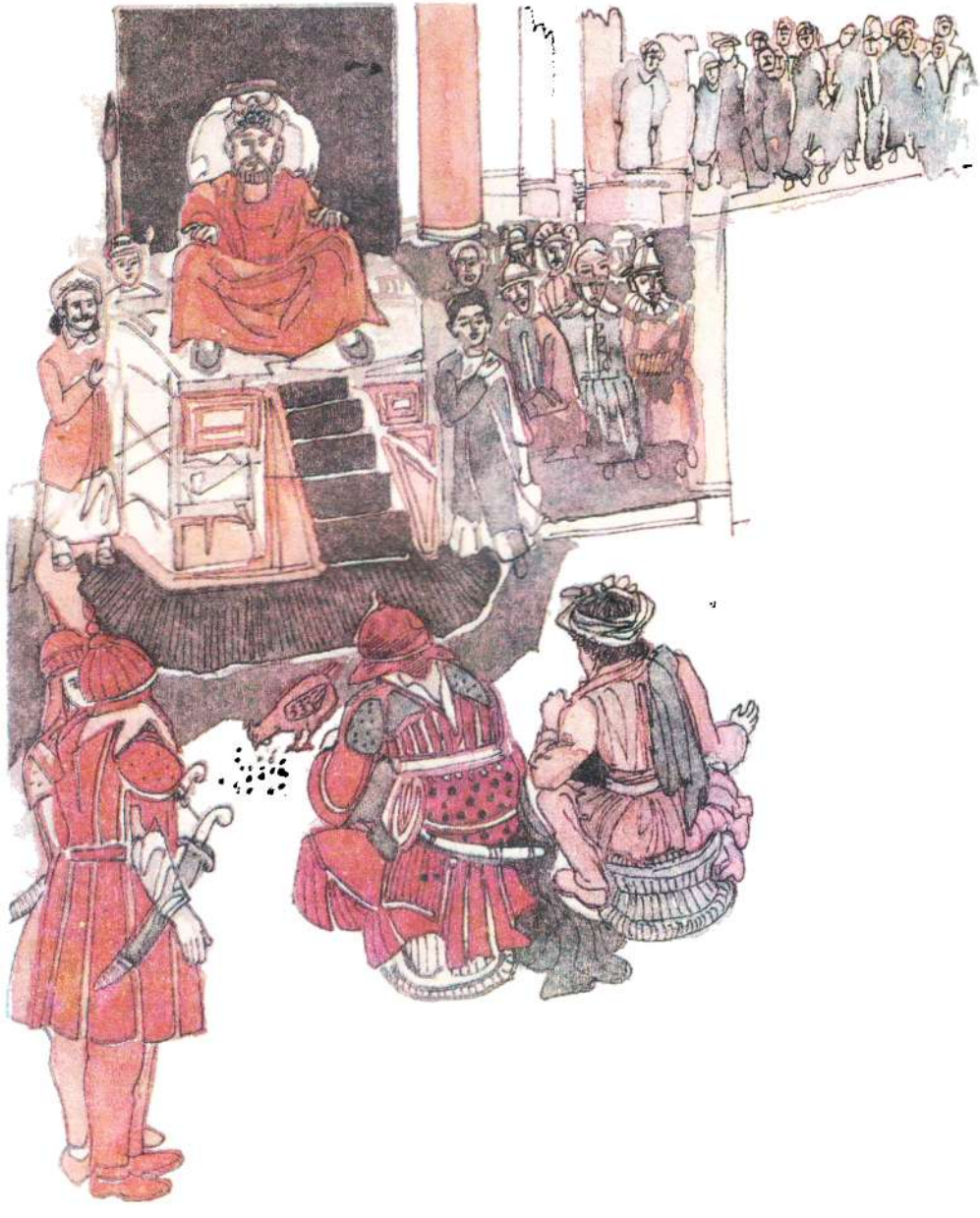

दूत ने अपने थैले से मुट्ठी भर बाजरा निकाला और जुलाहे के सामने फैला दिया। जुलाहा तो पहले ही तैयार था। उसने मुर्गी को बाजरे के दानों के पास छोड़ दिया। मुर्गी सारे दाने चट कर गई।

दूत ने राजा का अभिवादन किया और चला गया।

राजा की समझ में कुछ न आया। उसने जुलाहे से पूछा "यह सब क्या हुआ भाई?"

जुलाहे ने बताया, "दूत आपसे कह रहा था कि उसके देश का राजा चढ़ाई करने वाला है। वह आपको चारों ओर से घेर लेगा। आप लड़ेंगे या हार मान जाएँगे?"

राजा ने कहा, "यह तो ठीक है। पर तुमने पासे क्यों फेंके?"

"मैंने उससे कहा कि तुम लड़ाई मत करो। घर बैठकर खेलो। अभी तुम बच्चे हो!" जुलाहे ने बताया।

राजा बहुत खुश हुआ। उसने फिर पूछा, "और बाजरा मुर्गी ने क्यों खाया?"

दरबारी साँस थामे राजा और जुलाहे के सवाल-जवाब सुन रहे थे। जुलाहे ने बताया, "बाजरे के दानों का मतलब था कि उनके पास बहुत सारे सैनिक हैं। मुर्गी ने सारे दाने खा लिए। मतलब यह हुआ कि हम उनके सभी सैनिकों को मार डालेंगे। यह सुनकर दूत भाग गया।"

राजा जुलाहे की बातों से बहुत खुश हुआ। राजा ने जुलाहे को बहुत सारा इनाम दिया। राजा चाहता था कि जुलाहा दरबार में मंत्री बनकर रहे... पर जुलाहा न माना। वह अपने घर वापस लौट गया।

4. दुनिया की सबसे अद्‌भुत चीज़

गोपाल अपने साथियों के साथ खेल रहा था। खेल-खेल में वे नदी के किनारे जा पहुँचे। दूर-दूर तक रेत फैली पड़ी थी। गोपाल ने रेत के घरौंदे बनाने शुरू कर दिए। देखते-देखते उसके सभी साथी इस खेल में लग गए। घरौंदा बनाते समय गोपाल को एक चमकती हुई चीज़ दिखाई पड़ी। उसने उसे उठा लिया। रेत झाड़कर देखा तो वह और भी चमकने लगी।

घर जाकर गोपाल ने वह चीज़ अपने पिता को दिखाई।

"अरे यह तो सोने की मुहर है!" पिता खुशी से चिल्लाए, "अब हम एक भेड़ खरीद लेंगे। जब वह बड़ी हो जाएगी तो उसकी ऊन से खूब पैसा कमाएँगे।"

पास ही गोपाल की माँ बैठी थी। यह सब सुनते ही बोली, "देखो जी! भेड़ तो तुम बाद में ले लेना। घर में खाने को एक दाना तक नहीं है। जाकर कुछ पेट भरने का सामान ही ले आओ।" गोपाल की बहिन ने माँ की बात सुनी तो बोली, "माँ जी, हमें कुछ मुर्गियाँ खरीद लेनी चाहिएँ। मुर्गी अंडे भी देगी और बच्चे भी। अंडे और मुर्गियाँ बेचकर हम खूब पैसा कमा सकते हैं।"

गोपाल ने सबकी बातें सुनीं और बोला, "मैं तो दुनिया की सबसे अद्‌भुत चीज़ खरीदूँगा, मुहर तो मुझे ही मिली है।" गोपाल की ज़िद देखकर सब चुप रह गए।

अब गोपाल दुनिया की सबसे अद्‌भुत चीज़ खरीदने निकल पड़ा। एक के बाद एक दुकान पर जाता और दुनिया की सबसे अद्‌भुत चीज़ माँगता। दुकानदार हँसते और आगे जाने को कह देते, "ऐसा तो कोई खरीदार आज तक नहीं आया..."

गोपाल ने पूरा शहर छान मारा। उसे दुनिया की सबसे अद्‌भुत चीज़ कहाँ मिलती! तभी गोपाल को घेरा बनाकर खड़े कुछ लोग दिखाई दिए। वह घेरे के पास जा पहुँचा। वहाँ एक मदारी बंदर का तमाशा दिखा रहा था।

गोपाल को बंदर बहुत अच्छा लगा। खेल समाप्त होने पर वह मदारी के पास पहुँचा, "क्या यह बंदर मुझे दे सकते हो? मैं तुम्हें सोने की एक मुहर दूँगा।"

मदारी ने खुशी-खुशी मुहर ली और जंजीर समेत बंदर गोपाल के हाथ में दे दिया। बंदर लेकर गोपाल घर पहुँचा तो घरवाले बहुत नाराज हुए। एक और खानेवाला बढ़ गया था। धीरे-धीरे बंदर की शरारतें बढ़ती गईं। कभी वह छत पर चढ़ जाता। कभी सड़क पर चला

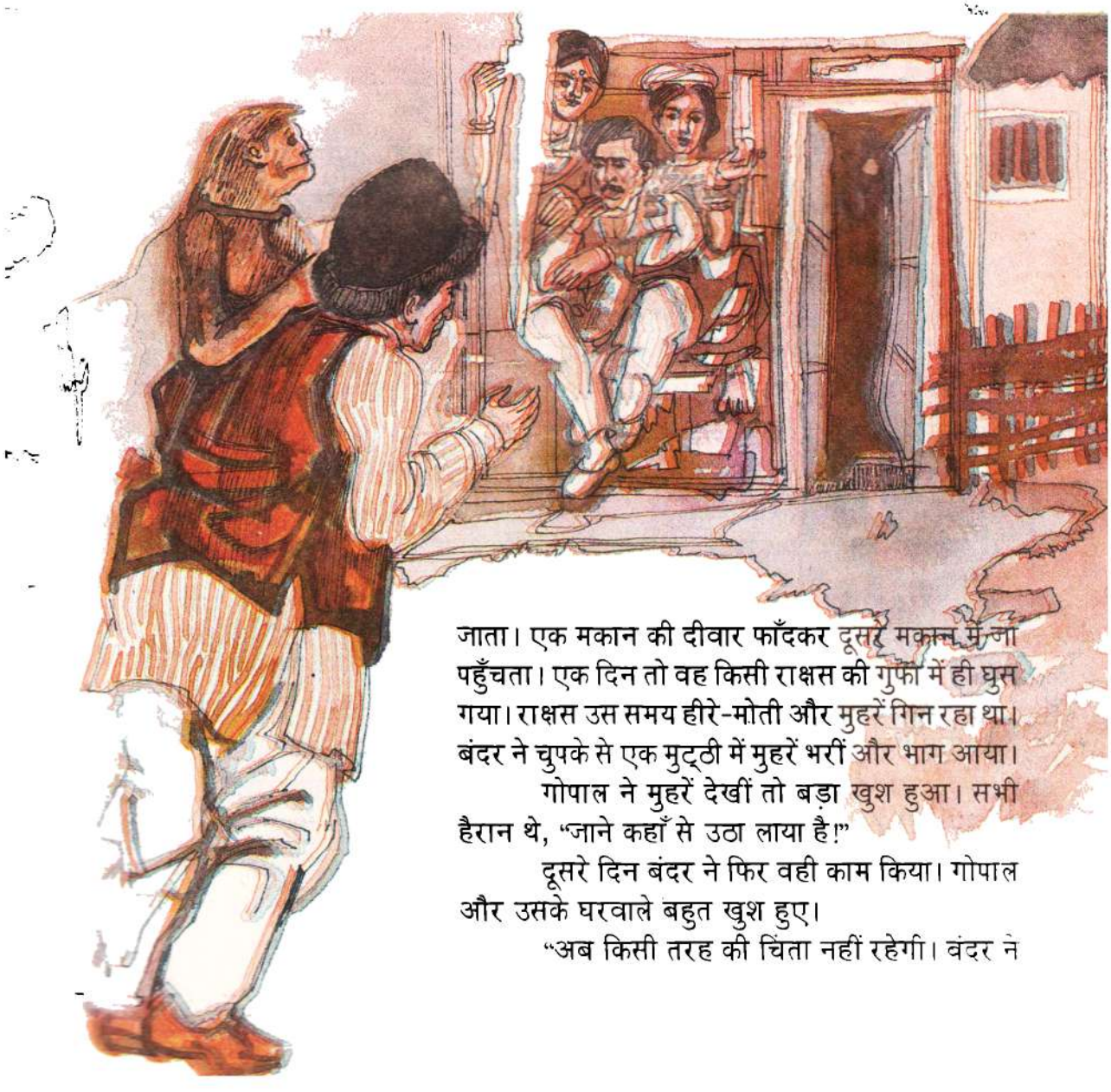

जाता। एक मकान की दीवार फाँदकर दूसरे मकान में जा पहुँचता। एक दिन तो वह किसी राक्षस की गुफा में ही घुस गया। राक्षस उस समय हीरे-मोती और मुहरें गिन रहा था। बंदर ने चुपके से एक मुट्ठी में मुहरें भरीं और भाग आया।

गोपाल ने मुहरें देखीं तो बड़ा खुश हुआ। सभी हैरान थे, "जाने कहाँ से उठा लाया है!"

दूसरे दिन बंदर ने फिर वही काम किया। गोपाल और उसके घरवाले बहुत खुश हुए।

"अब किसी तरह की चिंता नहीं रहेगी। बंदर ने

हमारी गरीबी दूर कर दी।" पिताजी ने भी खुश होकर कहा।

उधर राक्षस भी परेशान था, "जाने कहाँ से यह बंदर चला आता है। अगर रोज़-रोज़ आने लगा तो....। आज आने दो बच्चू को, छोड़ूँगा नहीं।"

रोज़ की तरह बंदर फिर पहुँचा। राक्षस सोने का नाटक किए पड़ा रहा। जैसे ही बंदर मुट्ठी भर मुहरें लेकर जाने लगा राक्षस ने उसकी पूँछ पकड़ ली। बंदर पहले तो घबराया फिर सँभल गया। उसने मासूम बनते हुए कहा, "मैं बहुत दूर से आया हूँ। आप तो मेरे रिश्ते के मामा हैं। माँ ने मुझे आपके पास भेजा था। उसने आपके लिए सुंदर–सी बहू ढूँढ रखी है। मैं यहाँ से जो कुछ भी ले जाता हूँ उसी के हाथ में देता हूँ। वह बहुत खुश है। अब जल्दी ही आपकी शादी हो जाएगी।"

राक्षस बंदर की बातों में आ गया। जाते-जाते बंदर ने कुछ मुहरें और उठालीं, "मामा ये मुहरें मैं मामी को दे दूँगा। उसे अपने कपड़े भी तो बनवाने हैं!"

राक्षस खुश हो गया था। उसने बंदर से फिर आने को कहा। बंदर लौटकर सीधा गोपाल के पास आया। गोपाल को मुहरें थमाते हुए उसने अपनी योजना बताई, "आज फिर मैं मुहरें ले आया हूँ। इस बार मैं उसे शादी का लालच दे आया हूँ। अब हम एक घास-फूस की बहू बनाएँगे और उससे राक्षस का विवाह कर देंगे।

गोपाल कुछ समझ न पाया। कैसा राक्षस और कैसी बहू! बंदर जैसा-जैसा कहता गया। गोपाल करता रहा।

थोड़े ही दिनों में घास-फूस की बहू तैयार हो गई। अब बंदर राक्षस के पास जाकर बोला, "देखो मामा, तुम्हारी शादी हो गई है। आजकल ग्रह ठीक नहीं हैं। इसलिए तुम मामी को देखना भी मत। अगर तुमने उसे गलती से भी देख लिया तो वह घास-फूस की औरत बन जाएगी।"

"पर तुम्हारी मामी यहाँ आएगी कब?" राक्षस ने अधीर होकर पूछा।

"आज शाम को ही आ जाएगी।" बंदर ने बताया और वापस लौट आया।

शाम को घास-फूस की बहू गुफ़ा में रख दी गई। राक्षस को मामी को न देखने की याद दिलाकर बंदर लौट आया। आते समय बंदर को राक्षस ने ढेरों मुहरें उपहार में दीं।

बंदर घर पहुँचा तो गोपाल ढेर सारी मुहरें देखकर बहुत खुश हुआ। सभी कहने लगे, "सचमुच यह बंदर दुनिया की सबसे अद्भुत चीज़ है।"

उधर राक्षस ने चुपके से झाँका। उसे बहू नज़र आई। बहू को देखने की अधीरता में वह बंदर वाली बात भूल गया। पास जाकर देखा तो वह घास-फूस की स्त्री बन गई।

अब राक्षस करता भी क्या! उसे बंदर की कही बात याद आती रही।

5. सोने का घड़ा

एक था किसान। उसके थे तीन बेटे। किसान सुबह से शाम तक खेत में काम करता। खेतों से जो कुछ मिलता... वही उसकी पूँजी थी।

पत्नी की मृत्यु के बाद घर का काम भी किसान ही करता था। उसके तीनों बेटे एकदम निकम्मे थे। दिनभर बेकार घूमते रहते। जब भूख लगती घर आकर खा जाते। किसान ने बहुत समझाया पर बेटों के कान पर जूँ तक न रेंगी। वे पेड़ के नीचे बैठकर बतियाते रहते।

समय बीतता रहा और किसान के बेटे जवान हो गए। किसान भी बूढ़ा हो चला था। अब वह उतनी मेहनत नहीं कर पाता था। दिन भर काम करता रहता। फिर भी बड़ी मुश्किल से परिवार का गुजारा चलता। सभी उसके निकम्मे बेटों को धिक्कारते रहते थे। लापरवाही से बेटे कहते, "अरे, काम तो जीवन भर करते ही रहेंगे... जरा-सा आराम तो कर लें!"

किसान अब बीमार रहने लगा था। घर में जमा अनाज भी धीरे-धीरे कम होता जा रहा था। एक दिन उसने अपने बेटों को बुलाकर समझाया, "देखो बेटा, काम से तो तुम्हें हमेशा नफ़रत रही है। मेरे बाद तुम लोग अपना काम कैसे चलाओगे। अब समझ लो, मेरी आखिरी साँस ही चल रही है।"

पिता के मुँह से ऐसा सुनकर बेटे रोने लगे, "अब हमारा क्या होगा। हाय, हम कैसे जिएँगे।"

पिता को बेटों पर दया हो आई। उसने उन्हें और पास बुलाया। फिर बोला, "देखो, मैंने आज तक तुम्हें एक राज की बात नहीं बतायी थी। सोने से भरा एक घड़ा घर के पास गाड़ रखा है। मेरे मरने के बाद तुम उसे निकाल लेना। उससे तुम्हारी जिंदगी आराम से कट जाएगी..." बात पूरी भी न हो पाई थी कि पिता चल बसा।

सभी को यह प्रस्ताव अच्छा लगा। अपने-अपने फावड़े लेकर सब भाई खुदाई करने

लगे। घर के आस-पास पूरी ज़मीन खोद डाली। कहीं कुछ हो तो मिले भी।

एक भाई ने फिर प्रस्ताव रखा, "हमें कुछ और गहरी खुदाई करनी चाहिए।"

तीनों गहरी खुदाई करते रहे। सोने का घड़ा फिर भी नहीं मिला। इतनी मेहनत तीनों भाइयों ने पहली बार की थी। थककर वे एक पेड़ के नीचे बैठ गए।

एक भाई बोला, "इतनी मेहनत बेकार नहीं जानी चाहिए। आओ, हम अंगूर की खेती कर लें।"

सभी ने कहा, "ठीक है, ठीक है... हम अंगूर की खेती करेंगे।"

कुछ समय बाद अंगूर का बगीचा तैयार हो गया। बड़े-बड़े मीठे अंगूर भी लग गए। तीनों भाई बड़े खुश थे।

अंगूर बेचकर उन्हें खूब आमदनी होने लगी, वे आराम से रहने लगे। अब पिता की बात तीनों बेटे समझ चुके थे।

6. असली उत्तराधिकारी

मैक्सिको के किसी गाँव में एक किसान रहता था। सुबह से शाम तक खेतों में मेहनत करता। फसल पक जाती तो देखकर खूब खुश होता। एक बार उसने मक्का की खेती की। हर बार की तरह इस बार भी फसल अच्छी हुई। फसल पकने की प्रतीक्षा में वह घर पर ही बैठा रहता था। एक दिन उसने देखा कि भुट्टों की चोरी होने लगी है। गाँव में चोर तो थे ही नहीं, फिर यह चोरी कौन करता होगा! किसान सोच में पड़ गया।

दूसरे दिन किसान ने अपने तीनों लड़कों को बुलाया। लड़के आकर पिता के पास खड़े हो गए।

किसान ने कहा, "तुम तीनों जाकर भुट्टों के चोर का पता लगाओ। जो चोर का सही पता बता देगा उसे मैं अपना उत्तराधिकारी बनाऊँगा।"

बड़े लड़के ने कहा, "सबसे पहले मैं जाता हूँ।"

उसने अपना टोप पहना और चल दिया। चलते-चलते थक गया तो एक कुएँ के पास लेट गया। लेटा क्या, नींद ही आ गई। थोड़ी देर बाद उसकी आँख खुली तो एक मेंढक टर्र-टर्र कर रहा था। लड़का मेंढक के पास पहुँचा तो मेंढक बोला, "मुझे भी अपने साथ ले चलो। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।"

लड़के को बहुत गुस्सा आया, "जा-जा, तू क्या मेरी मदद करेगा!" उसने मेंढक को उठाया और कुएँ में फेंक दिया। रात होते-होते वह अपने खेतों तक जा पहुँचा। चोर को पकड़ने के लिए तो जागना जरूरी था। पर लड़के की आँखें नींद के मारे बंद हुई जा रही थीं। जल्दी ही वह सो भी गया। सुबह उठा तो भुट्टे चोरी हो चुके थे। बेचारा क्या करता! मुँह लटकाकर घर चला आया।

अब दूसरे भाई की बारी थी। पूरी तरह तैयार होकर वह खेतों की तरफ चल दिया। तेज़ धूप में प्यास के मारे उसका गला सूखने लगा। उसने कुएँ में बालटी डालकर पानी निकाला

तो साथ में एक मेंढक भी निकल आया। मेंढक ने बाहर आते ही कहा, "मुझे अपने साथ खेतों में ले चलो, मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ।"

लड़के को मेंढक की बात पर विश्वास न हुआ। उसने मेंढक को वहीं छोड़ा और खेतों की तरफ चल दिया। खेतों तक पहुँचते-पहुँचते वह थक गया। उसे भी बड़े भाई की तरह नींद आ गई।

दूसरे दिन वह भी घर लौट आया।

अब सबसे छोटे भाई का नंबर आया। उसने बड़े भाइयों से आज्ञा माँगी तो वे हँसते हुए बोले, "जा-जा, तेरे बस की बात नहीं है।"

साहस करके छोटा भाई चल ही दिया। उसने अपने कंधे पर बंदूक और खाने का थैला लटका लिया था।

कुएँ के पास पहुँचते ही उसे भूख लगी। उसने थैले में से रोटी निकाल कर खा ली। रोटी खाने के बाद वह पानी पी रहा था कि मेंढक सामने आ गया, "तुम मुझे अपने साथ खेतों पर ले चलो। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।"

मेंढक को बोलता देख छोटा भाई बड़ा खुश हुआ। उसने उसे अपनी हथेली पर उठा लिया। थैले में से निकालकर कुछ खाने को दिया। खाने के बाद मेंढक ने छोटे भाई से कहा, "तुम कुएँ में झाँककर देखो। कुएँ में एक चमकता हुआ पत्थर है। उसे देखने से तुम्हारी मनोकामनाएँ पूरी हो जाएँगी।"

छोटे भाई ने कुएँ में झाँककर देखा। सचमुच, कुएँ में एक चमकता पत्थर दिखाई दिया।

अब वे दोनों खेतों की तरफ चल दिए। मेंढक ने छोटे भाई से पूछा "तुमने पत्थर से क्या-क्या माँगा?"

छोटे भाई ने बताया, "मैंने तीन चीज़ें माँगी हैं। पहली – भुट्टों के चोर को पकड़ना। एक बड़ा-सा घर। और तीसरी – एक सुंदर-सी बहू।"

वे दोनों अब खेतों के पास पहुँच गए थे। खेतों पर पहुँचते ही छोटे भाई ने एक सुनहरे पंखों वाली चिड़िया देखी। चिड़िया भुट्टों को खा रही थी। छोटा भाई बंदूक का निशाना लगा रहा था कि मेंढक ने रोक दिया। उसने कहा, "अभी ठहरो ! मत मारो उसे!"

छोटा भाई रुक गया। भुट्टा खाकर चिड़िया उड़ने लगी। थोड़ी देर में वह गाने लगी।

छोटे भाई ने गाना सुना तो वह चौंक गया। चिड़िया गाते हुए कह रही थी – "मैं चिड़िया नहीं थी। मैं लड़की थी। जादूगर के शाप से मैं चिड़िया बन गई।"

गाना समाप्त होते ही मेंढक ने छोटे भाई से कहा, "यही है वह सुंदर-सी बहू।"

अब मेंढक भी गाने लगा। उसके गाना गाते ही चिड़िया के सुनहरे पंख झड़ने लगे। थोड़ी ही देर में वह एक सुंदर लड़की बन गई।

लड़की ने छोटे भाई को बताया, "मैं ही भुट्टे खाती थी। अब मुझे शाप से छुटकारा मिल गया है।"

छोटे भाई ने लड़की का हाथ पकड़ा और अपने घर की तरफ चल दिया। घर के पास पहुँचा तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही।

उसका घर एक बड़े महल में बदल चुका था। उसका बड़ा भाई बाहर ही खड़ा था। नौकर-चाकर काम कर रहे थे।

छोटे भाई ने घरवालों को सारी कहानी सुनाई तो सब बड़े खुश हुए। अब क्या था, किसान ने लड़की का विवाह छोटे लड़के से कर दिया। वही उत्तराधिकारी भी बना।

7. चंदा की बेटी

बहुत पहले की बात है। जापान के किसी गाँव में एक लकड़हारा रहता था। दिनभर जंगल से लकड़ियाँ काटकर लाता और शाम को बेच देता। इसी से उसके परिवार का गुजारा होता था। घर पर लकड़हारे की पत्नी दिनभर अकेली बैठी रहती। वह भगवान से प्रार्थना करती कि उनके घर भी कोई बच्चा आ जाए। एक दिन वह फ्यूजीयामा पहाड़ की ओर देख रही थी। उसे एक चमकते हुए चेहरे वाला बच्चा दिखाई दिया। उसे अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। "कहीं मैं सपना तो नहीं देख रही...?" उसने सोचा। फिर वह आँखे फाड़कर देखने लगी। उसने साफ-साफ देखा कि बच्चा खड़ा है। इस बार उसे लगा कि बच्चा हाथ हिला-हिलाकर बुला भी रहा है।

संयोग से लकड़हारा उस दिन घर पर ही था। उसकी पत्नी ने उसे पहाड़ पर खड़ा बच्चा दिखाया। लकड़हारे की खुशी का तो जैसे कोई ठिकाना ही न था। वह दौड़ता-दौड़ता पहाड़ पर चढ़ गया। पास पहुँचने पर उसने देखा कि एक सुंदर बच्ची खड़ी है।

"मैं चंदा की बेटी हूँ। मुझे आपके घर रहने के लिए भेजा गया है। आपकी पत्नी बच्चे के लिए प्रार्थना करती है न!" बच्ची के होंठ धीरे से हिले तो लकड़हारा बहुत खुश हुआ।

लकड़हारे ने चंदा की बेटी को अपने कंधे पर बिठा लिया। थोड़ी ही देर बाद वह घर आ पहुँचा। पूरा घर खुशी से भर गया। लकड़हारे की पत्नी की तो खुशी का ठिकाना ही नहीं था। इतनी सुंदर लड़की किसी ने आज तक नहीं देखी थी।

धीरे-धीरे चंदा की बेटी बड़ी होती गई। उसकी सुंदरता की ख़बर पूरे राज्य में फैल गई।

एक दिन राजकुमार शिकार खेलता हुआ उधर आ निकला। उसने चंदा की बेटी को देखा तो देखता ही रह गया। उसने संदेश भिजवाया कि वह चंदा की बेटी से विवाह करना चाहता है। लकड़हारा भी खुश था कि चंदा की बेटी राजकुमार के साथ ब्याही जाएगी। चंदा

की बेटी को यह ख़बर लगी तो वह उदास हो गई। उसने बताया, "मुझे तो लकड़हारे के घर भेजा गया था। धरती के किसी पुरुष के साथ मेरा विवाह नहीं हो सकता। अब मुझे वापस भी जाना है।"

लकड़हारा बहुत उदास हो गया। उसने जाकर राजकुमार को बताया। पर राजकुमार कहाँ मानता! उसने लकड़हारे की झोंपड़ी को सैनिकों से घेर लिया।

रात हुई। चाँद निकला। कुछ देर बाद एक किरण सीधी चंदा की बेटी के पास उतर आई। असल में यह चंदा की सीढ़ी थी। फिर चाँद भी अपनी बेटी के पास उतर आया। सैनिकों की आँखों के सामने ही चाँद और उसकी बेटी वापस अपने घर लौट गए। कोई कुछ नहीं कर पाया।

चंदा की बेटी को बहुत दुःख हुआ। वह रोने लगी। उसकी आँखों से निकले आँसू चमक रहे थे। कहते हैं यही आँसू बाद में जुगनू बन गए।

8. तिमोदी की कहानी

लोमोलोमो टापू पर तिमोदी नाम का एक लड़का रहता था। वह बहुत गरीब था। दो समय का भोजन जुटाने के लिए वह दिनभर मेहनत करता रहता। कभी समुद्र से मछली पकड़ लाता, कभी जंगली फल ही खाकर सो जाता। उसे समुद्र में नाव चलाना बहुत अच्छा लगता था। अपने लिए किसी तरह उसने एक नाव बना ली। अब वह देर तक नाव चलाता रहता।

एक दिन उसे एक नाविक मिला। नाविक ने उससे कहा, "ऐ लड़के, अपनी नाव पीछे ही रख। मुझे आगे जाना है।"

"क्यों रखूँ पीछे? मुझे भी तो जाना है आगे। जो तेज़ चलाए... वो ले जाए!" तिमोदी ने नाविक को जवाब दिया।

नाविक को तिमोदी की बात सुनकर गुस्सा आ गया। उसने तिमोदी को ललकारा, "ऐसी बात है तो हो जाए एक बाजी। हम दोनों लोमोलोमो से वीतीलेवू तक नावें दौड़ाएँगे। जो पहले पहुँच जाए उसे दस नावें मिलेंगी। हारने वाला दस नावें न दे पाए तो अपने दोनों हाथ गिरवी रखवा दे..."

तिमोदी कब हार माननेवाला था, "ठीक है! हारोगे तो तुम ही..."

दोनों ने सही समय पर अपनी नावें दौड़ाईं। तभी लहर के जोर से तिमोदी की नाव पलट गई। उसने बड़ी कोशिश की पर नाव सीधी न हो पाई। नाविक वीतीलेवू पहुँच गया। तिमोदी बाजी हार चुका था। अब उसे नाविक को दस नावें देनी थीं। दस नावें बेचारा तिमोदी कहाँ से लाता? हारकर उसने अपने दोनों हाथ नाविक के पास गिरवी रख दिए।

अब वह मछलियाँ भी न पकड़ पाता। जंगली फल भी तोड़े तो कैसे? तीन-चार दिन तक भूखा ही घूमता रहा। थक-हारकर वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया। भूख के मारे उसका दम निकला जा रहा था।

उधर भगवान शंकर पार्वती के साथ घूमते-घूमते उसी जंगल में जा पहुँचे। पार्वती ने

तिमोदी के रोने की आवाज़ सुनी। पार्वती ने भगवान शंकर से कहा, "भोलेनाथ, कोई दुखी रो रहा है। हमें पता लगाना चाहिए।"

भगवान शंकर पार्वती के साथ चल पड़े। पेड़ के नीचे बैठा तिमोदी रो रहा था। भगवान शंकर ने तिमोदी से पूछा, "बेटा तुम रो क्यों रहे हो?"

तिमोदी ने अपनी कहानी सुना दी, "मैं दस नावें हार गया हूँ। अब मेरे दोनों हाथ भी नाविक के पास रखे हैं। भूख के मारे मेरा दम निकल रहा है... क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं ?"

भगवान शंकर को तिमोदी पर दया आई। थोड़ी ही देर में वहाँ फलों का ढेर लग गया। फिर एक सोता फूटा और पानी बहने लगा।

तिमोदी खुशी के मारे नाचने लगा। पार्वती और शंकर लौट गए। तिमोदी ने फल खाए और पानी पिया। इसके बाद वह पेड़ के नीचे बैठ कर भगवान शंकर का ध्यान करने लगा।

कुछ दिनों बाद भगवान शंकर फिर उसी जंगल से गुजरे। उन्होंने देखा तिमोदी पेड़ के नीचे बैठा उनका ध्यान कर रहा है।

भगवान शंकर ने तिमोदी को आशीर्वाद दिया, "मैं तुमसे प्रसन्न हूँ। अब तुम ऐसी खेती करो जो पानी भी दे और फल भी...।"

तिमोदी ने पूछा, "ऐसी कौन-सी खेती है जो फल और पानी एक साथ देती है?"

भगवान शंकर ने तिमोदी को बताया, "यह नारियल की खेती कहलाती है।"

इसके बाद शंकर पार्वती कैलाश पर्वत चले गए। वहाँ से उन्होंने अपने पुत्र गणेश को तिमोदी के पास भेजा। गणेश ने तिमोदी को एक नारियल दिया और खेती का तरीका भी बताया।

तिमोदी ने नारियल की खेती शुरू कर दी। तिमोदी अब गरीब नहीं रहा। उसने दस नावें नाविक के पास भिजवा दीं। नाविक ने तिमोदी के हाथ लौटा दिए।

अब तिमोदी पहले की तरह भला-चंगा हो गया। उसने एक सुंदर घर बनाया और उसमें रहने लगा। कुछ समय बाद एक व्यापारी की लड़की से उसका विवाह भी हो गया।

9. बहादुर राजकुमार

एक रानी थी। बहुत दिनों बाद उसे एक पुत्र पैदा हुआ। राजकुमार के जन्म की ख़बर पूरे राज्य में फैल गई। घर-घर मिठाई बाँटी गई। राजा की खुशी का तो ठिकाना ही न था। प्रजा खुशी के दीपक जला रही थी। पर दूसरे ही दिन रानी की मृत्यु हो गई। राजा को काटो तो खून नहीं।

रानी की मृत्यु से राज्य भर में शोक छा गया। राजा अपने महल में गुमसुम पड़ा रहता। नन्हे-से राजकुमार को एक धाय ने सँभाला।

धीरे-धीरे राजकुमार बड़ा होने लगा। एक दिन धाय-माँ ने उसे वीरता और साहस की कहानी सुनाई। अब वह रोज कहानी सुनने की ज़िद करता। धाय-माँ हर रोज उसे एक कहानी सुनाती। राजकुमार बहादुर बनने के सपने देखने लगा।

दस वर्ष का होते-होते राजकुमार घुड़सवारी करने लगा। धाय-माँ ने उसे तलवार चलाना भी सिखा दिया। एक दिन राजा का जन्म-दिवस मनाया गया। राजकुमार भी धाय-माँ के साथ राजा के महल में गया। महल की दीवारों पर राजा के चित्र लटके हुए थे। इन चित्रों में राजा युद्ध करता हुआ दिखाया गया था।

राजकुमार एक-एक चित्र देखता रहा। धाय-माँ उसे राजा की वीरता के किस्से सुनाती रही। देखते-देखते राजकुमार एक खाली फ्रेम के सामने जा पहुँचा।

"धाय-माँ, यह फ्रेम खाली क्यों है?" राजकुमार ने पूछा।

धाय-माँ ने राजकुमार को समझाया, "राजकुमार, तुम्हारे पिता महान योद्धा हैं। इन सभी चित्रों में तुम्हारे पिताजी की बहादुरी की कहानियाँ हैं। यह फ्रेम अंतिम शत्रु के लिए छोड़ा गया है। जब वह मार दिया जाएगा तो यह फ्रेम भी खाली न रहेगा।"

"वह अंतिम शत्रु कौन है धाय-माँ?" राजकुमार ने पूछा।

"राजकुमार, पहाड़ के पीछे एक दानव रहता है। वह किसी देश की राजकुमारी को

उठा कर ले गया है। राजकुमारी बड़ी हो जाएगी तो दानव उसे खा जाएगा।" धाय-माँ ने समझाया।

"धाय-माँ, क्या दानव से उसे छुड़ाया नहीं जा सकता?" राजकुमार ने फिर पूछा।

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं! कहते हैं दानव को किसी खेल में लगा देने से यह काम हो सकता है। उसका मन खेल में लगेगा तभी वह राजकुमारी को छोड़ेगा। पर यह काम बहुत कठिन है..."

राजकुमार ने मन-ही-मन राजकुमारी को छुड़ाकर लाने का निश्चय कर लिया। तभी उसे अपनी काँच की गोलियों की याद आ गई। "क्यों न दानव को काँच की गोलियों के खेल में उलझा दिया जाए!" उसने सोचा।

रातभर राजकुमार दानव को बस में करने की बात सोचता रहा। सुबह का सूरज उगने से पहले ही वह उठा और तैयार होकर चल पड़ा। चलते समय उसने जेब में काँच की गोलियाँ भी रख लीं। राजकुमार अपने घोड़े पर सवार चला जा रहा था। रास्ते में एक चूहा घोड़े के पैर पर चढ़ गया। अब क्या था, घोड़ा और तेज़ी से दौड़ने लगा। दौड़ते-दौड़ते घोड़ा एक पेड़ से जा टकराया। पेड़ चरमरा कर गिर पड़ा। घोड़ा घबराकर अपनी पिछली टाँगों पर खड़ा हो गया। उसने राजकुमार को जोर से उछाल दिया।

राजकुमार उछला तो सीधा दानव के महल के पास जाकर गिरा। राजकुमार के गिरते ही उसकी जेब से काँच की गोलियाँ भी ज़मीन पर गिर गईं। उधर दानव ने आवाज़ सुनी तो वह बाहर निकला।

ज़मीन पर काँच की गोलियाँ देख दानव को बड़ी खुशी हुई। दानव जैसे-जैसे साँस लेता गोलियाँ हिलने-डुलने लगतीं। यह देखकर वह खुश हो गया और उसी खेल में लग गया। राजकुमार ने दानव को खेलते देखा तो उसका डर दूर हो गया। महल के अंदर जाकर वह राजकुमारी को बाहर ले आया। उसने दानव को गोलियाँ खेलना सिखा दिया। दानव बहुत खुश हुआ।

राजकुमार, राजकुमारी को लेकर अपने महल लौट आया। दानव भी पालतू कुत्ते की तरह उसके पीछे-पीछे चला आया।

महल में धाय-माँ राजकुमार की चिंता में घुली जा रही थी। राजकुमारी और दानव के साथ उसे आता देख धाय-माँ बहुत खुश हुई।

राजकुमार ने दानव को बस में करने की कहानी धाय-माँ को सुनाई। राजकुमार की बहादुरी पर सभी बहुत खुश हुए। जाड़ों में दानव को महल की एक कोठरी में बंद कर दिया गया। कोठरी के दोनों ओर पाइप लगा रहता था। दानव की गरम साँसों से पूरा महल गरम रहने लगा गर्मियों में दानव खुले आँगन में काँच की गोलियों से खेलता रहता।

धाय-माँ ने खाली फ्रेम में राजकुमार और दानव का चित्र लगवा दिया। राजकुमारी और राजकुमार धीरे-धीरे बड़े हो गए। कुछ दिनों बाद दोनों का विवाह हो गया। राजकुमार पिता की मृत्यु के बाद राजा बना दिया गया। राजकुमारी अब रानी बन गई थी और धाय-माँ राजमाता।

•

10. साधु बाबा के मित्र

एक था साधु बाबा। घर-बार कुछ था नहीं। निपट अकेले घूमता रहता। भिक्षा में जो मिलता खा लेता।

एक दिन बाबा एक जंगल से गुजर रहा था। रास्ते में उसे प्यास लगी। पास ही एक कुआँ दिखाई दिया। बाबा कुएँ की मुँडेर पर चढ़ गया। पर यह क्या, कुएँ में पानी था ही नहीं! कुएँ में एक आदमी, एक साँप, एक शेर और एक बंदर बैठा था।

बाबा बेचारा क्या करता! उसने झाँककर देखा। शेर, बंदर, साँप और आदमी ने भी बाबा को देखा। सबने मिलकर बाबा से प्रार्थना की, "बाबा, हमें कुएँ से बाहर निकाल दो। हम तुम्हारा उपकार कभी नहीं भूलेंगे।"

बाबा को दया आ गई। बाबा ने जंगली बेलों की रस्सी बनाई। फिर रस्सी कुएँ में लटका दी।

सबसे पहले आदमी कुएँ से बाहर आया। आदमी ने बताया कि वह एक सुनार है। बाबा और सुनार ने मिलकर साँप, शेर और बंदर को बाहर निकाला। सबने बाबा को धन्यवाद दिया।

कुछ दिनों बाद बाबा फिर जंगल से गुजरा। रास्ते में उसे एक बंदर मिला। यह वही बंदर था जिसे बाबा ने कुएँ से निकाला था। बंदर ने बाबा को ढेर सारे फल दिए। बाबा जाने लगा तो बंदर ने कहा, "जब भी मेरी आवश्यकता हो बुला लें!"

बाबा आगे चल दिया। अब उसकी भेंट शेर से हो गई। शेर भी कुएँवाला था। शेर बाबा को अपनी गुफ़ा में ले गया। उसने बाबा को मोतियों की एक माला भेंट की। शेर ने बताया, "यह माला एक कौए की चोंच से छूटकर गिर गई थी..."

शेर से विदा लेकर बाबा शहर की ओर चल दिया। शहर पहुँचकर उसे सुनार की याद आई। पूछते-पूछते वह सुनार की दुकान पर पहुँचा। सुनार ने माला देखी तो वह चकित रह

गया। माला तो राजा की थी। बहुत पहले यह माला उसने राजा के लिए बनाई थी। सुनार ने चुपके से राजा को ख़बर करवा दी।

राजा ने बाबा को पकड़कर कारागर में बंद करवा दिया। बाबा ने बहुत समझाया पर राजा न माना, "शेर किसी आदमी को माला कैसे दे सकता है!"

कारागार में पड़े-पड़े बाबा को साँप की याद आई। उसने ताली बजाकर साँप को बुलाया। साँप तुरंत आ गया।

बाबा ने साँप को अपनी परेशानी बताई। साँप ने बाबा से कहा, "तुम यह पत्थर रख लो। मैं आज रात को रानी के पैर में डस लूँगा। वह बेहोश हो जाएगी। तब तुम यह पत्थर रानी के पैर से छुआ देना। रानी उठ बैठेगी। राजा खुश होकर तुम्हें छोड़ देगा।"

सुबह होते ही राजमहल में हाहाकार मच गया। रानी के पैर में साँप डस गया... सब हैरान-परेशान घूम रहे थे। वैद्य-हकीम सब आए पर कोई भी रानी को ठीक न कर सका।

बाबा ने राजा के पास ख़बर भिजवाई, "मैं जहर उतार सकता हूँ।"

तुरंत बाबा को राजमहल ले जाया गया। बाबा ने रानी के पैर से पत्थर छुआ दिया। देखते-देखते रानी ठीक हो गई। जहर बाहर निकल आया था।

राजा बहुत खुश हुआ। उसने बाबा से पूछा, "यह पत्थर कहाँ से आया?"

बाबा ने बताया, "यह पत्थर मुझे साँप ने दिया था। साँप और शेर मेरे मित्र हैं। शेर ने ही आपकी माला मुझे दी थी। यह माला कोई कौआ ले जा रहा था। उसकी चोंच से छूटकर ज़मीन पर आ गिरी थी। शेर के किसी काम की नहीं थी। उसने मुझे भेंट कर दी।"

राजा को अब बाबा की बात का विश्वास हो गया। उसने आदर सहित बाबा को रिहा कर दिया। साथ ही उसे कुछ स्वर्ण-मुद्राएँ भी भेंट कीं।

11. जैसे को तैसा

यह कहानी बर्मा के एक गाँव की है। एक दिन माँ ने बेटी से कहा, "धूप में चावल सुखा ले!"

बेटी थाली में चावल रखकर बैठ गई। थोड़ी देर बाद एक कौआ आया। कौआ बड़ा विचित्र किस्म का था। बेटी उसे देखती ही रह गई। सोने के पंख और चाँदी की चोंच। ऐसा कौआ उसने पहली बार देखा था।

कौआ हँसता जाता और चावल खाता जाता। बेटी ने उसे चावल खाते देखा तो रोने लगी। उसने रोते हुए कहा, "चावल मत खाओ! हम भूखे मर जाएँगे।"

कौआ धीरे से बोला, "तुम घबराओ मत अच्छी लड़की। कल सूरज उगने से पहले पीपल के पेड़ के नीचे आ जाना। तुम्हारा दु ख दूर हो जाएगा।"

बेटी बहुत खुश थी। रात भर वह कौए के बारे में सोचती रही। सुबह होते ही वह पीपल के पेड़ के नीचे पहुँच गई। पेड़ की डाल पर एक सोने का महल बना हुआ था। थोड़ी देर में कौआ महल से निकला। उसने लड़की से ऊपर चढ़ने को कहा। पर वह कैसे चढ़ पाती भला! कौए ने उससे कहा, "ठहरो, मैं तुम्हारे लिए सीढ़ी लाता हूँ। तुम कैसी सीढ़ी से चढ़ोगी? सोने की, चाँदी की या तांबे की...?

"मुझे तो ऊपर चढ़ने से मतलब है। तुम तांबे की सीढ़ी ही दे दो।" लड़की बोली।

कौए ने उसके लिए सोने की सीढ़ी लटका दी। लड़की महल में चली गई। महल देखकर उसकी आँखें फटी रह गईं। पूरा महल सोने, चाँदी और तांबे की चीज़ों से सजा हुआ था।

कौए ने लड़की से पूछा, "तुम किस थाली में खाना खाओगी? मेरे पास सोने, चाँदी और तांबे की थालियाँ हैं..."

लड़की ने कहा, "मुझे सोने, चाँदी या तांबे से क्या? तांबे की थाली में ही खा लूँगी।" कौए ने उसे सोने की थाली में खाना खिलाया। इतना अच्छा खाना उसने पहले कभी नहीं खाया

था। थोड़ी देर बाद कौआ तीन संदूक उठा लाया। तीनों संदूक अलग-अलग आकार के थे।

कौए ने लड़की से कहा, "इनमें से एक संदूक अपने घर ले जाओ। अपनी माँ को दे देना..."

"मुझे तो छोटा वाला संदूक दे दो। मेरे चावल भी तो जरा से थे" लड़की ने कहा।

घर पहुँचकर लड़की ने माँ को सारा हाल बता दिया। संदूक खोलकर देखा तो उसमें हीरे भरे पड़े थे। बस, उसी दिन से घर की गरीबी दूर हो गई। माँ बेटी सुख से रहने लगीं।

इसी गाँव में एक लालची बुढ़िया अपनी बेटी के साथ रहती थी। जब उसे कौए का किस्सा पता लगा तो उसने भी अमीर बनने की ठान ली।

एक दिन अपनी बेटी को चावल देकर धूप में बिठा दिया। लड़की बहुत आलसी थी। थोड़ी देर बाद वह सुस्ताने लगी। बहुत-सी चिड़ियाँ आईं और चावल खाकर लौट गईं। कुछ देर बाद एक कौआ भी आया। लड़की कौए को पहचान गई। वह जोर से चीखी, "ऐ कौए, तू हमारे चावल तो खा गया। अब इनकी कीमत भी चुका।"

कौए ने लड़की को प्यार से समझाया, "अच्छी बच्ची, तू नाराज मत हो। कल सूरज उगने से पहले पीपल के पेड़ के नीचे आ जाना। मैं चावलों की कीमत दे दूँगा।"

सूरज उगने से पहले ही लड़की पीपल के पेड़ के नीचे पहुँच गई। उसने पेड़ पर बने महल की ओर देखा। कौआ महल की खिड़की से झाँक रहा था। कौए ने लड़की से कहा, "रुको, मैं सीढ़ी लटका देता हूँ। फिर तुम ऊपर चढ़ आना। बताओ, कौन सी सीढ़ी पर चढ़कर आओगी? मेरे पास सोने, चाँदी और तांबे की सीढ़ियाँ हैं।"

"मुझे तो सोने की सीढ़ी चाहिए। तांबे की सीढ़ी पर चढ़ने से मेरे पाँव छिल जाएँगे।" लड़की ने तुरंत जवाब दिया।

पर यह क्या, कौए ने उसके लिए तांबे की सीढ़ी लटकाई, लड़की झटपट ऊपर चढ़ गई। महल में घुसते ही कौए ने पूछा, "तुम्हें भूख लगी होगी। बताओ तुम किस थाली में भोजन करोगी? मेरे पास सोने, चाँदी और तांबे की थालियाँ हैं..."

लड़की तो पहले से तैयार थी। उसने कहा, "मुझे सोने की थाली में खाना दो। मैं तांबे और चाँदी की थाली में खाना नहीं खा सकती।" कौए को लड़की की यह बात अच्छी न लगी। उसने उसे तांबे की थाली में खाना खिलाया।

खाना खिलाने के बाद कौआ तीन संदूक उठा लाया। उसने लड़की से कहा, "तुम इनमें से एक संदूक ले जाओ। अपनी माँ को दे देना।"

लड़की तो लालची थी। उसने सबसे बड़ा संदूक उठा लिया और घर चल दी। जल्दी-जल्दी में उसने कौए को धन्यवाद तक नहीं दिया।

भागती-भागती लड़की घर पहुँची।

माँ बेटी ने मिलकर खुशी से संदूक खोला। संदूक खुलते ही दोनों की घिग्घी बँध गई। संदूक में एक बड़ा साँप बैठा हुआ था। माँ बेटी संदूक छोड़कर भाग निकलीं।

12. माउई की कहानी

जन्म के समय बेटे का बदसूरत चेहरा देखकर माँ डर गई। "ऐसे बेटे को साथ रखकर क्या करूँगी" उसने मन ही मन सोचा। वह उसे समुद्र के किनारे छोड़कर चली गई। समुद्र के देवताओं को बच्चे पर दया आ गई। उन्होंने उसे पाल-पोस कर बड़ा किया। उसके पूर्वजों ने उसे स्वर्ग में ही पढ़ाया-लिखाया।

अब वह जवान हो गया था। उसने सोचा अपने परिवार को देखना चाहिए। पृथ्वी पर पहुँचा तो देखा भाई खेल में लगे थे। उसे देख वे सब हँसी उड़ाने लगे।

"मैं तुम्हारा छोटा भाई हूँ। मेरा नाम माउई है।" उसने बताया। भाइयों को उसकी बात का विश्वास न हुआ। माँ ने भी कहा, "तुम मेरे पुत्र नहीं हो।" तब उसने माँ को याद दिलाया, "माँ, तुमने मुझे समुद्र के किनारे छोड़ दिया था..."

माँ को पुरानी बात याद हो आई। माउई अब अपने परिवार के साथ पृथ्वी पर ही रहने लगा।

एक दिन भाइ मछली पकड़ने गए। उसने भी साथ चलने की ज़िद की। पर वे उसे अपने साथ न ले गए। वह चुपके से उनके पीछे लग गया। वह नाव के तख्तों के नीचे जाकर छिप गया। नाव समुद्र के बीचों बीच पहुँची तो बातचीत शुरू हुई।

"हम माउई को साथ नहीं लाए। अच्छा हुआ!" एक भाई ने कहा। तभी तख्तों के नीचे से आवाज़ आई, "मैं तो ये रहा!"

गुस्सा तो उन्हें खूब आया... पर करते क्या! लौटना भी तो कठिन था। "हम तुझे मछली पकड़ने का काँटा नहीं देंगे" उन्होंने उसे डाँटते हुए कहा।

सभी भाई मछली पकड़ने में व्यस्त थे। माउई ने भी अपना जादू का काँटा निकाल लिया। यह काँटा उसके पूर्वजों के दाँत का बना था। उसने काँटे पर लगाने को चारा माँगा।

भाइयों ने चारा भी नहीं दिया। हारकर माउई ने अपनी नाक से खून निकाला। खून लगाकर काँटा उसने पानी में फेंक दिया। भाइयों के हाथ अब तक एक भी मछली नहीं लगी थी। माउई का काँटा समुद्र तल तक जा पहुँचा।

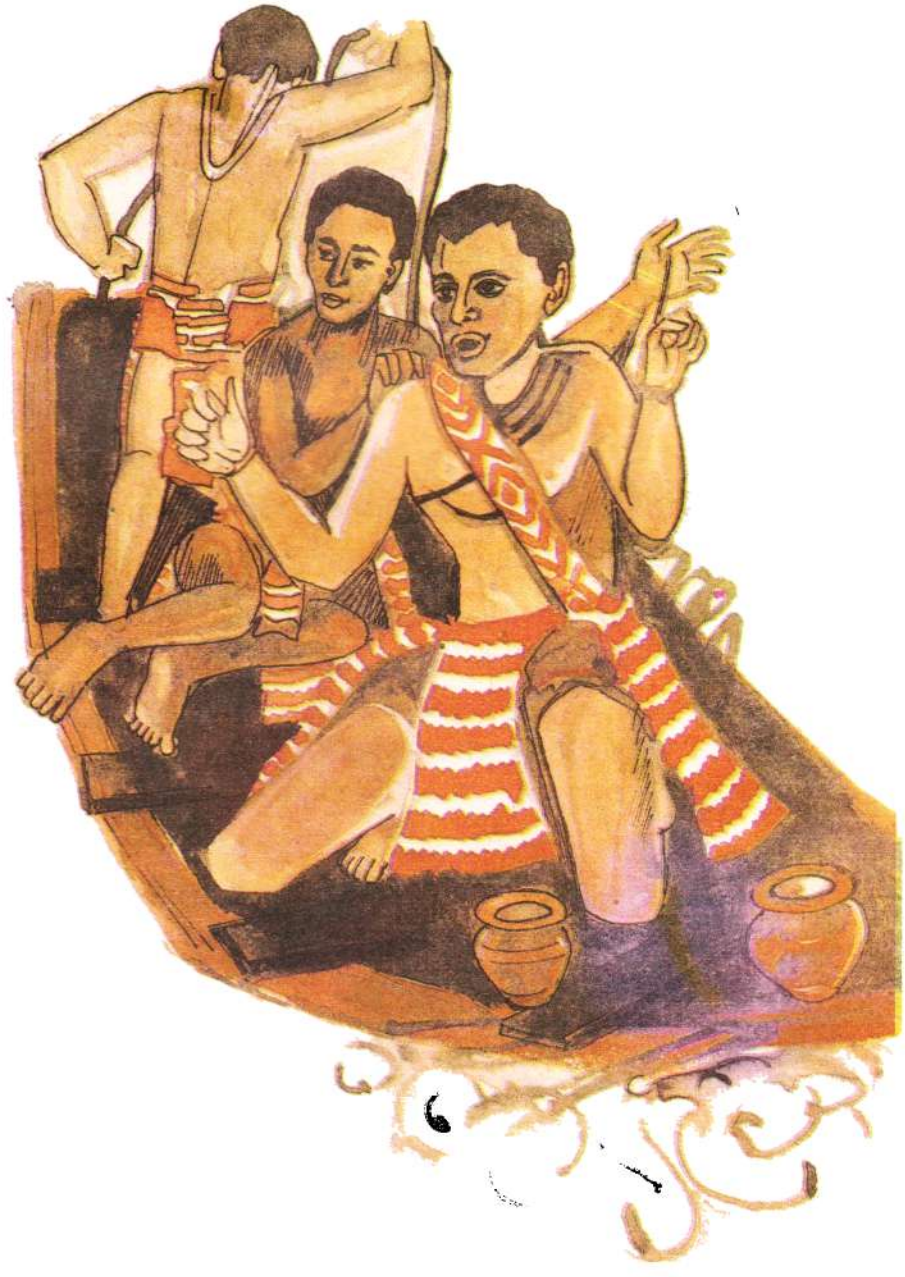

भाई तो निराश होकर दूसरी तरफ चले गए। माउई हँसता हुआ वहीं खड़ा रहा। कुछ देर बाद ही रस्सी पर खिंचाव होने लगा। माउई ने रस्सी जोर से पकड़ ली। उसके भाई भी उसकी मदद करने आ पहुँचे। कोई जीव धीरे-धीरे ऊपर आ रहा था। जीव पानी के ऊपर आया तो भाई डर गए। फिर हिम्मत करके वे उसकी पीठ पर चढ़ गए। मांस काटने की कोशिश की तो गड्ढा बन गए। गुस्से में भरे भाई जीव को पीटने लगे। पर यह क्या, चोट लगने वाली जगह सिकुड़कर पहाड़ जैसी बन गई।

बाद में पता लगा कि यह कोई जीव नहीं है, न्यूजीलैंड द्वीप ही समुद्र से निकला है। यहाँ रहने वाले लोग माउरी कहलाने लगे।

माउई ने देखा – लोग खाना तक नहीं जुटा पाते और रात हो जाती है। उसने सोचा, दिन बड़े होने चाहिए।

एक दिन उसने अपने भाइयों से कहा, "आओ हम सूरज को बाँध लें। उसे धीरे-धीरे चलने को कहना है।

भाई तो डरपोक थे ही। वे छूटते ही बोले, "सूरज के पास जाते ही भस्म हो जाओगे।"

इस पर माउई ने उन्हें समझाया, "तुम मत घबराओ, मैं जो हूँ, मैं तो इससे भी बड़ा काम कर सकता हूँ!"

भाई तैयार हो गए। माउई ने सन और अपनी बहिन के सिर से बाल लिए। जादू के असर से उसने मज़बूत रस्सी बनाई। रस्सी से बनाया एक मज़बूत जाल। बहुत दिनों बाद वे दुनिया के किनारे पहुँचे। माउई ने सूरज निकलने वाले रास्ते पर जाल फैला दिया।

सुबह होते ही सूरज जाल में फँस गया। माउई जाल पकड़े हुए था। सूरज ने बहुत कोशिश की पर छूट न सका।

माउई ने अपनी जादुई गदा सूरज पर मारी तो वह गरम हो उठा। माउई के भाई घबराकर भाग खड़े हुए।

माउई ने सूरज से कहा, "तुम इतनी तेज़ चलते हो कि दिन छोटा रह जाता है। लोग अपना खाना तक नहीं जुटा पाते।"

कोई जवाब न मिला तो माउई ने सूरज पर गदा से फिर चोट की। इस बार सूरज चिल्लाया, "मैं वचन देता हूँ अब मैं धीरे-धीरे ही चलूँगा।"

माउई ने सूरज को आज़ाद कर दिया। सूरज सचमुच धीरे-धीरे चलने लगा। दिन भी बड़े होने लगे।

अब सभी लोग खुश थे। खाना जुटाने भर को बड़े दिन जो मिल गए थे। माउई अब सोच रहा था – लोगों के लिए और क्या किया जा सकता है।

13. लालच बुरी बला

मिसार का एक सौदागर घूमते-घूमते एक अनजाने शहर में पहुँच गया। शहर के शाह का एक विचित्र नियम था। बाहरी सौदागर को आते ही उसके साथ शतरंज खेलनी पड़ती थी। शतरंज खेलने से पहले शाह अपनी शर्तें सामने रख देता। शर्त हारने वाले का सारा सामान शाह ले लेता और उसे बंद करवा देता।

शतरंज खेलते समय शाह के पास ही एक बिल्ली बैठी रहती। बिल्ली की पूँछ पर सात जलते दिये रख दिए जाते। बिल्ली अपनी जगह से हिल गई तो शाह शर्त हार जाएगा।

सौदागर शाह के महल में पहुँचा। उसने शाह को कीमती उपहार दिए। थोड़ी ही देर में शतरंज बिछा दी गई। ठीक सामने बिल्ली आकर बैठ गई। शाह के नौकरों ने सात जलते दिये बिल्ली की पूँछ पर रख दिए।

अब शतरंज शुरू हुआ। पूरा दिन निकल गया। बिल्ली तो एकदम पत्थर बनी बैठी थी। सौदागर परेशान था। उसे अब इस शहर में आने का पछतावा होने लगा। दूसरा दिन भी इसी तरह निकल गया। बैठे-बैठे सौदागर की पीठ में दर्द होने लगा। शाह को तो आदत ही थी। दूसरी रात भी खेलते-खेलते निकल गई। बिल्ली की पूँछ पर रखे सातों दिये जल रहे थे। बिल्ली ऐसे बैठी थी जैसे न हिलने की कसम खा रखी हो।

आखिरकार सौदागर थक गया। उसने हार मान ली। शाह ने उसका कीमती सामान अपने खजाने में रखवा लिया। सौदागर को कैदखाने में बंद करवा दिया गया।

सौदागर के नौकरों को यह समाचार मिला तो वे वापस मिसार की ओर चल पड़े।

कई महीने बीत गए। सौदागर घर नहीं लौटा तो सौदागर की पत्नी को चिंता हुई। तभी सौदागर के नौकर मालकिन के पास आ पहुँचे। नौकरों ने रोते-रोते सारा हाल सुना दिया।

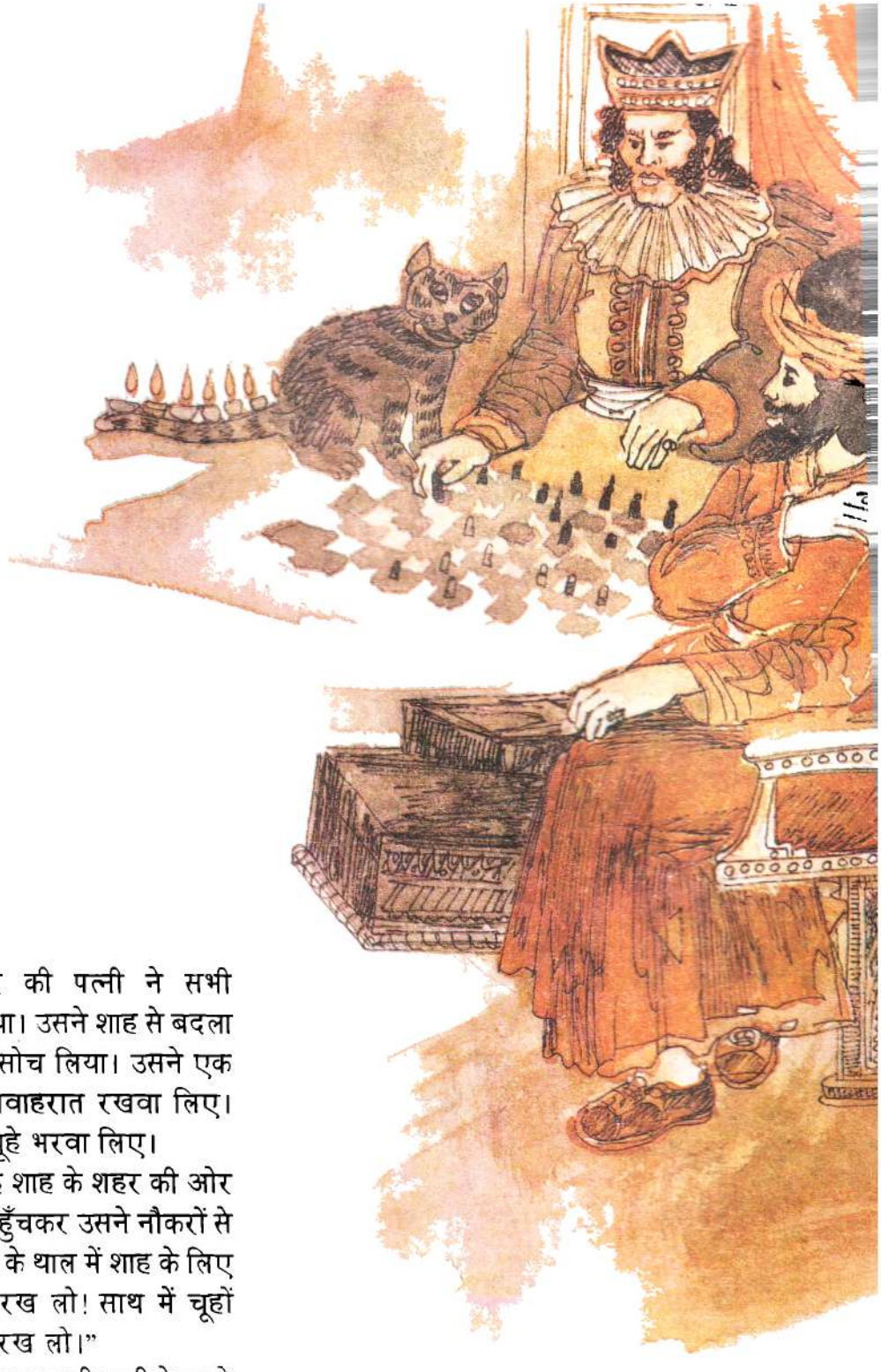

सौदागर की पत्नी ने सभी नौकरों को बुलाया। उसने शाह से बदला लेने का तरीका सोच लिया। उसने एक संदूक में हीरे-जवाहरात रखवा लिए। दूसरे संदूक में चूहे भरवा लिए।

अब वह शाह के शहर की ओर चल दी। शहर पहुँचकर उसने नौकरों से कहा, "एक सोने के थाल में शाह के लिए हीरे-जवाहरात रख लो! साथ में चूहों वाला संदूक भी रख लो।"

उधर सौदागर की पत्नी ने कपड़े बदले और मर्दाना वेश बना लिया। अब

वह एक नौजवान सौदागर लग रही थी।

महल में पहुँचकर सौदागर की पत्नी ने सोने का थाल शाह को भेंट किया। शाह बहुत खुश हुआ। उसने शतरंज की शर्तें सामने रखीं। सौदागर की पत्नी तो पहले ही तैयार थी। उसने महल के बाहरी कमरे में अपने नौकरों को बिठा दिया था। नौकर खेल शुरू होते ही चूहे छोड़ने के लिए तैयार बैठे थे।

शतरंज बिछा दी गई। बिल्ली की पूँछ पर सात जलते दिये रख दिए गए। दो-एक घंटे बाद ही नौकरों ने एक चूहा छोड़ दिया। चूहा सीधा बिल्ली के कमरे में पहुँचा। चूहा देखते ही बिल्ली की आँखों में चमक आ गई। चूहा दूसरे दरवाज़े से बाहर निकल गया। अब सौदागर के नौकरों ने एक साथ आठ-दस चूहे छोड़ दिए। बस, फिर क्या था! देखते ही देखते बिल्ली चूहों की ओर लपकी।

शाह शर्त हार चुका था। सौदागर की पत्नी ने नौकरों को बुलाकर शाह पर कोड़े बरसाने का आदेश दिया।

शाह लाख हाथ-पाँव जोड़ता रहा... पर कोड़े बरसते ही रहे। सौदागर की पत्नी ने सौदागर को कैद से छुड़ाया और सभी कैदियों को रिहा कर दिया।

कैदखाने में अब अकेला शाह बंद था।

आज शाह के नौकर भी खुश थे। उन्हें जल्लाद जैसे मालिक से मुक्ति जो मिल गई थी।

सौदागर और उसकी पत्नी अपने सामान सहित मिसार वापस आ गए।

14. राजकुमार आछू

कई हज़ार साल पहले "पूला" नाम का एक राज्य था। राज्य भर में फलों के पेड़ केवल राजमहल में थे। पर प्रजा को खाने के लिए मांस के सिवाय और कुछ न मिलता। राजा और उसके मंत्री तरह-तरह के फल खाते थे। यह उस समय की बात है जब तिब्बत में अन्न की खेती नहीं होती थी।

राजकुमार आछू एक दयावान और साहसी युवक था। उसे किसी महात्मा ने बताया कि पहाड़ी देवता के पास अनाज के बीज हैं। ये बीज ज़मीन में बो दिए जाएँ तो अच्छी फसल होगी। फिर सभी लोगों के खाने की परेशानी दूर हो जाएगी।

आछू ने तुरंत पहाड़ी देवता के पास जाने का निश्चय कर लिया। राजा ने बहुत समझाया पर वह न माना। उसे तो हर हालत में जाना ही था। राजा ने हारकर बीस योद्धा उसके साथ कर दिए। यात्रा बहुत लंबी थी। सभी योद्धा रास्ते में ही जान से हाथ धो बैठे। अब बचा राजकुमार और उसका घोड़ा।

बहुत दूर निकल आने पर राजकुमार को एक बुढ़िया मिली। पेड़ के नीचे बैठी वह सूत कात रही थी। बुढ़िया आछू की हिम्मत देखकर बहुत खुश हुई। उसने आछू को पहाड़ी देवता तक पहुँचने का रास्ता बता दिया।

आछू बुढ़िया को धन्यवाद देना चाहता था पर वह जाने कहाँ गायब हो गई। पहाड़ी देवता के स्थान पर पहुँचकर आछू ने तीन बार आवाज़ लगाई। यह तरीका उसे बुढ़िया ने ही बताया था।

"तुम कौन हो? कहाँ से आये हो... क्या चाहते हो?" पहाड़ी देवता ने बाहर आकर पूछा।

आछू ने अपना परिचय दिया, "मैं 'पूला' का राजकुमार हूँ। अन्न के कुछ दाने दे दें तो हमारे राज्य में लोगों को खाना नसीब हो जाएगा।"

पहाड़ी देवता ने आछू को बताया, "देखो, अन्न के दाने मेरे पास नहीं हैं। वह तुम्हें नागराज के पास मिलेंगे पर जो उसके पास जाता है, उसे वह पीला कुत्ता बनाकर खा जाता है..."

आछू ने निडरता से कहा, "मैं नागराज से बीज लेकर ही आऊँगा। पहाड़ी देवता बहुत खुश हुए। उन्होंने आछू को नागराज तक पहुँचने का रास्ता बताया। सोयाबीन के बीज जैसा दाना भी दिया, "मुसीबत में इस दाने को मुँह में डाल लेना तुम्हारी चाल हवा से भी तेज़ हो जाएगी। अगर नागराज तुम्हें कुत्ता बना ही दे तो तुम पूरब दिशा की ओर दौड़ना। वहाँ तुम्हें एक लड़की मिलेगी। कुछ दिनों बाद ही तुम फिर से मनुष्य बन जाओगे।

नागराज की गुफ़ा के पास पहुँचकर आछू मौके का इंतजार करता रहा। आखिरकार एक दिन नागराज अपने रक्षकों को लेकर गुफ़ा से बाहर निकला।

इधर नागराज गुफ़ा से बाहर निकला उधर राजकुमार गुफ़ा में घुसा।

गुफ़ा में अंधेरा छाया हुआ था। प्रमुख कक्ष में पहुँचते ही एक मंच दिखाई दिया। मंच पर एक सोने की कुर्सी रखी हुई थी। सभी पहरेदार ऊँघ रहे थे। मंच के नीचे कुछ बोरियों में अन्न के दाने भरे पड़े थे।

आछू ने पलक झपकते ही अपनी गर्दन में लटकी थैली में दाने भर लिए। आते-आते वह एक मुट्ठी और भर लाया। अब उसे नागराज के लौटने से पहले गुफ़ा के बाहर पहुँचना था। जल्दी-जल्दी में वह दो पहरेदारों से टकरा गया। मुट्ठी में भरे दाने उसने ज्यों ही उनकी ओर फैंके वे आँखे मलने लगे। मौका पाते ही आछू भाग निकला। अभी वह गुफ़ा के द्वार पर पहुँचा ही था कि नागराज से टकरा गया। नागराज क्रोध से गरज उठे।

आछू को पहाड़ी देवता की बात याद आ गई। उसने सोयाबीन जैसा वह दाना मुँह में डाल लिया। इधर आछू घाटी में कूदा उधर नागराज ने उसे पीला कुत्ता बना दिया। कुत्ता बना राजकुमार दौड़ता रहा। दौड़ते-दौड़ते वह लोरों जा पहुँचा। लोरों के सरदार की लड़की अमान बगीचे में फूल तोड़ रही थी। उसने पीले कुत्ते के गले में लटकी थैली देखी तो उसे प्यार करने लगी। आछू ने इशारे से थैली उतारने को कहा। अमान समझ गई। फिर कुत्ते के इशारे समझ कर अमान ने अन्न के दाने ज़मीन में दबा दिए। अब अमान पीले कुत्ते को अपने साथ ही ले गई।

देखते-देखते फसल उग आई। सरदार ने अपनी बेटियों के लिए स्वयंवर का फैसला किया। ख़बर सुनते ही आस-पास के युवकों की भीड़ लग गई।

दोनों बहिनों ने अपने लिए वर चुन लिए। अमान चक्कर लगाती रही। पीला कुत्ता भी वहीं खड़ा था। अमान ने जब कुत्ते को अपना वर चुना तो सब लोग हँसने लगे... सरदार भी बहुत नाराज़ हुआ। उसने अमान को पीले कुत्ते के साथ घर से निकाल दिया।

अमान और पीला कुत्ता अपने बोए बीजों के खेत पर जा पहुँचे। वहाँ अब पूरी फसल लहलहा रही थी। अमान वहीं कुत्ता गोद में लिए रो पड़ी।

"सुंदर लड़की, रो मत।" कुत्ता आदमी की बोली बोल रहा था, "मैं आदमी हूँ, कुत्ता नहीं।"

अमान की आँखों में खुशी के आँसू चमक उठे, "फिर तुम कुत्ता क्यों बने हुए हो?"

आछू ने अमान को अपनी कहानी सुना डाली। अमान ने उसे उठाकर फिर गोद में ले लिया, "फिर राजकुमार कब बनोगे आछू?"

आछू ने उसे समझाया, "मैं अभी पूला राज्य वापस जाऊँगा। तुम अन्न के पके दाने इकट्ठे करो और थैली में भर दो। अन्न के दाने मैं रास्ते में डालता जाऊँगा। तुम पीछे-पीछे आना। जब एक भी दाना हमारे पास नहीं बचेगा... मैं राजकुमार बन जाऊँगा।

अब आगे-आगे आछू जा रहा था। पीछे-पीछे अमान। कई महीनों तक दोनों इसी तरह चलते रहे। चलते-चलते पूला राज्य भी आ गया। आछू सीधे महल में चला गया। अमान भी आछू के पीछे-पीछे महल के भीतर चली गई।

महल में घुसते ही सफ़ेद धुएँ के बादल उभर आए। बादलों के बीच से निकला एक राजकुमार। अमान समझ गई कि यही आछू है। राजा-रानी ने अपने बेटे को देखा तो खुशी से फूले न समाए। उसी दिन आछू का विवाह अमान से हो गया। आज भी फसल काटने के बाद तिब्बत में पहली रोटी कुत्तों को ही खिलाई जाती है। लोगों को क्या पता कि यह काम तो राजकुमार आछू ने किया था।

15. छतरी ऐसे बनी

लू-पान चीन का विख्यात शिल्पी था। उसकी छोटी बहिन भी चाहती थी कि भाई की कला सीख ले। सो, भाई तो काम करता रहता और वह टुकुर-टुकुर देखती रहती।

एक दिन भाई-बहिन घूमने के लिए निकले। झील के किनारे-किनारे घूमते हुए वे दूर जा निकले। "आह! कितना सुंदर दृश्य है।" बहिन चहक उठी।

भाई ने नज़र उठाई ही थी कि मौसम ने करवट ले ली। अचानक आँधी चलने लगी। काले बादल घिर आए। देखते ही देखते झील में लहरें उठ आई और तेज़ वर्षा होने लगी।

लू-पान और उसकी बहिन एक बड़े-पेड़ के नीचे खड़े हो गए। तेज़ वर्षा ने उन्हें वहाँ भी भिगो ही डाला। घूमने का सारा उत्साह ठंडा पड़ गया।

लू-पान की बहिन बोली, "भइया तुम्हारे शिल्पी होने का क्या लाभ हुआ। देखो, आज हम कितने असहाय हो गए हैं!... आओ, हम दोनों ऐसी चीज़ बनाएँ जिससे वर्षा में भीगने से बचा जा सके।"

"ठीक है। बताओ, तुम अपनी चीज़ कितने दिनों में बना लोगी?" भाई ने पूछा।

बहिन उत्साह से चहकी, "बस, एक रात में। सुबह होने से पहले काम खत्म!"

"चलो, ठीक है। अब हमें काम पर जुट जाना चाहिए!" लू-पान ने खुश होकर कहा।

खुशी-खुशी दोनों घर लौट आए। रात भर दोनों अपनी-अपनी चीज़ बनाने में जुट गए।

लू-पान ने पहले तो निकाले लकड़ी के बढ़िया शहतीर। फिर उन पर बनाए सुंदर नमूने। चार बड़े खंभों पर रंग करने के बाद एक मंडप बनाया। मंडप लेकर वह झील के किनारे ले पहुँचा। वहाँ मंडप खड़ा कर चारों कोनों पर सुंदर घंटियाँ लटका दीं। हवा चलती तो घंटियाँ बज उठतीं।

लू-पान खुश था कि अब वह वर्षा में भी झील को देख सकेंगे।

उधर बहिन भी अपनी चीज़ बनाने में लगी थी।

लू-पान घर लौटा तो उसे बहिन की याद आई। उसने कमरे में भीतर झाँककर देखा पर वहाँ कोई नज़र न आया। वह फिर एक नया मंडप बनाने में जुट गया। इस बार का मंडप छः कोनों वाला बना। लू-पान उसे भी झील के किनारे खड़ा कर आया।

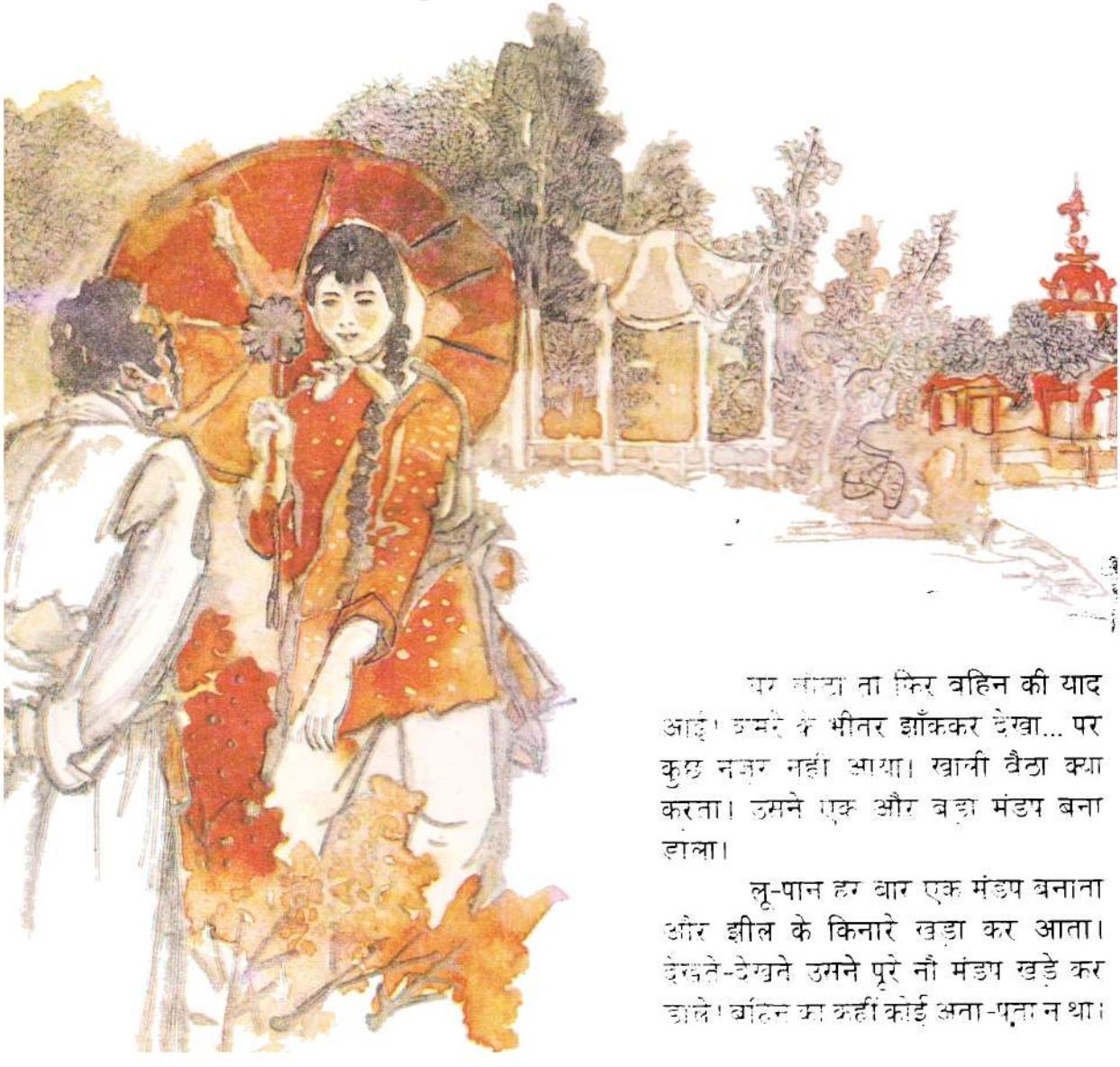

पर लौटा तो फिर बहिन की याद आई। कमरे के भीतर झाँककर देखा... पर कुछ नज़र नहीं आया। खाली बैठा क्या करता। उसने एक और बड़ा मंडप बना डाला।

लू-पान हर बार एक मंडप बनाता और झील के किनारे खड़ा कर आता। देखते-देखते उसने पूरे नौ मंडप खड़े कर डाले। बहिन का कहीं कोई अता-पता न था।

अब वह दसवाँ मंडप बनाने में व्यस्त था। पर यह क्या, दसवाँ मंडप पूरा भी न हो पाया था कि मुर्गे की बाँग सुनाई दी। बाँग सुनते ही लू-पान के हाथ रुक गए। उसे क्या पता था कि यह उसकी बहिन की शरारत है।

बात यह थी कि बहिन अपना काम पूरा कर चुकी थी और बाँग भी उसी ने दी थी।

सुबह की रोशनी में लू-पान ने अपने मंडप देखे। वह बहुत खुश था। वह जानना चाहता था कि उसकी बहिन ने क्या चीज़ बनाई है। तभी उसने देखा कि एक गोलाकार छत उसकी ओर उड़ी चली आ रही है। साथ ही उसकी बहिन भी है।

पास पहुँचने पर उसने देखा कि बहिन के हाथ में एक डंडा है डंडे के ऊपरी सिरे पर एक गोल छत बनी हुई है। छत के चारों सिरों पर रेशमी फुँदने लटके हुए थे।

लू-पान यह देखकर बहुत खुश हुआ कि इस अनोखी चीज़ को खोला और बंद भी किया जा सकता था।

"बहिन, तुम्हारी बनाई यह चीज़ मेरे मंडपों से कहीं अच्छी है!" लू-पान ने हर्षविभोर होकर कहा, "मैं तुम्हारी इस प्रतिभा पर गर्व करता हूँ।"

"तुम्हारे ये दस मंडप भी तो कितने सुंदर हैं! मेरी चीज़ तो केवल एक आदमी के लिए है जबकि तुम्हारे मंडपों में तो जाने कितने आदमी आ जाएँगे सच बात तो यह है भइया कि मुझे तुमसे ही प्रेरणा मिली है।"

लू-पान अपनी बहिन की विनम्रता पर बहुत खुश हुआ। अब वह जब कभी नई चीज़ बनाता... तो अपनी बहिन से राय जरूर लेता। बहिन भी खुश थी कि उसने भाई से बहुत कुछ सीख लिया।

16. मेहनत का फल

एक था गरीब किसान। थोड़ी ज़मीन में खेती करता और संतोष से रहता। मेहनत से उसे जितना प्यार था लालच से वह उतना ही चिढ़ता था। सच बात तो यह है कि उसने कभी किसी का बुरा नहीं किया।

किसान की पत्नी भी मेहनती थी। वह घर का काम निबटाकर पति की मदद करने पहुँच जाती। पति-पत्नी एक-दूसरे से बहुत खुश थे।

रोज़ की तरह, उस दिन भी किसान खेत पर काम कर रहा था। अचानक उसका फावड़ा किसी बर्तन से टकराया। "टन्न..." की आवाज सुनकर किसान के हाथ वहीं रुक गए। मिट्टी हटाकर देखा तो किसान हैरान रह गया। सोने का एक बड़ा घड़ा दबा पड़ा था। काफी मेहनत के बाद किसान घड़ा निकालने में सफल हो गया। ढक्कन खोल कर देखा तो किसान की आँखें फटी की फटी रह गईं। घड़े में हीरे, मोती और सोने के सिक्के भरे पड़े थे।

किसान ने घड़ा उठाकर खेत के किनारे रख दिया। दिन भर काम करने के बाद वह साँझ ढले घर पहुँचा। बातों-बातों में उसने पत्नी को घड़े वाली घटना सुनाई। पत्नी तो उछलने लगी, "है भगवान, सब तेरी कृपा का फल है।" भगवान का ध्यान करने के बाद उसने किसान से पूछा, "सुनो, जी, वह घड़ा रखा कहाँ है?"

"खेत के किनारे ही रख दिया था। आते समय लाना भूल गया" भोले किसान ने पत्नी को समझाते हुए कहा। यह सुनते ही पत्नी घबरा गई, "इतना कीमती घड़ा कहीं ऐसे छोड़ा जाता है क्या? अब वहाँ थोड़े ही रखा होगा। ले गया होगा कोई आता-जाता। तुम भी जाने कैसे आदमी हो जी! सोने और मिट्टी में कोई फर्क ही नहीं समझते। अब अगर वहाँ मिल गया तो अहोभाग्य समझो हमारे।"

किसान खड़ा देखता रह गया और पत्नी खेत की तरफ चल दी। इधर दो उठाईगीरों

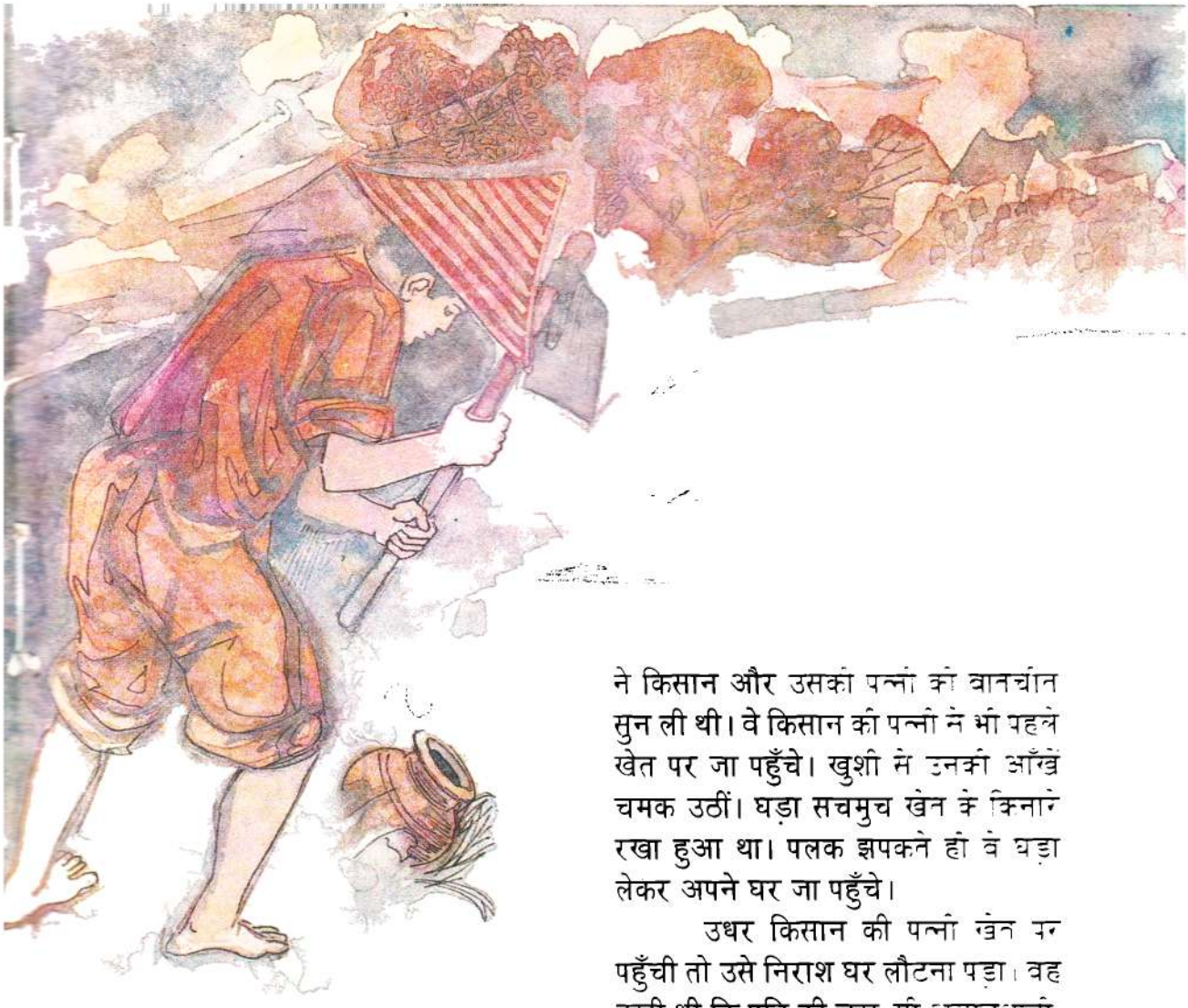

ने किसान और उसकी पत्नी की बातचीत सुन ली थी। वे किसान की पत्नी से भी पहले खेत पर जा पहुँचे। खुशी से उनकी आँखें चमक उठीं। घड़ा सचमुच खेत के किनारे रखा हुआ था। पलक झपकते ही वे घड़ा लेकर अपने घर जा पहुँचे।

उधर किसान की पत्नी खेत पर पहुँची तो उसे निराश घर लौटना पड़ा। वह दुखी थी कि पति की जरा-सी अनावधानी से हाथ आया खज़..ना भी चला गया।

पत्नी को उदास देख किसान ने उसे समझाया, "देखो, इसमें दुखी होने की क्या बात है। वह हमारी मेहनत की कमाई तो थी नहीं। ईश्वर वह धन हमें नहीं, किसी दूसरे को देना चाहता होगा। चलो, अब भूल जाओ उसे, जो हुआ सो हो जाने दो।"

इधर किसान की पत्नी रो रही थी और उधर उठाईगीर खुशी से नाच रहे थे। घड़े की ख़बर सुनकर पूरा घर-बार इकट्ठा हो गया था। पर यह क्या, जैसे ही उन्होंने घड़े

का ढक्कन खोला, फुँफकार मारते हुए साँप नज़र आए।

अब उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ। वे सोच रहे थे कि घड़ा खेत में ही खोलकर देख लेना ठीक था। किसान के बच्चे ने हमें खूब बेवकूफ बनाया !

थोड़ी ही देर बाद घड़ा फिर खेत पर पहुँचा दिया गया।

दूसरे दिन, सुबह-सुबह किसान खेत पर पहुँचा। घड़ा वहीं रखा देख उसने सोचा कि अंधेरे में पत्नी को दिखाई नहीं दिया होगा। दिन भर मेहनत करने के बाद, जब वह थका-हारा घर पहुँचा तो उसने पत्नी को बताया कि घड़ा तो वहीं रखा है।

"आपने अच्छी तरह से देखा था न!" पत्नी को विश्वास नहीं हो पा रहा था।

"हाँ-हाँ, मैंने खुद अपनी आँखों से देखा है..." किसान ने पत्नी को विश्वास दिलाते हुए कहा।

"ऐसा भी हो सकता है क्या? जरूर कोई गड़बड़ है। हो सकता है घड़े के भीतर रखी कीमती चीज़ें कोई निकाल ले गया हो और खाली घड़ा छोड़ गया हो..." पत्नी ने अपने दिल की बात सामने रख दी।

"हो भी सकता है। मैंने ढक्कन खोलकर तो देखा नहीं। हमें बेकार में परेशान होने की क्या जरूरत है!" कहकर किसान आराम से लेट गया।

दरवाज़े के बाहर खड़े उठाईगीरों ने किसान और उसकी पत्नी की यह बातचीत भी सुन ली। उन्होंने किसान से बदला लेने की ठान ली।

दोनों खेत पर जा पहुँचे। घड़ा ज्यों का त्यों रखा हुआ था। उन्होंने फुर्ती से उठाया और ठीक किसान के दरवाज़े के सामने लाकर रख दिया। सुबह जब किसान ढक्कन खोलकर देखेगा... तब पता चलेगा।

दोनों उठाईगीरे पास ही के एक पेड़ पर चढ़कर बैठ गए। सुबह हुई। किसान बाहर निकला तो घर के सामने वही घड़ा रखा देख खुशी से पागल हो गया। दौड़ता-भागता पत्नी के पास पहुँचा, "देखो, बाहर आकर देखो!"

पत्नी बाहर आई तो घड़ा देखकर भौचक्की रह गई। उसने घड़े का ढक्कन उठाकर देखा तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं। हीरे, मोती और सोने के सिक्कों की चमक देखकर किसान की आँखें भी चमक उठीं।

उधर पेड़ पर बैठे उठाईगीरों को काटो तो खून नहीं। उन्हें अपने किए पर अब पछतावा हो रहा था।

गरीब किसान की गरीबी दूर हो गई... पर उसे वह मेहनत का फल ही मानता रहा। अब वह पहले से भी अधिक मेहनत करने लगा।

17. सच्चे मित्र

बहुत पहले की बात है। सिसली में डायनोसस नाम का एक राजा राज करता था। डायनोसस बहुत क्रूर और निकम्मा शासक था। प्रजा के दिल में उसके प्रति घृणा भरी थी। वह जो चाहता, वही करता था। कोई व्यक्ति विरोध न कर पाता। प्रजा उसके अत्याचारों से परेशान थी।

सिसली में सेराक्यूज नाम का एक शहर था। इस शहर में दो मित्र रहते थे। एक का नाम था डामन और दूसरे का पैथियस। दोनों एक-दूसरे को जी-जान से चाहते थे। डामन राजा के अत्याचारों का खुलकर विरोध करता था। राजा को यह ख़बर मिली तो वह गुस्से से आग-बबूला हो उठा।

"डामन को बंदी बनाकर ले आओ। राजा ने सेवकों को आदेश दिया।

आदेश मिलते ही डामन को बंदी बना लिया गया। डामन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। अंत में राजा ने उसे फाँसी की सज़ा सुना दी।

डामन ने राजा से कहा, "महाराज, मुझे एक बार अपने बच्चों से मिलने दें।"

राजा चिल्लाया, "तुम इस तरह धोखा देकर नहीं भाग सकते। अपनी जगह किसी दूसरे को बंदी बना जाओ तभी जा सकते हो..."

राजा ने सोचा था कि कौन अपनी जान मुसीबत में डालेगा।

डामन का मित्र पैथियस वहीं खड़ा था, उसने कहा, "जब तक डामन लौटकर नहीं आता, मैं बंदी बना रहूँगा।"

राजा ने पैथियस को समझाया, "अगर डामन सही समय तक लौटकर नहीं आया तो तुम्हें फाँसी दे दी जाएगी..."

"ठीक है, मुझे शर्त मंजूर है।" पैथियस ने कहा।

डामन के बंधन खोल दिए गए। पैथियस को कारागार में डाल दिया गया

एक-एक करके दिन बीतते गए। फाँसी का दिन पास आने लगा। पैथियस भगवान से प्रार्थना करता; हे भगवान, मेरे मित्र की जगह मुझे फाँसी हो जाए।"

उधर डामन पानी के जहाज़ में वापस आ रहा था। हवा का रूख जहाज़ के लिए ठीक न था। जहाज़ धीरे-धीरे चल रहा था।

धीरे-धीरे समय बीत रहा था। डामन की बैचेनी बढ़ती जा रही थी। वह सोच रहा था – "कहीं पैथियस को फाँसी न हो जाए!"

आखिरकार फाँसी का दिन आ ही पहुँचा। ठीक समय पर पैथियस को फाँसी के तख्ते पर ले जाया गया।

"जल्दी करो !" राजा चिल्लाया।

जल्लाद फाँसी के तख्ते की ओर बढ़ने लगा।

"ठहरो, मैं आ गया हूँ!" कोई ज़ोर से कह रहा था।

राजा ने पीछे मुड़कर देखा, डामन दौड़ता हुआ आ रहा था। वह सीधा पैथियस के गले जा लगा। आँखों से खुशी के आँसू बह रहे थे। थोड़ी देर बाद उसने राजा से कहा, "अब आप मुझे फाँसी दे दीजिए। मुझे खुशी है कि मैं समय पर पहुँच गया।

उधर पैथियस रोने लगा, "हाय, मैं अपने मित्र के लिए प्राण भी न दे सका।"

डामन और पैथियस की मित्रता देख राजा हैरान रह गया।

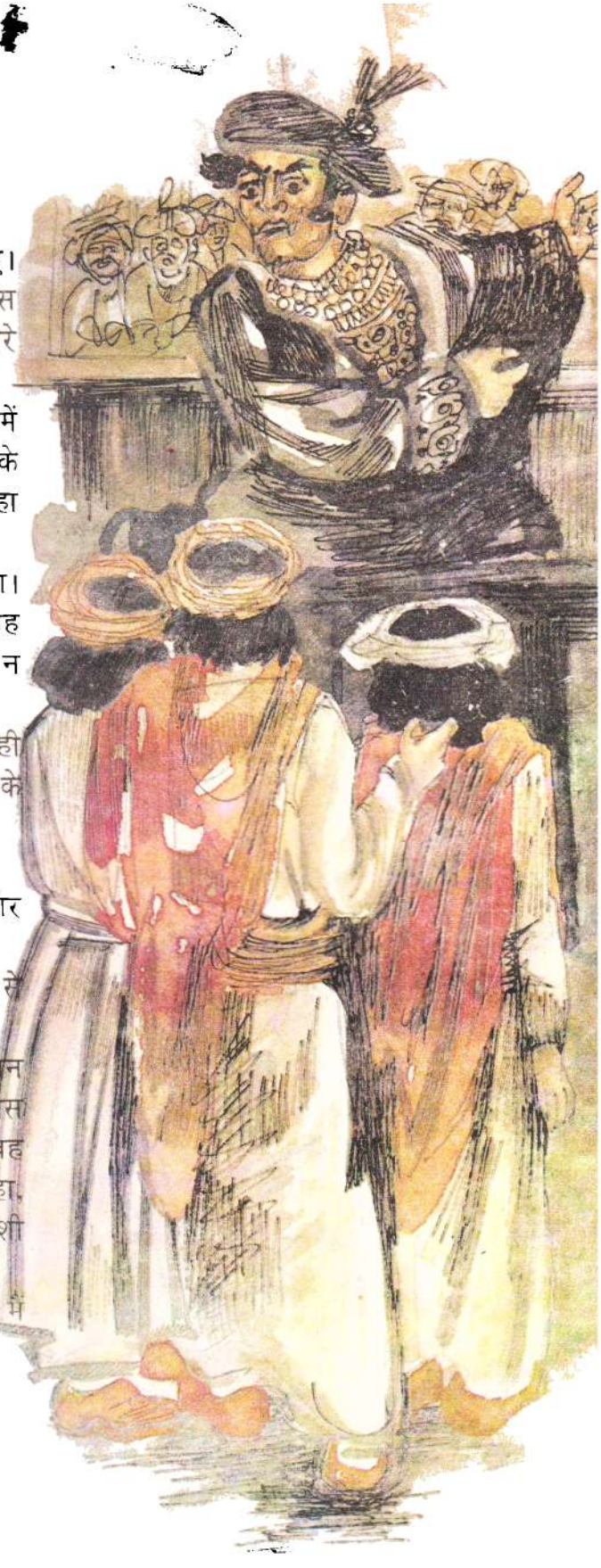

आज तक ऐसे मित्र नहीं देखे थे।

राजा ने डामन को आज़ाद कर दिया। उसने कहा, "तुम लोग सच्चे मित्र हो। सच्चे मित्रों को कोई अलग नहीं कर सकता। आज से मैं भी तुम्हारा मित्र हूँ।"

डामन और पैथियस का मित्र बनकर डायनोमस भी एक अच्छा इंसान बन गया।

18. ज्योतिषी

अरब के किसी शहर में एक आदमी अपनी पत्नी के साथ रहता था। पति सुबह से शाम तक घर में पड़ा रहता। काम-धाम में उसका मन बिल्कुल न लगता। पत्नी रोज़ पति से कहती, "कुछ काम-धाम करो। इस तरह खाली कब तक बैठे रहोगे?"

वह हँस कर कहता, "अरे छोड़ो, काम-धाम करना मेरे बस की बात नहीं है। आराम से बैठो। और खाओ।"

कुछ वर्षों तक ऐसा ही चलता रहा। पत्नी अच्छे-अच्छे पकवान बनाती और पति खाकर सोया रहता।

धीरे-धीरे सारी जमा-पूँजी समाप्त हो गई। पत्नी ने कहा, "अब कुछ काम-धाम शुरू करो। घर में कुछ भी नहीं बचा।"

पति ने वही पुराना जवाब दिया, "मैं क्या कर सकता हूँ? मुझसे कुछ नहीं हो पाएगा!"

"तुमसे अच्छा तो अनपढ़ मदारी है। कुछ तो कमा ही लेता है बेचारा!"

पत्नी की बात पति को चुभ गई। रात भर वह बिस्तर पर करवटें बदलता रहा। सुबह उठकर घर से बाहर निकल गया। एक पेड़ के नीचे कागज़ फैलाकर बैठ गया।

सड़क चलते लोग उसे देख कर रुकने लगे। वह कागज़ पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींच रहा था।

सभी को आश्चर्य हो रहा था। आखिर यह निखट्टू आज कर क्या रहा है। भीड़ में से किसी ने पूछा, "क्यों भाई यह क्या कर रहे हो?"

उसने बड़ी गंभीर आवाज़ में जवाब दिया, "भाइयों, कल रात ऊपर वाले ने मुझपर बड़ी मेहरबानी की है। मुझे सितारों से बात करने की शक्ति मिल गई है। अब मैं किसी के भी भविष्य का हाल बता सकता हूँ। मेरी बात पर यक़ीन न हो तो आओ और अपना हाथ दिखाओ!"

कुछ लोग तो अपने रास्ते चल दिए। कुछ वहीं ठहर गए। कुछ लोग दूसरे शहरों से भी आए हुए थे। वे भी खड़े होकर देखने लगे।

कई लोगों ने अपने हाथ उसे दिखाए। सभी लोगों को वह कुछ न कुछ बताता रहा। कुछ लोगों ने उससे दुख दूर करने के उपाय भी पूछे। जो मन में आता वह ऊल-जलूल बताता रहा।

धीरे-धीरे लोग उसे सचमुच ज्योतिषी मानने लगे। रोज़ सुबह वह पेड़ के नीचे बैठ जाता। शाम तक घर लौट आता। अच्छी-खासी आमदनी भी होने लगी थी। कुछ लोगों को

उसकी बातें भी सही लगीं। दूर-दूर तक उसका नाम फैल गया।

एक दिन एक औरत रोती हुई उसके पास पहुँची, "मुझे बचा लो!"

"क्या हुआ, बताओ तो!" ज्योतिषी ने पूछा।

"मैं बादशाह के महल में काम करती हूँ। एक दिन मुझे [illegible]ने की एक अंगूठी महल में पड़ी मिली। मैंने उठाकर अपने पास रखली। बाद में पता लगा कि बादशाह को वह अंगूठी बहुत पसंद है। उसने चारों तरफ जासूस दौड़ा दिए हैं। मैं पकड़ी गई तो फाँसी की सज़ा पक्की है। मुझे बचने का तरीका बताओ।"

ज्योतिषी एकदम गंभीर हो गया। उसने कागज़ पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींची और बोला, "तुम घबराओ मत। मैने सितारों से बात कर ली है। तुम बच जाओगी। जैसा-जैसा बताऊँ चुपचाप करती रहो।

"जैसा बताओगे वैसा ही करूँगी। बताओ मुझे करना क्या है?" औरत बहुत जल्दी में थी।

"आज रात को ही अंगूठी बादशाह के बड़े घड़े में डाल दो पर ध्यान रहे कि कोई तुम्हें देख न ले।" ज्योतिषी ने औरत को समझाया।

औरत भागी-भागी महल जा पहुँची। उसी रात उसने अंगूठी घड़े में डाल दी। किसी को कानों-क. ख़बर तक नहीं हुई।

ज्योतिषी की पत्नी को जो भी मिलता वह कहती, "मेरे पति से पूछो। वह बता देगा अंगूठी कहाँ है। वह सितारों से बातें कर लेता है। होते-होते बात बादशाह तक जा पहुँची। बादशाह ने तुरंत ज्योतिषी को बुलवा लिया।

ज्योतिषी ने बादशाह के दरबार में जाकर बताया, "हुजूर आपकी अंगूठी बड़े घड़े में पड़ी है। इतनी-सी बात तो आप किसी कारिंदे को भेजकर पुछवा लेते!"

नौकरों ने जाकर देखा तो [illegible] नहीं मिली। बादशाह बहुत खुश हुआ। उसने ज्योतिषी को हज़ारों [illegible]

कुछ दिनों बाद फिर महल में चारा [illegible] ज्योतिषी [illegible]

ज्योतिषी धीरे-धीरे चालक बन चुका था। वह [illegible] के पास जाकर भी घबराया नहीं। उसने अदब से कहा, "हुजूर कुछ समय लगेगा। यह मामला कुछ उलझा हुआ है। मुझे सितारों से बातचीत करनी पड़ेगी।"

बादशाह ने कहा, "ठीक है, हम तुम्हें चालीस दिन का समय देते हैं।"

ज्योतिषी घर लौट आया। रात घिर आई थी। पर ज्योतिषी की तो नींद ही गायब हो गई थी। वह पत्नी से बातें कर रहा था उधर चोरों को भी डर था। कहीं ज्योतिषी ने बादशाह को

बता दिया तो,...

चोर पूरे चालीस थे। उनके सरदार ने तय किया कि ज्योतिषी पर निगरानी रखेगा। रात होते ही ज्योतिषी के घर के पास एक चोर जा पहुँचा।

ज्योतिषी अपनी पत्नी से कह रहा था, "चालीस में से एक तो जा ही रहा है।" उसका मतलब था–चालीस दिनों में से एक दिन तो गया। बाहर खड़े चोर ने यह सुना तो उसके होश उड़ गए। उसने जाकर सरदार को बताया।

दूसरे दिन फिर दूसरा चोर भेजा गया। ज्योतिषी पत्नी से कह रहा था, "कल चालीस में से एक गया। आज दूसरा जा रहा है।" वह परेशान था। आखिर चोरों का पता कैसे लगाए! एक-एक करके सारे दिन निकल रहे हैं। चोर ने यह सुना तो जाकर सरदार को बताया, "सरदार, वह ज्योतिषी तो सब कुछ समझ गया है। उसने कहा– "कल एक गया आज दूसरा जा रहा है।" चोरों के सरदार ने ज्योतिषी के पास जाकर सब कुछ बता दिया। उसने कहा, "किसी तरह हमें बचा लीजिए।"

ज्योतिषी ने कहा, "चोरी का सामान महल के पास वाले कुएँ में डाल दो। मैं सब सँभाल लूँगा।"

चोरों ने सारा सामान कुएँ में डाल दिया। उधर ज्योतिषी ने बादशाह के पास ख़बर भिजवा दी। बादशाह बहुत खुश हुआ। उसने ज्योतिषी को अपने दरबार में ही नियुक्त कर लिया। अब ज्योतिषी और उसकी पत्नी सुख से रहने लगे।

19. दोरबंका की कहानी

एक थी बुढ़िया। उसकी थीं दो बेटियाँ। एक अपनी और एक गोद ली हुई। उसकी बेटी का नाम था – कांतिका। गोद ली हुई बेटी का नाम था – दोरबंका।

घर का सारा काम-काज दोरबंका ही सँभालती। उसका स्वभाव बहुत अच्छा था। वह हँसते-हँसते सारा काम निबटाती। फिर बुढ़िया माँ की सेवा में लग जाती। कांतिका उसे बेबात डाँट-फटकार देती। तब भी वह उसका बुरा न मानती। कांतिका का स्वभाव ठीक इसका उल्टा था।

कांतिका दोरबंका को डाँट पड़वाने के बहाने सोचती रहती। बात-बात पर उसे झिड़कती भी रहती। एक दिन कांतिका ने बुढ़िया माँ से कहा, "दोरबंका कुछ करती-धरती है नहीं। ऊपर से सेर भर अनाज रोज़ खा जाती है।"

माँ और कांतिका उसे घर से निकालने की तरकीब सोचने लगीं। पर उससे कहें भी तो कैसे!

एक दिन दोरबंका एक कोने में बैठी आराम कर रही थी। कांतिका उसके पास आई और बोली, "तुम मेरे लिए जंगल से बनफशा के फूल ले आओ।"

"अरे बहिन, क्या तुम नहीं जानतीं कि इस मौसम में बनफशा के फूल नहीं मिलते। अलबत्ता तो पेड़ों में पत्ते तक नहीं हैं।"

दोरबंका ने कांतिका को समझाते हुए कहा, "तू बहस मत कर। मुझे हर हालत में फूल चाहिए। वरना इस घर में कदम नहीं रखने दूँगी।"

दोरबंका क्या करती। सर्दी के मारे उसका बुरा हाल हुआ जा रहा था। बेचारी ठिठुरती हुई जंगल को चल दी। वह काफी दूर निकल गई। अचानक उसे कुछ लोग आग तापते दिखाई दिए। उसने देखा कि बारह आदमी घेरा बनाकर बैठे हैं। बीच में लकड़ियाँ इकट्ठी करके आग जलाई गई है। दोरबंका ने आदमियों से पूछा, "आप लोग मुझे भी आग

तापने देंगे?"

सफेद दाढ़ी वाला एक बूढ़ा उठा और बोला, "आओ बेटी बैठो। मैं जनवरी हूँ और ये दूसरे महीने हैं। हम सब मित्र हैं। इस ठंडे मौसम में अकेली कहाँ घूम रही हो?"

उसने बताया, "मैं दोरबंका हूँ। मैं अपनी सौतली माँ और बहिन के साथ रहती हूँ। मेरी बहिन ने मुझसे बनफशा के फूल लाने को कहा है। यदि आज मुझे बनफशा के फूल न मिले तो मैं मुसीबत में पड़ जाऊँगी। मुझे घर में नहीं घुसने दिया जाएगा। इस मौसम में मैं बनफशा के फूल कहाँ से लाऊँ?"

जनवरी को दोरबंका की हालत पर दया आई। वह मार्च से बोला, "भाई, तुम चाहो तो इस बच्ची की मदद कर सकते हो। कहीं यह बेघरबार न हो जाए।"

मार्च उठा और सिर हिलाने लगा। हवा में बनफशा के फूलों की महक आने लगी। दोरबंका ने चारों तरफ देखा। वह जहाँ नज़र दौड़ाती, बनफशा के फूल दिखाई पड़ते।

"जाओ बेटी, फूल तोड़ लाओ। सारा जंगल बनफशा के फूलों से महक रहा है।" मार्च ने कहा।

दोरबंका तो जैसे सपना देख रही थी। उसने दौड़कर ढेर सारे फूल तोड़ लिए। वह हैरान थी कि यह सब सपना नहीं सच था। उसने जनवरी और मार्च का आभार व्यक्त किया।

माँ-बेटी ने बनफशा के फूल देखे तो हैरान रह गईं।

कांतिका दुखी तो थी ही। एक दिन उसने दोरबंका को फँसाने की नई चाल सोच ली। वह दोरबंका के पास पहुँची और बोली, "सुनो तुम जंगल से मेरे लिए बेर ला दो!"

दोरबंका समझ गई। क्या करती, बेचारी अंधेरी रात में चल दी। उसे वही आदमी आग तापते बैठे नज़र आए।

"मुझे भी आग तापने देंगे आप लोग?" दोरबंका ने विनम्र स्वर में पूछा।

सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा मुसकराया, "अरे दोरबंका, तुम यहाँ कैसे? आओ बैठो।" जनवरी के पास बैठते हुए दोरबंका बोली, "बाबा, उन लोगों ने नई मुसीबत में डाल दिया है। आज मुझे सौतेली बहिन के लिए बेर ले जाने हैं। बेर न मिले तो वे लोग मुझे घर में नहीं घुसने देंगे।"

दोरबंका इस बार रो ही पड़ी।

जनवरी ने उसके आँसू पोछते हुए कहा, "देखो बेटी, इस तरह रोने से काम नहीं बनता। तुम धीरज रखो। मैं कोशिश करता हूँ।"

जनवरी एक आदमी की तरफ मुड़ गया, "सुनो भैया जून, तुम मेरी इस बेटी की मदद कर दो। इसका रोना मुझसे देखा नहीं जाता।"

जून ने सिर उठाकर जंगल की तरफ देखा। हर जगह बेर के पेड़ उग आए। देखते ही देखते पेड़ पके बेरों से लद गए।

दोरबंका ने झोली में बेर भर लिए। फिर वह घर चली आई।

माँ बेटी आश्चर्य से ताकती रह गईं... इस मौसम में बेर कहाँ से उठा लाई! कांतिका तो जल-भुन कर राख ही हो गई। क्रोध में उसने दोरबंका से कहा, "जाओ और अब मेरे लिए कुछ सेब ले आओ।"

दोरबंका फिर घर से निकल पड़ी। चलते-चलते उसके पैरों में दर्द होने लगा। दोरबंका जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठ कर रोने लगी। रात में दोरबंका की आवाज़ जंगल में फैल गई। आवाज़ सुनकर बारह मित्र उठ खड़े हुए। बढ़ते-बढ़ते वे दोरबंका तक जा पहुँचे।

बूढ़ा जनवरी बोला, "क्यों अब क्या हो गया तुम्हें? क्यों रो रही हो? बताओ!"

"बाबा, मुझे सेब लेकर आने को कहा है।" दोरबंका ने सुबकते हुए कहा।

जनवरी ने अपने दोस्तों से कहा, "हमें इस बच्ची की मदद करनी चाहिए..."

सितंबर ने अपने दोनों हाथ हवा में लहराए। देखते-देखते जंगल सेब के पेड़ों से भर गया।

दोरबंका ने दो सेब तोड़े और सितम्बर को धन्यवाद दिया।

घर पहुँची तो कांतिका उसे देख आग-बबूला हो उठी, "अरी कंजूस, तुझे दो ही सेब मिले?"

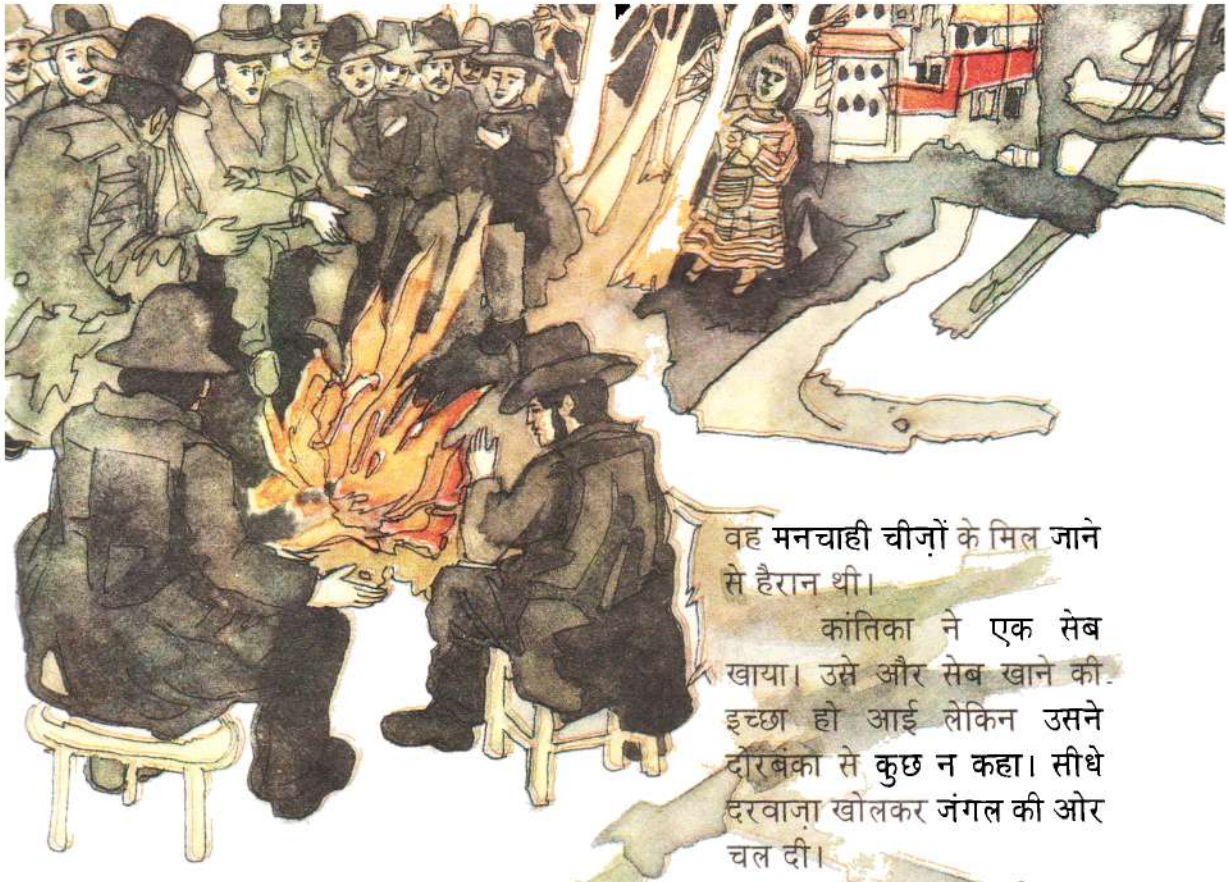

वह मनचाही चीज़ों के मिल जाने से हैरान थी।

कांतिका ने एक सेब खाया। उसे और सेब खाने की इच्छा हो आई लेकिन उसने दोरबंका से कुछ न कहा। सीधे दरवाज़ा खोलकर जंगल की ओर चल दी।

उसे आग तापते कुछ लोग बैठे मिले। ये वही बारह महीने थे।

कांतिका गुस्से में बोली, "हटो आग से। मैं भी आग सेकूँगी। तुम लोगों का कोई घर नहीं है जो यहाँ बैठे हो!" वह आग पर अपने पैर तापने लगी।

"बेटी, रात में तुम कहाँ से आ रही हो?" जनवरी ने कांतिका से पूछा।

कांतिका का स्वभाव तो था ही उल्टा। उसने जनवरी को डाँट दिया, "तुम्हें क्या मतलब? मैं कहीं भी आऊँ..."

जनवरी के क्रोध की सीमा न रही, उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए। तभी बर्फीली आँधी बहने लगी। कांतिका उसी आँधी में जाने कहाँ उड़ गई। घर में बुढ़िया माँ को चिंता हुई। वह भी आँधी में बेटी को ढूँढने निकल पड़ी।

आँधी में माँ बेटी उड़ गईं। फिर लौटकर कभी घर न पहुँचीं।

दोरबंका घर में आराम से रहने लगी। एक दिन शिकार के लिए राजकुमार आया। उसने दोरबंका का घर देखा। वह वहाँ जा पहुँचा। दोरबंका को देखते ही उससे विवाह करने की इच्छा प्रकट कर दी। दोरबंका को भी राजकुमार पसंद था। धूम-धाम से राजमहल में दोनों का विवाह हो गया। दोरबंका ने विवाह के समय अपने मित्र महीनों को याद किया। वे सब भी वहाँ पहुँचे। उस दिन जैसा सुहावना मौसम फिर किसी ने न देखा।

20. शरारती मेंढक

किसी तालाब में एक मेंढकी रहती थी। उसका एक बच्चा था। बच्चा मेंढक हर समय शरारत करता रहता। माँ का कहा कभी न मानता। माँ जो कहती, ठीक उसका उलटा करता। बेचारी मेंढकी की बड़ी मुसीबत थी वह कहती, "बेटे, नदी में आ जाओ।" तो बच्चा मेंढक पहाड़ पर जा बैठता। माँ कहती, "पहाड़ पर जाओ।" तो वह नदी में तैरने लगता।

इसी तरह कई महीने बीत गए। धीरे-धीरे मेंढकी बूढ़ी हो गई। वह चिंता करती रहती कि मेरे बाद बच्चे का क्या होगा। बच्चा मेंढक अब जवान हो गया था। आदतें उसकी वैसी की वैसी थीं। न कहा मानता न सुनता।

एक दिन मेंढकी बीमार हो गई। धीरे-धीरे उसकी हालत बिगड़ती चली गई। उसे अपने जीने की उम्मीद न रही। उसने अपने बच्चे को पास बुलाया। मेंढक माँ के पास जाकर बैठ गया।

मेंढकी ने मेंढक को समझाया, "मैं अब जा रही हूँ बेटे ! मेरी एक इच्छा है। मुझे पहाड़ पर मत दफ़नाना। मैं तो नदी के किनारे ही ठीक हूँ।"

मेंढकी ने सोचा, करेगा तो उलटा ही। बात यह थी कि उसका मन पहाड़ पर दफ़न होने का था।

दो-चार दिन बाद मेंढकी चल बसी। माँ के न रहने पर मेंढक खूब रोया। उसने सोचा– "मैंने आज तक माँ का कहा नहीं माना। माँ ने जो कहा, उसका उलटा ही किया। माँ की अंतिम इच्छा तो मान लेनी चाहिए।"

उसने माँ को नदी के किनारे दफ़ना दिया। अब उसे माँ की कब्र की चिंता रहने लगी। कहीं वर्षा में बह न जाए।

वह कब्र के पास घंटों बैठा रहता। देखते-देखते कई साल बीत गए। जब भी बरसात आती उसे माँ याद आ जाती। वह रोने लगता। धीरे-धीरे यह उसकी आदत ही बन गई।

शरारंती मेंढक

लगता है तभी से मेंढक बरसात में
नदी किनारे रोते रहते हैं।

21. निकम्मा फिलिप और मछली

कनाडा के किसी गाँव में एक किसान रहता था। उसके तीन लड़के थे। दो मेहनती थे और एक निकम्मा। किसान ने कोशिश की पर निकम्मा कुछ करने को राजी न हुआ। उसका असली नाम तो फिलिप था पर लोग उसे निकम्मा ही कहने लगे।

फिलिप के दोनों भाइयों की शादी हो गई। भाभियाँ उसे बड़े प्यार से रखती थीं। कुछ दिनों बाद किसान की मृत्यु हो गई। अब तो फिलिप की मुसीबत ही आ गई। भाभियाँ उसे बात-बात पर ताने देने लगीं। पर वह एक कान से सुनता और दूसरे कान से निकाल देता।

घरवालों ने तय किया कि फिलिप को घर से निकाल दिया जाए। बड़ी भाभी को दया आ गई। उसने कहा, "मैं समझा दूँगी उसे। घर से मत निकालो। बच्चा ही तो है।"

बात आई-गई हो गई। एक दिन फिलिप के भाई शहर गए हुए थे। भाभी ने फिलिप से कहा, "तुम एक घड़ा पानी भर लाओ।" पर फिलिप अनसुनी कर पड़ा ही रहा। भाभी ने उसे प्यार से समझाया, "देखो फिलिप, तुम्हारे भाई तुम्हारे लिए घोड़ी लाने गए हैं। अगर तुम पानी नहीं लाओगे तो घोड़ी तुम्हें नहीं मिलेगी।"

घोड़ी का नाम सुनते ही फिलिप पानी लेने चल दिया। घर के बाहर कड़ाके की सर्दी थी। पर फिलिप को उससे क्या। सभी लोग हैरान थे कि फिलिप आज काम कैसे करने लगा।

नदी के तट पर पहुँचकर फिलिप ने घड़ा भर लिया। एक रंगीन मछली भी पानी के साथ आ गई थी। फिलिप ने मछली अपने हाथ में पकड़ ली। इतनी सुंदर मछली उसने आज तक न देखी थी। "इसे मैं गाँव ले जाकर सबको दिखाऊँगा।" फिलिप खुशी से चहक उठा।

यह सुनते ही मछली बोली, "तुम क्यों मुझे मारने पर तुले हो फिलिप। तुम मुझे नदी में छोड़ दोगे तो मैं तुम्हें एक बढ़िया चीज़ उपहार में दूँगी..."

फिलिप को दया आ गई। उसने मछली को नदी में छोड़ दिया।

मछली ने थोड़ी देर बाद ही पानी में से सिर निकालते हुए कहा, "जाओ, पाँच वर्ष तक

तुम जो भी चाहोगे वही हो जाएगा।"

फिलिप ने मन ही मन सोचा, "कितना अच्छा होता अगर यह घड़ा अपने आप घर चला जाता।"

दूसरे ही पल घड़ा आगे-आगे जा रहा था। फिलिप पीछे-पीछे। घड़ा घर पहुँचा तो भाभियाँ चकराईं। पूरे गाँव में ख़बर फैल गई कि फिलिप तो जादू जानता है। फिलिप ने भाभियों को मछली वाला किस्सा सुनाया। इस पर बड़ी भाभी ने कहा, "अच्छा, एक घोड़ी मँगवाकर [illegible]!"

फिलिप ने मन ही मन कहा, "एक सुंदर-सी घोड़ी आ जाए तो अच्छा रहेगा।" तुरंत एक घोड़ी आ गई। घोड़ी देखकर सभी चकित रह गए। ख़बर गाँव के ज़मींदार तक जा पहुँची। उसने अपने नौकरों से फिलिप को पकड़ लाने को कहा।

नौकर पहुँचे तो फिलिप आराम कर रहा था। उसने सोचा अगर ज़मींदार के नौकरों को भगा दिया जाए तो अच्छा रहे। दूसरे ही पल ज़मींदार के नौकर भाग खड़े हुए। ज़मींदार की आँखों में खून उतर आया। उसने एक कारिंदे को

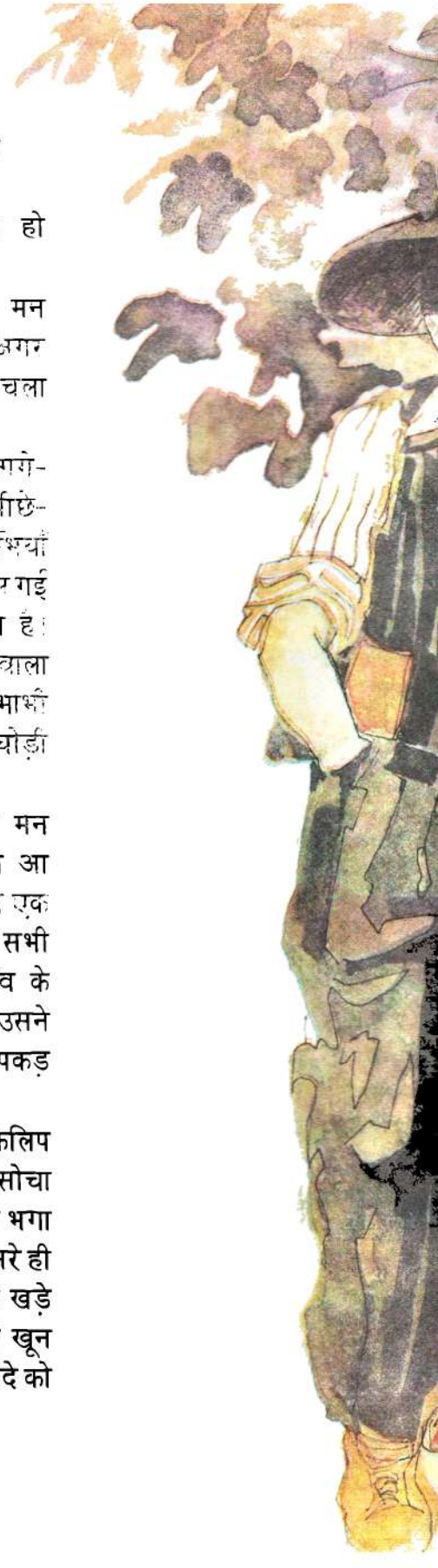

बुलाकर कहा, "तुम उस पाजी फिलिप को किसी भी तरह यहाँ ले आओ। अगर तुम उसे यहाँ न ला सके तो मैं तुम्हारी खाल उधड़वा दूँगा।"

मुसीबत का मारा कारिंदा फिलिप के घर चल दिया। फिलिप आराम कर रहा था। कारिंदे ने पास जाकर धीरे से कहा, "हुजूर एक खुशख़बरी लाया हूँ। ज़मींदार अपनी बेटी का विवाह आपसे करना चाहते हैं। इसीलिए आपको बुलवाया है।"

फिलिप विवाह की ख़बर से बहुत खुश हुआ। वह तुरंत कारिंदे के साथ चल दिया।

ज़मींदार फिलिप को देखते ही आग-बबूला हो उठा, "तुम अपने आप को समझते क्या हो? मैं इस गाँव का ज़मींदार हूँ, समझे!"

फिलिप समझ गया। उसे यहाँ चालाकी से लाया गया है।

ज़मींदार के पास ही उसकी बेटी खड़ी थी। फिलिप ने सोचा यह लड़की मेरी पत्नी बन जाए तो अच्छा रहे।

वह अपने घर जाने के लिए मुड़ा तो ज़मींदार की बेटी चिल्लाई, "ठहरिये, मैं आपकी पत्नी बनूँगी। मुझे भी अपने साथ ले चलिए।" बेटी के मुँह से ऐसा सुनकर ज़मींदार को बहुत गुस्सा आया। उसने फिलिप और अपनी बेटी को एक रस्सी से बँधवा दिया। फिर लकड़ी की एक पेटी में बंद करके नदी में बहा दिया।

बहते-बहते पेटी एक शहर के किनारे जा लगी। मछुवारों ने पेटी खोली। फिलिप और उसकी पत्नी आज़ाद हो गए। फिलिप ने सोचा यहाँ रहने के लिए एक महल बन जाता तो अच्छा रहता।

महल बनकर अपने आप खड़ा हो गया। शहर के लोग दाँतों तले उँगली दबाए खड़े रह गए। कमाल है, ऐसा अजूबा तो कभी नहीं देखा!

ज़मींदार की बेटी ने फिलिप से कहा, "तुम अपना रूप सुंदर क्यों नहीं कर लेते?"

फिलिप ने चाहा और सुंदर युवक बन गया।

अब फिलिप की अक्ल काम करने लगी थी। उसने ज़मींदार को बुलवाया।

ज़मींदार फिलिप के पास पहुँचा तो उसका वैभव देखकर दंग रह गया।

फिलिप ने मन ही मन योजना बना ली थी। उसे मछली के बताए पाँच वर्ष का समय भी याद था। अब केवल दो महीने शेष थे।

फिलिप ने ज़मींदार से कहा, "आप मुझे अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दें। बदले में मैं आपको लाखों रुपए के हीरे-जवाहरात दे दूँगा।"

ज़मींदार तैयार हो गया। उसने अपनी सारी संपत्ति फिलिप के नाम कर दी।

फिलिप ने भी अपने प्रभाव से लाखों रुपए के हीरे जवाहरात मँगा दिए। ज़मींदार

खुशी से नाचने लगा। धीरे-धीरे दो महीने बीतने को आए।

फिलिप ने अपना महल छोड़ा और ज़मींदार के महल में आकर रहने लगा। वह सारी खेती सँभालता और कारोबार देखता। सुबह से शाम तक मेहनत करता रहता। लोग हैरान थे कि फिलिप कितना बदल गया है।

पाँच वर्ष समाप्त होते ही ज़मींदार के हीरे-जवाहरात गायब हो गए फिलिप का नकली महल भी न रहा।

22. अनोखी

एक था बादशाह। उसकी थीं तीन बेटियाँ। बादशाह तीनों को खूब प्यार करता था। धीरे-धीरे तीनों बड़ी हो गईं।

बादशाह को बेटियों के विवाह की चिंता होने लगी। एक दिन उसने तीनों बेटियों को अपने पास बुलाया। उसने तीनों को एक-एक तीर-कमान दिया। अब बादशाह ने उनसे एक-एक तीर छोड़ने को कहा।

"पिताजी, आप यह तीर क्यों चलवा रहे हैं?" बेटियों ने बादशाह से पूछा।

बादशाह ने समझाया, "देखो, अब तुम सब विवाह योग्य हो गई हो। तीर जहाँ-जहाँ गिरेगा वहीं तुम लोगों की शादी करवा दी जाएगी।"

पहले बड़ी बेटी ने तीर चलाया। उसका तीर सीधा वज़ीर के घर के पास जाकर गिरा। उसकी शादी वज़ीर के लड़के से तय कर दी गई।

दूसरा तीर मँझली लड़की ने छोड़ा। उसका तीर शहर के व्यापारी के घर पर जाकर गिरा। बादशाह ने उसकी शादी व्यापारी के लड़के से तय कर दी।

अंत में सबसे छोटी लड़की की बारी आई। उसका तीर जंगल में जाकर गिरा। वहाँ एक गरीब लकड़हारा रहता था।

बादशाह ने सोचा लड़की को एक मौका और दिया जाए। उसने बेटी से कहा, "तुम एक तीर और चला सकती हो।"

लड़की तो लकड़हारे को पति मान चुकी थी। उसने लकड़हारे से ही शादी कर ली।

तीनों बहिनें अपने-अपने ससुराल चली गईं।

छोटी बहिन लकड़हारे के साथ जंगल जाती। लकड़ी कटवाती और फिर बाज़ार में जाकर बेच आती। वह अपने पति की सेवा में कोई कसर न छोड़ती।

कुछ समय बाद लकड़हारे के घर एक लड़की ने जन्म लिया। इतनी सुंदर बच्ची को

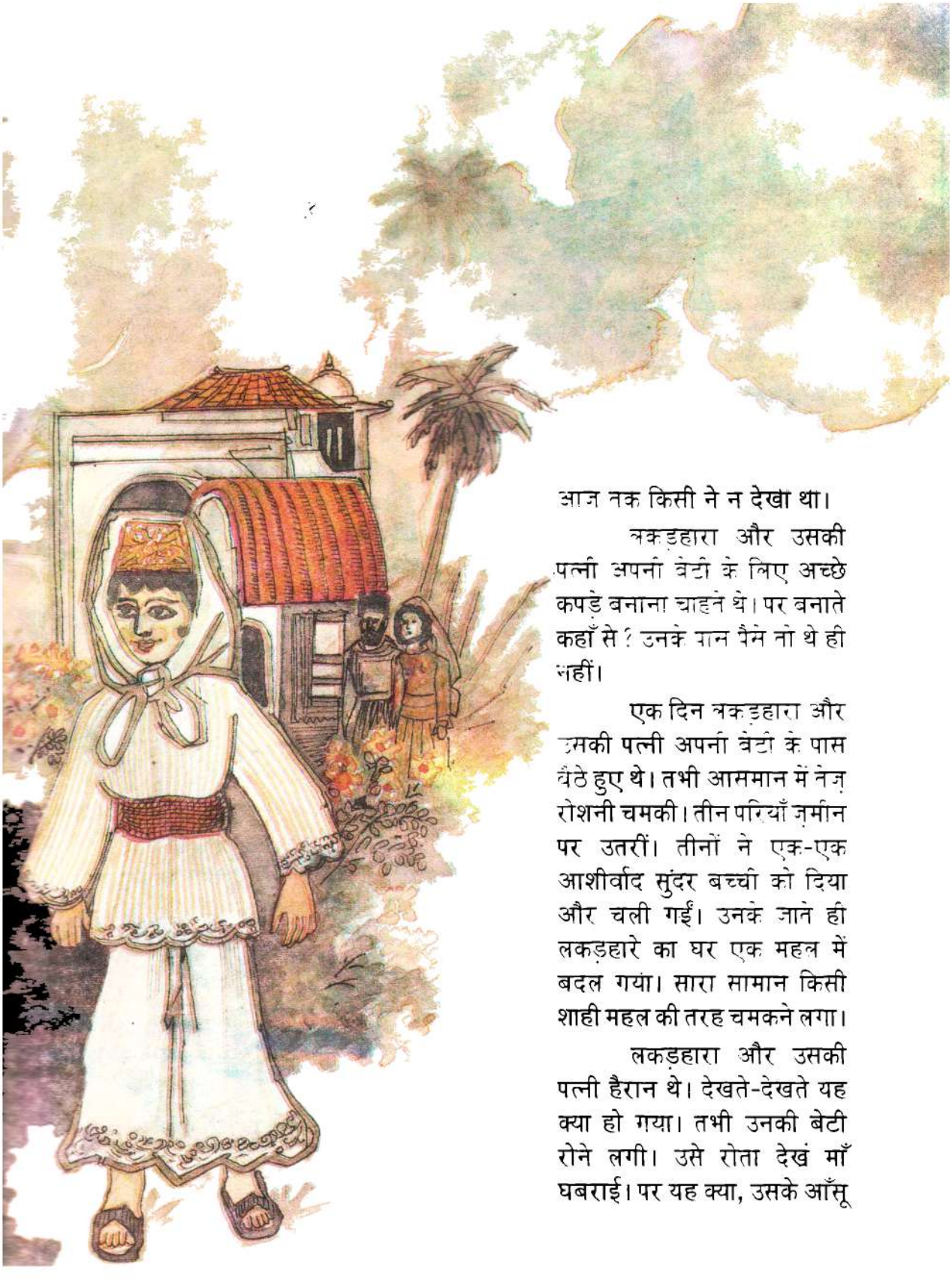

आज तक किसी ने न देखा था।

लकड़हारा और उसकी पत्नी अपनी बेटी के लिए अच्छे कपड़े बनाना चाहते थे। पर बनाते कहाँ से? उनके पास पैसे तो थे ही नहीं।

एक दिन लकड़हारा और उसकी पत्नी अपनी बेटी के पास बैठे हुए थे। तभी आसमान में तेज़ रोशनी चमकी। तीन परियाँ ज़मीन पर उतरीं। तीनों ने एक-एक आशीर्वाद सुंदर बच्ची को दिया और चली गईं। उनके जाते ही लकड़हारे का घर एक महल में बदल गया। सारा सामान किसी शाही महल की तरह चमकने लगा।

लकड़हारा और उसकी पत्नी हैरान थे। देखते-देखते यह क्या हो गया। तभी उनकी बेटी रोने लगी। उसे रोता देख माँ घबराई। पर यह क्या, उसके आँसू

तो मोती बनते जा रहे थे।

थोड़ी देर बाद वह हँसी। उसके हँसते ही चारों तरफ गुलाब के फूल महकने लगे।

लकड़हारा चकित था। यह सब हो क्या रहा है। तभी उसने देखा कि बेटी चलने लगी। उसके पैर जहाँ-जहाँ पड़ते वहाँ-वहाँ घास उग आती।

लकड़हारे और उसकी पत्नी ने बेटी का नाम 'अनोखी' रख दिया।

जो भी उसे देखता, देखता ही रह जाता। धीरे-धीरे उसकी ख़बर बादशाह के महल तक जा पहुँची।

बादशाह ने सोचा कि ऐसी लड़की को महल में बुलवा लेना चाहिए। उसने शाहज़ादे की शादी अनोखी से तय कर दी।

निश्चित दिन महल की एक दासी को उसे लेने भेजा गया। दासी चाहती थी कि उसकी बेटी शाहज़ादे की बेगम बने।

दासी ने दो पालकियाँ तैयार करवाई। कहारों को अपने साथ मिला लिया।

बादशाह के महल की पालकियाँ आई देख लकड़हारा बड़ा खुश हुआ। अनोखी को पालकी में बिठा दिया।

जंगल के बीचो-बीच पहुँचते ही दासी ने पालकी रुकवा दी। उसने अनोखी के हाथ-पैर बंधवाकर उसे लकड़ी के एक संदूक में बंद करवा दिया। संदूक को जंगल में छोड़ वे लोग आगे बढ़ लिए।

महल में अनोखी की जगह दासी की बेटी को पहुँचा दिया गया। शाहज़ादे से उसकी शादी भी हो गई। शाहज़ादे ने पत्नी को देखा तो सिर पीट लिया। अब वह करता भी क्या।

उधर अनोखी लकड़ी के संदूक में बंद पड़ी चिल्ला रही थी। एक बूढ़े राहगीर ने आवाज़ सुनी तो वह संदूक के पास आया। संदूक के अंदर बैठी अनोखी रो रही थी। उसके रोने से पूरा संदूक मोतियों से भर गया था। राहगीर अनोखी को अपने घर ले आया।

एक दिन अनोखी हँसने लगी। उसके चारों ओर गुलाब के फूल महकने लगे। राहगीर के आश्चर्य का ठिकाना नहीं था।

अनोखी ने उससे कहा, "तुम ये फूल बादशाह के महल में बेच आओ बाबा।"

बूढ़े को यह बात जँच गई। वह फूल लेकर बादशाह के महल जा पहुँचा। शाहज़ादे ने ऐसे गुलाब के फूल अब तक नहीं देखे थे। उसने अच्छे दाम देकर फूल खरीद लिए।

"इतने अच्छे गुलाब किस बगीचे में खिलते हैं बाबा?" शाहज़ादे ने पूछा तो बाबा को बताना पड़ा कि फूल तो अनोखी के हँसने से खिल उठते हैं।

बस, फिर क्या था। शाहज़ादा समझ गया कि उसके साथ धोखा हुआ है। उसने

अनोखी को महल में बुलवाया। दोनों की शादी हो गई। दासी और उसकी बेटी को गिरफ़्तार कर लिया गया।

23. सिंड्रेला की कहानी

फ्रांस के किसी शहर में एक आदमी रहता था। पत्नी, बेटी और वह आदमी सुख से जीवन व्यतीत कर रहे थे। एक दिन अचानक उसकी पत्नी बीमार हो गई। बहुत इलाज करवाया पर वह न बच सकी। बेटी छोटी थी। उसकी देख-रेख कौन करता? हारकर आदमी को दूसरी शादी करनी पड़ी।

नई पत्नी एक विधवा थी। उसकी दो बेटियाँ थीं। दोनों का स्वभाव बहुत खराब था। अपने खाने-पहनने की व्यवस्था तो कर लेतीं पर उन्हें तीसरी बहिन का ध्यान न रहता।

आदमी नौकरी पर चला जाता। दिनभर नई माँ सौतेली बेटी से खूब काम करवाती। उसकी बेटियाँ नये-नये कपड़े पहनती और सौतेली बेटी कोयलों के पास उदास पड़ी रहती। अब तो उन लोगों ने मिलकर उसका नाम 'सिंड्रेला' रख दिया था। सिंड्रेला चुपचाप सब सहन करती रहती।

एक दिन राजमहल में नृत्य का आयोजन था। सिंड्रेला ने बहिनों के कपड़े धोए, इस्त्री किए, बाल बनाए, दोनों बहिनें तैयार होकर राजकुमारियों जैसी लगने लगीं। उन्होंने सिंड्रेला से पूछा, "क्या तुम भी राजमहल चलोगी?"

"मेरे पास तो कपड़े ही नहीं हैं..." बेचारी सिंड्रेला ने दुखी होकर कहा, "जाना तो मैं भी चाहती थी पर..."

दोनों बहिनें सिंड्रेला को घर में रहने को कहकर राजमहल चली गईं। सिंड्रेला अपनी बहिनों को जाते हुए देखती रही। जब वे दूर निकल गईं तो सिंड्रेला फूट-फूटकर रोने लगी।

"मत रो मेरी बेटी... मत रो!" सिंड्रेला के सामने एक परी खड़ी थी, "सिंड्रेला, तुम्हें क्या दुख है?"

सिंड्रेला रोते-रोते चुप हो गई। उसकी आँखें सूज गई थीं।

"तुम राजमहल जाना चाहती हो?" परी ने फिर पूछा। सिंड्रेला ने सिर झुकाकर कहा, "हाँ!"

"तो जाओ, एक कद्दू ले आओ!" परी ने अपने छड़ी घुमाते हुए कहा।
सिंड्रेला कद्दू ले आई तो परी ने उसे अपनी छड़ी से छू दिया। बस, देखते ही देखते

कद्दू की जगह एक सोने का रथ खड़ा था। अब परी चूहेदान के पास गई। उसने चूहेदान का दरवाज़ा खुलवाया। चूहों को छड़ी छुआने भर की देर थी... वे छः सुंदर घोड़े बन गए। परी ने एक मोटे चूहे को और छू दिया। वह रथवान बन गया।

सिंड्रेला परी का जादू देखकर आश्चर्यचकित थी। तभी परी ने उससे छः छिपकलियाँ लाने को कहा। सिंड्रेला छिपकलियाँ ले आई। परी ने छिपकलियों को अपनी छड़ी से छुआ तो वे छः प्यादों में बदल गईं। अब परी ने अपनी छड़ी से सिंड्रेला के कपड़ों को छू दिया। बस, देखते ही देखते सिंड्रेला के कपड़े सोने-से चमचम करने लगे। उसकी चप्पलें भी शीशे की हो गईं।

"अब तुम जाओ। पर ध्यान रखना कि बारह बजे के बाद राजमहल में न रुकना। नहीं तो सब कुछ बदल जाएगा।" परी ने सिंड्रेला से कहा और गायब हो गई।

सिंड्रेला राजमहल पहुँची तो हलचल मच गई। राजकुमार स्वयं उसकी अगवानी के लिए आया। उसने सिंड्रेला का हाथ पकड़ा और उसे भीतर ले गया। राजमहल में सभी युवतियाँ सिंड्रेला की सुंदरता और पोशाक देखकर जल रही थीं। राजकुमार सिंड्रेला के साथ ही बैठा रहा। नृत्य चल रहा था।

अचानक सिंड्रेला का ध्यान राजमहल की घड़ी की ओर गया। पौने बारह बजा देख वह उठ खड़ी हुई। उसने सभी से विदा ली और जल्दी-जल्दी राजमहल की सीढ़ियाँ उतर गई। सिंड्रेला ने घर आकर परी को धन्यवाद दिया।

कुछ दिनों बाद फिर राजमहल में नृत्य का आयोजन हुआ। सिंड्रेला की बहिनें तैयार होकर चली गईं तो उसने परी को याद किया। परी याद करते ही सामने आ खड़ी हुई। उसने सिंड्रेला को पहली बार की तरह तैयार कर दिया और समय से लौट आने को कहा।

राजकुमार तो सिंड्रेला की राह देख ही रहा था। सिंड्रेला पहुँची तो राजकुमार ने उसे अपने पास ले जाकर बिठाया। दोनों बातें करते रहें। नृत्य देखते रहे। सिंड्रेला को समय का ध्यान ही न रहा। बारह बज गए तो वह चौंककर उठ भागी। राजकुमार भी उसके पीछे भागा पर वह उसके हाथ न आई।

जल्दी-जल्दी में सिंड्रेला के पैर की एक चप्पल छूट गई। राजकुमार ने देखा तो देखता ही रह गया। शीशे की इतनी सुंदर चप्पल उसने आज तक न देखी थी।

राजमहल के सिपाही दौड़ाए गए पर कहीं वह सुंदर लड़की न मिली। तब तक सिंड्रेला का रूप बदल चुका था। उसके कपड़े साधारण हो गए थे। रथ गायब हो गया था। रथवान फिर से चूहा बन गया था।

दोनों बहिनें लौटकर घर आईं तो सिंड्रेला ने पूछा, "आज का नृत्य कैसा रहा?"

दोनों बहिनों ने कहा, "नृत्य की तो छोड़ो... वह राजकुमारी अचानक उठकर ऐसी

भागी कि सब देखते रहे गए। अब बेचारा राजकुमार शीशे की एक चप्पल लेकर घूम रहा है।"

कुछ दिनों बाद ही राजमहल के सेवक शीशे की चप्पल लेकर राज्य भर में घूमने लगे ! वे एक-एक घर में जाते और लड़कियों से चप्पल पहनने को कहते। घर-घर घूमते हुए वे सिंड्रेला के घर जा पहुँचे।

दोनों बहिनों ने कोशिश की कि चप्पल उनके पैरों में आ जाए। पर चप्पल किसी के पैर में ठीक नहीं आ रही थी। सेवकों ने दरवाज़े के पास खड़ी सिंड्रेला को बुलाया। सिंड्रेला ने चप्पल पहनी तो एकदम ठीक बैठी। तभी वहाँ परी प्रकट हो गई। उसने छड़ी से सिंड्रेला के कपड़ों को छुआ तो वे फिर चमकने लगे। सिंड्रेला ने दूसरी चप्पल जेब से निकालकर पहन ली।

बहिनें भौचक्की खड़ी ही रह गईं। सेवक खुशी से नाचने लगे। नई माँ और बहनों ने सिंड्रेला से अपने बुरे व्यवहार के लिए माफी माँगी।

सिंड्रेला को राजमहल ले जाया गया। राजकुमार ने सिंड्रेला से विवाह कर लिया। दोनों सुख से रहने लगे।

24. बेतुका न्याय

कराकौश का दरबार लगा हुआ था। दरबारी गंभीर समस्याओं पर बातचीत कर रहे थे। इसी समय एक चोर दरबार में पहुँचा। उसने लंगड़ाते हुए सलाम किया और बोला, "हुजूर मैं एक चोर हूँ। कल रात मैं एक घर में चोरी करने के लिए घुस रहा था। खिड़की उखड़ कर मेरे पैर पर गिर पड़ी। मेरे पैर की हड्डी टूट गई। कुछ कीजिए हुजूर।"

कराकौश को चोर पर बहुत दया आई। उसने दरबारियों को हुक्म दिया, "मकान मालिक को दरबार में बुलाया जाए।"

थोड़ी ही देर बाद मकान मालिक दरबार में हाज़िर हुआ। डर के मारे उसकी टाँगें काँप रही थीं।

कराकौश उसे देखते ही दहाड़ा, "तुमने इतनी कमज़ोर खिड़की क्यों लगवाई? जानते हो इससे चोर की टाँग टूट गई है।"

बेचारा मकान मालिक चुपचाप खड़ा रहा। कराकौश ने कहा, "तुम्हें अपनी सफाई में क्या कहना है? बोलते क्यों नहीं?"

मकान मालिक घबराते हुए बोला, "हुजूर, इसमें मेरा क्या कसूर। कसूर तो बढ़ई का है। खिड़की उसी ने बनाई थी।"

कराकौश को बात जँच गई उसने हुक्म दिया, "बढ़ई को बुलाया जाए।"

बढ़ई दरबार में पहुँचा तो कराकौश फिर दहाड़ा, "अच्छी-खासी मजदूरी लेने के बाद भी घटिया काम करते हो। बेचारे चोर की टाँग टूट गई..."

बढ़ई चालाक था। उसे मालूम था कि कराकौश से बहस नहीं की जा सकती। उसने कराकौश को बताया, "हुजूर इसमें मेरी कोई गलती नहीं, गलती तो उस बच्चे की है जो सड़क पर जा रहा था। इतना सुंदर बच्चा मैंने आज तक नहीं देखा। उसके लाल कपड़े इतने बढ़िया थे कि मेरा ध्यान उसी में लगा रहा। खिड़की तो कमज़ोर होनी ही थी..."

कराकौश चिल्लाया, "बच्चे को दरबार में हाज़िर किया जाए।" थोड़ी देर बाद ही बच्चा दरबार में हाज़िर हुआ।

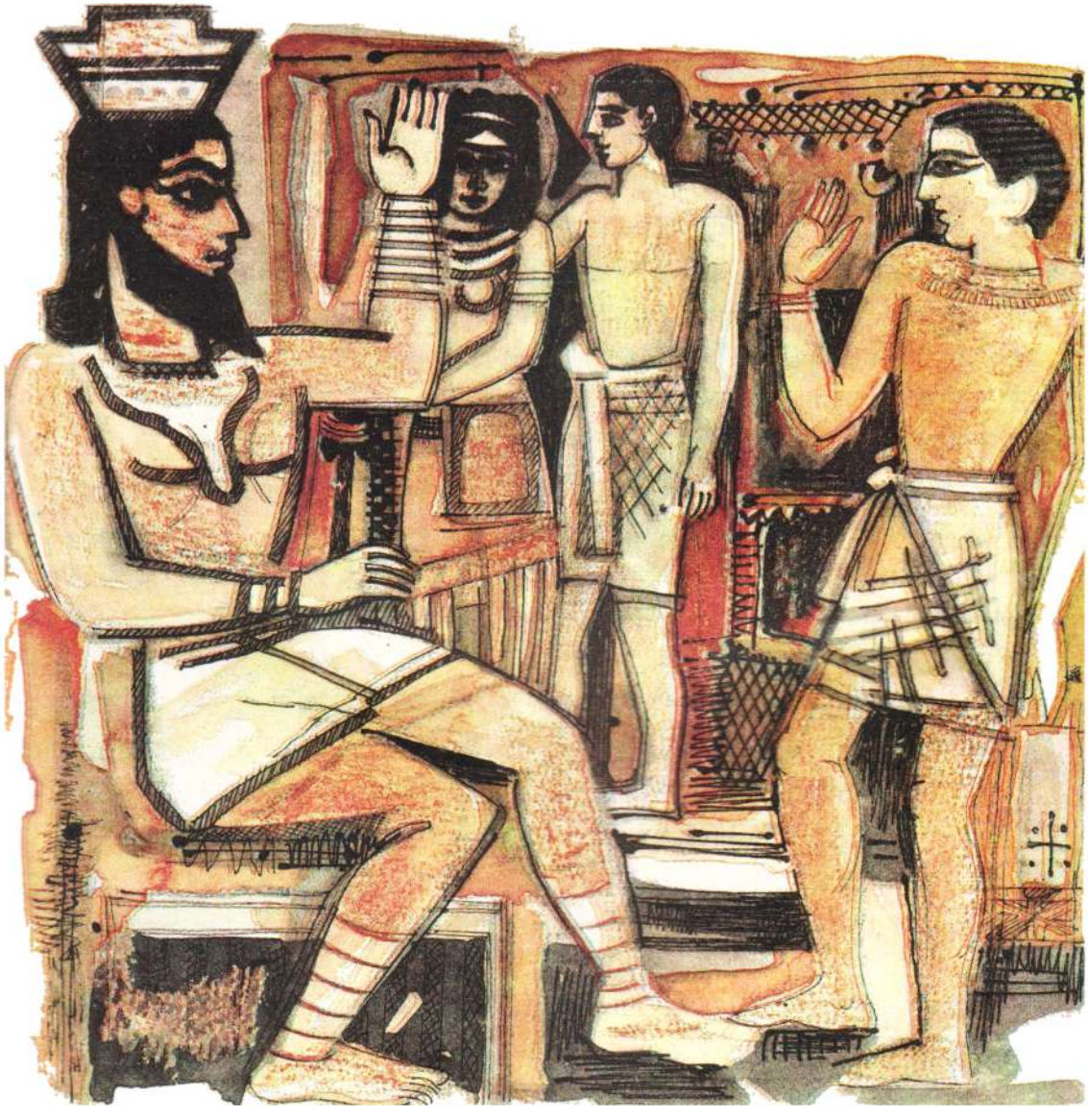

कराकौश ने बच्चे से कहा, "तुम इतने सुंदर क्यों हो? तुमने इतने अच्छे रंग के कपड़े क्यों पहने? तुम्हें देखकर बढ़ई अपना काम ठीक तरीके से नहीं कर पाया। खिड़की कमज़ोर बन गई और चोर का पैर टूट गया। तुम्हें सज़ा मिलेगी।"

बच्चा समझ गया कि कराकौश बुद्धू है। उसने धीरे से कहा, "हुजूर मैं सुंदर हूँ, यह ठीक है, पर सुंदरता तो ऊपरवाला देता है। उसमें मेरा क्या कसूर। हाँ, लाल कपड़े मैंने जरूर पहने थे, सो उन्हें रँगने का काम तो रँगरेज़ ने किया था। मैं क्या कर सकता हूँ।"

कराकौश बच्चे के जवाब से बहुत खुश हुआ। उसने कहा, "रँगरेज़ ही असली कसूरवार है। उसे बुलाया जाए।"

रँगरेज़ घबराया हुआ दरबार में हाज़िर हुआ।

कराकौश ने उसे डाँटते हुए कहा, "कैसे रँगरेज़ हो तुम! इतना अच्छा रंग क्यों किया तुमने? बच्चे के रंगीन कपड़े देखकर बढ़ई का ध्यान बँट गया। खिड़की कमज़ोर बन गई। चोर की टाँग टूट गई... बोलो! तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है?"

रँगरेज़ तो पहले ही घबराया हुआ आया था। कराकौश का गुस्सा देख उसकी आवाज़ ही न निकली। बड़ी मुश्किल से उसने सफाई में कुछ कहा... पर कराकौश को वह सब पसंद नहीं आया। उसने हुक्म दे दिया, "रँगरेज़ को फाँसी की सज़ा दे दी जाए।"

कराकौश के सिपाही रँगरेज़ को पकड़कर जेल में ले जाने लगे। रँगरेज़ इतना लंबा-चौड़ा था कि जेल का दरवाज़ा छोटा पड़ गया।

सिपाहियों ने कराकौश को ख़बर कर दी। कराकौश तो जिद्दी था ही। उसने एक और बेतुका हुक्म जारी कर दिया, "अगर यह रँगरेज़ लंबा है तो किसी छोटे रँगरेज़ को फाँसी दे डालो।"

सिपाही एक नाटे कद के रँगरेज़ को पकड़ लाए। वह लाख चिल्लाता रहा, पर किसी ने उसकी न सुनी।

धीरे-धीरे कराकौश के न्याय पर से प्रजा का विश्वास ही हट गया।

25. अदृश्य कपड़े

बहुत पहले की बात है। एक था राजा। अच्छे-अच्छे कपड़े पहनना उसे बहुत अच्छा लगता। वह चाहता कि हर रोज़ एक नई पोशाक पहने। सरकारी खजाने का दुरुपयोग वह इसी काम के लिए करता।

एक दिन दो बुनकर राजा के महल के सामने घूम रहे थे। राजा अपनी नई पोशाक में घूम रहा था। राजा ने पूछा, "मेरी यह नई पोशाक कैसी लगी?"

"बहुत अच्छा सरकार!" बुनकरों ने जवाब दिया, "हम लोग बुनकर हैं। हम इससे अच्छा कपड़ा बना सकते हैं।"

अच्छे कपड़े की बात सुनते ही राजा उनके और नज़दीक चला गया, "कैसा कपड़ा बनाते हो तुम लोग?"

बुनकरों ने बताया, "हमारे कपड़े को मूर्ख और अयोग्य आदमी तो देख भी नहीं सकते!"

राजा बहुत खुश हुआ, "यह तो बहुत अच्छी बात है। अगर ये कपड़े पहन लूँ तो मैं मूर्ख और अयोग्य लोगों को तुरंत पकड़ लूँगा। तुम लोग मेरे लिए वह कपड़ा बना दो तो मैं तुम्हें मुँह माँगा इनाम दूँगा।"

बुनकर राजा के साथ महल में चले गए। राजा ने एक बड़ी रकम उन्हें काम शुरू करने के लिए दी। बुनकरों ने रकम अपनी जेब के हवाले कर ली। अब वे खाली करघे लेकर हाथ चलाने लगे। सूत का एक टुकड़ा भी उनके पास नहीं था। रात को बारह बजे तक वे खाली हाथ-पैर हिलाते रहते।

दो-तीन दिन ऐसे ही निकल गए। राजा ने अपने प्रधानमंत्री को काम देखने के लिए भेजा। राजा के सभी मंत्री स्वयं को सबसे बड़ा विद्वान समझते थे। प्रधानमंत्री तो मंत्रियों का भी प्रमुख था। राजा के बाद सबसे ज्यादा सम्मान उसे ही मिलता था।

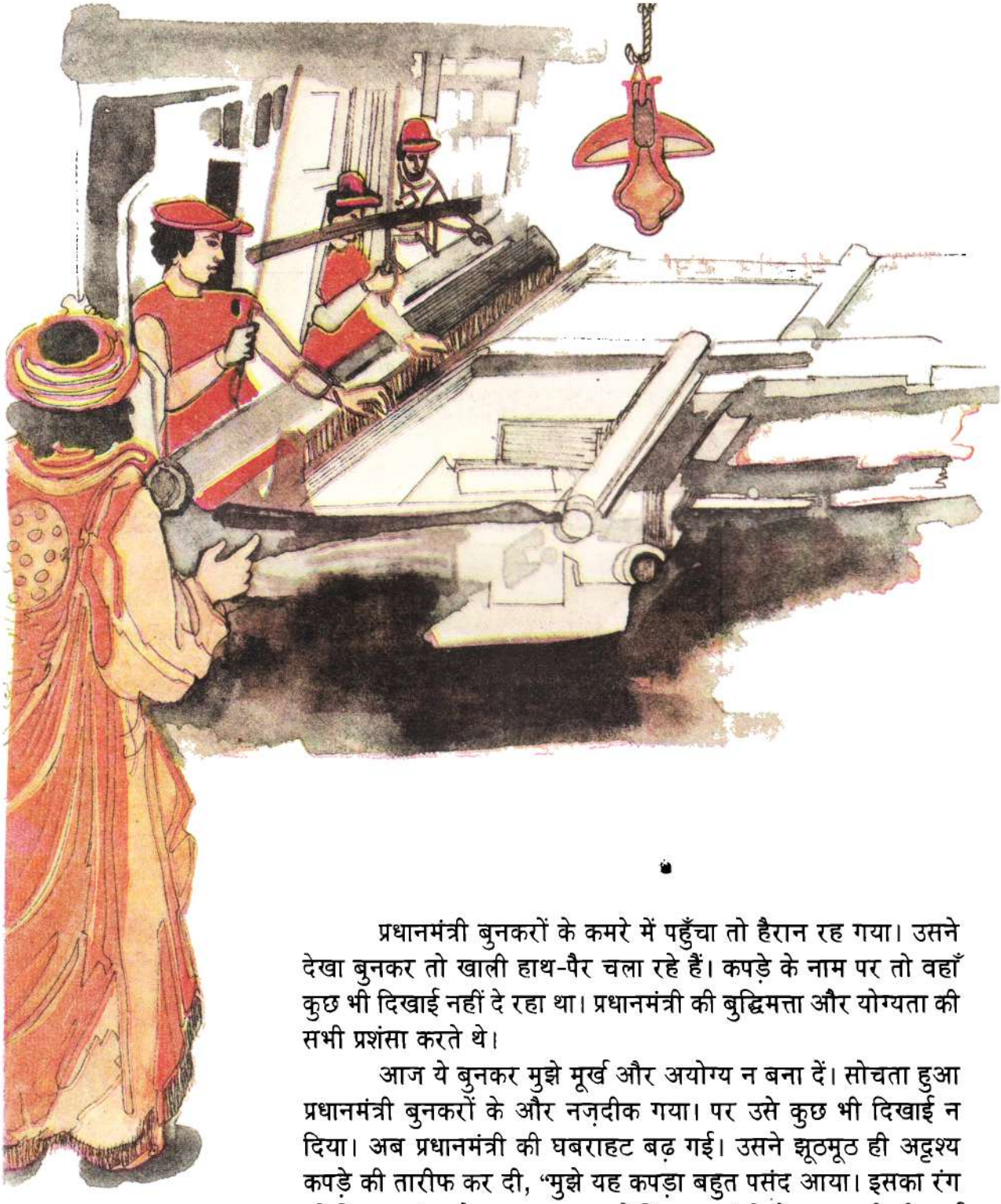

प्रधानमंत्री बुनकरों के कमरे में पहुँचा तो हैरान रह गया। उसने देखा बुनकर तो खाली हाथ-पैर चला रहे हैं। कपड़े के नाम पर तो वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। प्रधानमंत्री की बुद्धिमत्ता और योग्यता की सभी प्रशंसा करते थे।

आज ये बुनकर मुझे मूर्ख और अयोग्य न बना दें। सोचता हुआ प्रधानमंत्री बुनकरों के और नज़दीक गया। पर उसे कुछ भी दिखाई न दिया। अब प्रधानमंत्री की घबराहट बढ़ गई। उसने झूठमूठ ही अदृश्य कपड़े की तारीफ कर दी, "मुझे यह कपड़ा बहुत पसंद आया। इसका रंग भी कितना सुंदर है।" बुनकर खुश थे कि प्रधानमंत्री जैसा आदमी भी मूर्ख बन गया।

प्रधानमंत्री ने दरबार में आकर बताया, "महाराज काम चल रहा है। बुनकर बहुत अच्छा कपड़ा तैयार कर रहे हैं।"

दूसरे दिन राजा ने एक और मंत्री को भेजा। मंत्री बुनकरों के पास पहुँचा तो हक्का-बक्का रह गया। कपड़े का तो कहीं अता-पता ही न था। बुनकरों के हाथ-पैर हवा में चल रहे थे।

"कहीं मैं मूर्ख और अयोग्य तो नहीं हूँ?" मंत्री ने सोचा, वह बुनकरों के पास जाकर बैठ गया। उसने कपड़े की प्रशंसा शुरू कर दी, "इस कपड़े का नमूना बहुत अच्छा है। हमारे राजा इसे देखकर बहुत खुश होंगे।" थोड़ी देर बाद मंत्री वापस चला गया। चलो बुनकरों ने राहत की साँस ली, "यह मंत्री भी मूर्ख ही था।"

एक कान से दूसरे कान तक पहुँचते-पहुँचते अदृश्य कपड़े की प्रशंसा पूरे राज्य में फैल गई ।

एक दिन राजा ने स्वयं कपड़ा देखने का निश्चय किया। अपने प्रधानमंत्री के साथ राजा बुनकरों के पास जा पहुँचा।

"कितना शानदार कपड़ा है महाराज!" प्रधानमंत्री ने कहा।

राजा भौंचक्का-सा देखता रह गया, "कपड़ा है कहाँ!" उसने सोचा, "कहीं मैं ही मूर्ख और अयोग्य तो नहीं हूँ। नहीं-नहीं ऐसा मैं किसी को पता नहीं होने दूँगा।" फिर उसने प्रधानमंत्री से कहा, "कपड़ा तो सचमुच अद्भुत है। ऐसा कपड़ा तो मैंने आज तक नहीं देखा कितना सुंदर नमूना, कितना अच्छा रंग, वाह, क्या बात है!"

दरबार में ख़बर फैल गई कि राजा को भी कपड़ा बहुत पसंद आया। जिसे देखो वही प्रशंसा करने लगा।

राजा ने बुनकरों को राजकीय सम्मान प्रदान किया। उसी दिन दरबारियों ने सलाह दी, "अगले राज-समारोह में महाराज नये कपड़े पहनें तो अच्छा रहेगा।"

बुनकरों को ख़बर कर दी गई। राजा के कपड़े सिलने का काम भी बुनकरों को ही करना था। कपड़ा हो तो सिलें भी। बुनकरों ने तीन दिन तक हवा में कपड़ा सिलने का अभिनय किया।

राजा अपनी नई पोशाक देखने गया बुनकरों ने उन्हें समझाया, "यह देखिए, कितनी अच्छी सिलाई है। कपड़ा इतना हलका है कि पहनने वाले को पता ही न चले। यह आप पर खूब खिलेगा।"

राजा बड़ी मुसीबत में था। उसे तो कपड़ा कहीं नज़र नहीं आ रहा था। ऊपर से वह खुश बना रहा, "सचमुच तुम लोगों ने अच्छे कपड़े बनाए हैं।"

धीरे-धीरे राजा के सभी दरबारी वहाँ एकत्र हो गए। सभी कपड़ों की प्रशंसा करने लगे।

राज-समारोह का दिन भी आ गया। बुनकरों ने राजा को नये कपड़े पहनाने का अभिनय किया। राजा शीशे के ठीक सामने खड़ा था... एकदम नंगा। उसे कपड़े अब भी दिखाई नहीं दे रहे थे। बुनकरों ने राजा से कहा, "आइए महाराज, बाहर आइए न! राज-समारोह का जुलूस तैयार है।"

राजा बाहर निकल आया। सभी मंत्री राजा को नंगा देखकर चौंक उठे, पर कहे कौन! सभी राजा की नई पोशाक की प्रशंसा करते रहे। थोड़ी ही देर बाद जुलूस आगे बढ़ने लगा।

राजा के ऊपर तो छत्र लगा हुआ था, पर शरीर पर कपड़ा एक भी नहीं था। सभी राजा के कपड़ों की प्रशंसा कर रहे थे।

जुलूस कुछ और आगे बढ़ा। एक बच्चा सड़क पर घूम रहा था, उसने नंगे राजा को देखा तो चिल्ला पड़ा, "देखो-देखो, राजा नंगा है... राजा नंगा है।"

पास-पड़ोस के दूसरे बच्चे भी यही चिल्लाने लगे। अब जुलूस में भी खुसुर-पुसुर होने लगी, "राजा तो सचमुच नंगा है।"

बात राजा के कानों में भी पड़ी। वह शर्मिंदा हुआ। बुनकरों ने उसे अच्छा सबक सिखाया था।

26. भले की भलाई, बुरे की बुराई

एक था गाँव। गाँव में रहते थे दो भाई। बड़े भाई के पास खूब पैसा था। बड़े-बड़े खेत थे। नौकर-चाकर थे।

छोटा भाई था गरीब। उसके पास न ज़मीन थी न पैसा। बेचारा दिन भर दूसरों के खेतों पर काम करता। रोज़ कमाता रोज़ खाता।

एक दिन दोनों भाई एक साथ बैठे थे। बैठे-बैठे बातें होने लगीं। बड़े भाई ने कहा, "अब तो भला आदमी मुसीबत में ही रहता है। भला बनने से क्या फायदा?"

छोटे भाई ने कहा, "ऐसा क्यों कहते हो भैया। भले आदमी को भलाई का फल मिलता है।"

बात जब आगे बढ़ने लगी तो बड़े भाई ने कहा, "चलो पूछ कर देखें।"

दोनों भाई चल दिए। रास्ते में जो मिलता उसी से पूछते। सबका जवाब यही होता – 'भले आदमी को भलाई कहाँ! भला तो बेचारा भूखा मरता है। दूसरे लोग मजे में रहते हैं।"

अब क्या था! छोटे भाई को नीचा देखना पड़ा। धीरे-धीरे छोटे भाई को काम मिलना भी बंद हो गया। भूखों मरने की नौबत आ गई। बच्चे भूख से रोने लगे।

हारकर छोटा भाई बड़े भाई के पास पहुँचा, "मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। अब तो काम मिलना भी बंद हो गया है। बच्चे भूख से परेशान हैं। थोड़े से चावल उधार दे दो।"

बड़ा भाई तो था भलाई का दुश्मन। उसने छोटे भाई की परेशानी की कोई चिन्ता नहीं की, "देखो, चावल तो मिल जाएगा। पर भीख नहीं मिलेगी। चावल लो दाम दो। सीधा-सच्चा हिसाब है।"

छोटा भाई तो खाली हाथ आया था, "भैया, अगर मेरे पास पैसे होते तो मैं तुमसे चावल क्यों माँगता भला। तुम भीख समझकर ही दे दो।"

बड़ा भाई तो यह सुनकर तैश में आ गया, "देखो, भीख तो मैं जानता नहीं, चलो पैसे

नहीं है तो कोई बात नहीं। तुम अपनी एक आँख निकाल कर मुझे दो। बदले में दस किलो चावल तुम्हें मिल जाएँगे।

मुसीबत का मारा छोटा भाई करता भी क्या? बेचारे ने एक आँख दे दी। दस सेर चावल लेकर – घर लौट आया। एक आँख निकली देख सभी रोने लगे।

कुछ दिन तो दस सेर चावल चल गए। काम फिर नहीं मिला। अब चावल माँगने जाए तो दूसरी आँख भी गँवाए। बहुत सोचा पर कोई रास्ता नहीं सूझा। हार कर छोटा भाई फिर बड़े भाई के पास गया।

बड़े भाई ने दूसरी आँख भी निकाल ली और दस सेर चावल थमा दिया। अंधा बना वह घर लौटा तो सभी फूट-फूट कर रोने लगे।

कुछ दिनों बाद छोटा भाई भीख माँगने लगा। जो कुछ मिलता उसीसे गुजारा होता।

रोज़ की तरह छोटा भाई उस दिन भी भीख माँग रहा था। रात हो गई पर उसकी पत्नी उसे लिवाने नहीं पहुँची। कितनी देर बैठता। वह खुद ही चल पड़ा। चलते-चलते रास्ता भटक गया। रास्ता क्या भटका, जंगल में जा पहुँचा। थक-हारकर एक पेड़ के नीचे बैठ गया। बैठे-बैठे आधी रात हो गई तभी उसे लगा कि पेड़ पर चार आदमी बैठे फुसफुसा रहे हैं। बातचीत से उसने जाना कि वे शैतान थे। इन चारों में एक सबका उस्ताद था। चारों दिन भर लोगों को परेशान करते और रात को आकर पेड़ पर बैठ जाते। एक-दूसरे को अपना किस्सा सुनाते।

पहला बोला। "मैंने दो भाईयों में भलाई-बुराई पर बात करवाई। छोटे भाई की बात निकली गलत सो उसे अंधा बनवा दिया। खूब मजा आया..."

उस्ताद यह सुनकर बहुत खुश हुआ, "ये खूब रही। अब वह जीवन भर अंधा रहेगा। उसे क्या मालूम कि इस पेड़ के नीचे गिरी ओस से आँखें ठीक हो सकती हैं। और तुमने क्या किया?" उसने दूसरे शैतान से पूछा।

दूसरा शैतान बोला, "मैंने रामनगर के सारे नदी-नाले सुखा डाले—लोग हाहाकार कर रहे हैं।"

उस्ताद खुश था, "यह ठीक किया तुमने। लोगों को क्या मालूम कि सामने के पहाड़ के सात ढोके हटा देने से पानी बरसेगा..."

अब तीसरे की बारी आई।

तीसरा बोला, "मैंने उदयगढ़ के राजा की बेटी को गूँगा कर दिया। उसकी शादी होने वाली थी। अब सब सिर पकड़कर रो रहे हैं। उस्ताद ने जोरदार ठहाका लगाया, "वाह, वे बेचारे क्या जानें कि इस पेड़ के तने का रस पिला देने से वह ठीक हो जाएगी।"

थोड़ी देर बाद चारों शैतान पेड़ से उतर कर उड़न-छू हो गए।

छोटा भाई तो सब कुछ सुन रहा था। उसने एक-एक उपाय अच्छी तरह से याद कर लिया।

सुबह होते ही उसने अपनी आँखों में ओस मल ली। सचमुच अब उसे दीखने लगा था। छोटे भाई की खुशी का तो कोई ठिकाना ही न था। उसने कूदकर पेड़ की एक टहनी तोड़ ली, फिर वह अपने घर जा पहुँचा। उसे देखकर घर वालों की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने घर वालों को पूरा किस्सा सुनाया और चल पड़ा।

दौड़ता-दौड़ता वह रामनगर पहुँचा।

लोग पानी के बिना मरे जा रहे थे। वह सीधा राजा के पास जा पहुँचा। उसने राजा से कुछ आदमी और फावड़े-कुदालें माँगी और चल दिया। पहाड़ पर पहुँचकर सात ढोके देखते-देखते हटा दिए। सोता फूटते ही पानी बह निकला।

राजा छोटे भाई पर बहुत खुश हुआ। उसने उसे ढेर सारी स्वर्ण मुद्राएँ उपहार में दीं।

अब छोटा भाई पहुँचा सीधा उदयगढ़। राजा के पास पहुँचकर उसने कहा, "महाराज, आप राजकुमारी को बुलाएँ। मैं उसे अभी ठीक कर देता हूँ।" राजकुमारी को बुलवाया गया।

छोटे भाई ने पेड़ की टहनी को कूटकर रस निकाला और राजकुमारी को पिला दिया। देखते-देखते राजकुमारी ठीक हो गई।

राजा ने छोटे भाई को राजमहल में ही रोक लिया और उसके परिवार को भी बुलवा लिया।

अब वे सब सुख से राजमहल में रहने लगे।

बड़े भाई को पता लगा तो वह शीघ्र ही छोटे भाई के पास जा पहुँचा "अरे, यह सब कैसे हुआ... तुम्हारी आँखे कैसे ठीक हुईं...?"

छोटे भाई ने पूरी कहानी सुना दी।

बड़ा भाई दौड़ता-दौड़ता जंगल में पेड़ के नीचे जा पहुँचा। रात हुई। चारों शैतान पेड़ पर पहुँचे। उन्हें आश्चर्य था कि सबकुछ ठीक कैसे हो गया। जरूर किसी ने उनकी बातचीत सुन ली है।

पेड़ से उतर कर उन्होंने देखा तो नीचे बड़ा भाई बैठा था। उन्होंने समझा यही है जो हमारी बातें सुनता है। बस फिर क्या था, चारों ने मिलकर बड़े भाई को मार डाला। भले की भलाई, बुरे की बुराई।

27. सारंगी का कमाल

किसी सेठ के यहाँ एक नौकर काम करता था। नौकर ईमानदार और मेहनती था। सुबह से शाम तक काम में लगा रहता। कभी एक पैसा इधर का उधर न करता। सेठ भी खुश था कि इतना अच्छा नौकर मिल गया।

देखते-देखते तीन साल बीत गए। नौकर हैरान था, मालिक ने अभी तक उसे फूटी कौड़ी भी नहीं दी थी। आखिरकार एक दिन उसने मजदूरी माँग ही ली। सेठ ने तीन पैसे उसके हाथ में रख दिए, "ये लो। ये तीन पैसे हैं इतनी मजदूरी कोई मालिक अपने नौकर को नहीं देता।"

नौकर तो सीधा-सादा था। उसने तीन साल की कमाई जेब में रख ली और दूसरे दिन नौकरी छोड़कर चल दिया। वह बहुत खुश था। पूरे तीन साल की कमाई उसकी जेब में जो थी।

रास्ते में मिला एक बौना। बौने ने उसे रोक कर पूछा, "क्यों भाई, बड़े खुश नज़र आ रहे हो। क्या बात है?"

"बात कुछ नहीं। तीन साल की कमाई लेकर आ रहा हूँ। बस इसीलिए खुश हूँ।"

बौने ने रोते हुए कहा, "तुम्हारे पास तो तीन साल की कमाई है। मेरे पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं है। तुम तो अभी जवान हो। फिर कमा सकते हो। मैं बूढ़ा हो चुका हूँ। मेहनत का काम भी नहीं कर सकता। क्या तुम यह कमाई मुझे दे दोगे? मैं तुम्हारा यह एहसान कभी नहीं भूलूँगा।"

नौकर को दया आ गई। उसने तीन पैसे बौने को थमा दिए। बौना बड़ा खुश हुआ। उसने जाते-जाते नौकर से कहा, "इन तीन पैसों के बदले मुझसे तीन वरदान ले लो।"

लड़के ने बौने से तीन वरदान माँग लिए, "तुम मुझे एक ऐसी गुलेल दे दो जिसका निशाना एकदम सही बैठे। एक ऐसी सारंगी दे दो जिसे बजाते ही सुनने वाले नाचने लग जाएँ। तीसरा वरदान मुझे यह दो कि मेरी प्रार्थना कभी ठुकराई न जाए।"

बौने ने कहा, "ठीक है। ये गुलेल और सारंगी ले लो। तीसरा वरदान भी मंजूर है।"

लड़का अपने रास्ते पर चल दिया। वह कुछ ही दूर बढ़ा था कि उसे एक आदमी पेड़ के नीचे बैठा दिखाई दिया। पेड़ पर एक सुंदर चिड़िया बैठी थी। लड़का वहाँ पहुँचा तो आदमी ने उसे रोककर कहा, "देखो कितनी सुंदर चिड़िया है!... तुम अगर यह चिड़िया मुझे पकड़ दो तो

मैं मनचाहा इनाम दे सकता हूँ।"

लड़के ने कहा, "अभी लो, मैं इसे नीचे गिरा देता हूँ।"

उसने अपनी गुलेल का निशाना लगाया। चिड़िया पास ही कँटीली झाड़ी में जा गिरी। चिड़िया को गिरता देख वह आदमी भी झाड़ी में चला गया।

वह झाड़ी में गया और लड़के ने सारंगी बजानी शुरू कर दी। सारंगी की आवाज़ सुनते ही आदमी नाचने लगा। नाचते-नाचते उसके शरीर पर अनगिनत काँटे चुभ गए। थोड़ी ही देर बाद वह चिल्लाया, "तुम ये सारंगी बजाना बंद करो, नहीं तो मैं नाचते-नाचते मर जाऊँगा। तुम भले ही मेरी मुहरों भरी थैली ले लो।"

लड़के को दया आ गई। उसने सारंगी बंद की और मुहरों भरी थैली लेकर चलता बना।

लड़का तो अपनी मस्ती में जा रहा था। तभी उसे पीछे से कुछ लोगों के आने की आवाज़ सुनाई दी। पीछे मुड़कर देखा तो वह दंग रह गया। सिपाहियों के साथ वही आदमी भागा चला आ रहा था। पास पहुँचते ही आदमी चिल्लाया, "हाँ-हाँ यही है वह बदमाश जिसने मेरी मुहरों की थैली छीन ली है। पकड़ लो इसे।" सिपाही लड़के को पकड़कर न्यायाधीश के पास ले गए।

न्यायाधीश ने लड़के से सफाई देने को कहा। लड़के ने बताया, "थैली तो इसने खुशी-खुशी दी थी। अब झूठ बोलता है। इसने कहा सारंगी बजाना बंद कर दो। मैंने बंद कर दी। इसने थैली दी। मैंने रख ली। मेरा इसमें क्या कसूर है भला!"

इसके बाद न्यायाधीश ने आदमी से सफाई देने को कहा। आदमी ने भोलेपन से बताया, "मेरी जीवन भर की कमाई को यह लड़का छीनकर ले आया है। आप जो भी फैसला करेंगे मुझे मंजूर है..."

न्यायाधीश ने बहुत सोच-विचार के बाद फैसला सुना दिया। लड़के को फाँसी की सज़ा दी गई। थैली के मालिक को थैली वापस मिल गई। दूसरे दिन फाँसी देना तय हुआ।

सभी लोग फाँसी के समय इकट्ठे हो गए। जल्लाद नौकर के पास आकर खड़ा हो गया। न्यायाधीश ने लड़के से पूछा, "तुम्हारी अंतिम इच्छा क्या है?"

लड़के ने कहा, "महोदय, मुझे सारंगी बजाने की अनुमति दी जाए!" यह सुनते ही थैली का मालिक चिल्लाया, "महोदय, इसे सारंगी बजाने की अनुमति न दें..."

न्यायाधीश ने उसे डाँटते हुए कहा, "तुम चुप रहो, यह उसकी अंतिम इच्छा है।"

लड़के को सारंगी बजाने की अनुमति दे दी गई।

लड़के ने सारंगी बजानी शुरू कर दी। देखते ही देखते सभी लोग नाचने लगे।

न्यायाधीश भी नाच रहा था। कई घंटे गुजर गए पर सारंगी बजती रही। सभी लोग नाचते-नाचते थक गए। हारकर न्यायाधीश चिल्लाया, "बंद करो यह सारंगी। बहुत हो चुका... मैं तुम्हारी सज़ा भी माफ़ करता हूँ।"

लड़के को भला और क्या चाहिए था– उसने सारंगी बजानी बंद कर दी।

सभी खुश थे कि चलो जान तो बची। तभी लड़के ने थैली के मालिक को बुलाया और कहा, "अब तुम यह बताओ कि थैली भर मुहरें तुम लाए कहाँ से? नहीं बताओगे तो मैं सारंगी बजानी शुरू कर दूँगा।"

अब वह आदमी घबराया, "देखो भाई, तुम सारंगी मत बजाओ। मैं सच-सच बता देता हूँ। यह मुहरों भरी थैली मैंने एक अमीर आदमी के यहाँ से चुराई है..."

यह सुनते ही न्यायाधीश खड़ा हो गया। उसने थैली-चोर को लंबी कैद की सज़ा दे दी।

लड़का सोच रहा था, "यह सब सारंगी का कमाल है" उसने मन ही मन बौने को धन्यवाद दिया।

28. किसान का बेटा

किसी गाँव में एक गरीब किसान रहता था। वह खेतों में मजदूरी करता था। उसका बेटा और पत्नी भी उसके काम में मदद करते थे।

एक बार पूरे देश में अकाल पड़ गया। किसान ने जो कुछ कमाया था, सब खर्च हो गया। भूखों मरने की नौबत आने लगी।

"चलो, हम शहर चलकर मजदूरी करेंगे।" एक दिन किसान ने पत्नी से कहा।

दूसरे दिन तीनों शहर की तरफ चल दिए। चलते-चलते वे एक जंगल में जा पहुँचे। तभी एक ज़ोरदार तूफ़ान आ गया। तूफ़ान थमने पर किसान ने खुद को एक पेड़ के नीचे बैठा पाया। उसकी पत्नी और बेटे का भी कहीं पता नहीं था। जंगल में ढूँढे भी तो कहाँ?

घूमते-घूमते किसान की भेंट एक बौने से हुई। किसान ने उसे बताया, "मेरी पत्नी और बेटा तूफ़ान में बिछुड़ गए हैं... मैं कई दिनों से उन्हें ढूँढ रहा हूँ। भूख के मारे मेरा दम निकला जा रहा है।"

बौने को किसान पर दया आ गई। वह उसे अपने घर ले गया। किसान को रोटी और दूध खाने को दिया। किसान ने बौने को धन्यवाद दिया और जाने लगा। जाते-जाते बौने ने उसे एक बटुआ दिया। बौने ने बताया, "जब जरूरत हो पैसे निकालते रहना। बटुआ कभी खाली नहीं होगा।"

किसान ने एक बार फिर धन्यवाद दिया। किसान जाने लगा तो बौने ने फिर टोका, "देखो तुम्हारे बेटे को चौदह साल का होते ही मैं ले जाऊँगा। इस बटुए के साथ यही शर्त है।"

"नहीं, मुझे ऐसा बटुआ नहीं चाहिए।" किसान रोने लगा।

बौने को गुस्सा आ गया। उसने किसान को डराया, "बटुआ नहीं लोगे तो मैं तुम्हें मार डालूँगा।"

बेचारा किसान क्या करता ! उसने बटुआ रख लिया।

उधर किसान की पत्नी अपने बेटे के साथ एक साधु के आश्रम में जा पहुँची थी। वह साधु की सेवा करती और आश्रम का सारा काम देखती। साधु उसकी सेवा से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने किसान की पत्नी से खुश होकर कहा, "तुम्हारा बेटा बड़ा वीर बनेगा। उसका विवाह भी किसी राजकुमारी से होगा।" फिर उसने किसान की पत्नी और बेटे को किसान के पास पहुँचा दिया।

किसान पत्नी और बेटे को देखकर बहुत खुश हुआ। तीनों सुख से रहने लगे। धीरे-धीरे यह बात सारे देश में फैल गई कि किसान के बेटे का विवाह राजकुमारी से होगा। राजा ने यह बात सुनी तो उसे बहुत गुस्सा आया। उसने किसान के बेटे को गिरफ़्तार करवा दिया। फिर चुपके से उसे एक बक्से में बंद करवाकर नदी में फेंक दिया।

बहते-बहते बक्सा एक घाट के किनारे जा लगा। घाट पर कोई व्यापारी नहा रहा था। वह बक्सा उठाकर घर ले आया। बक्सा खोला तो किसान का लड़का निकला। व्यापारी ने उसे अपने साथ रख लिया। देखते-देखते किसान का बेटा चौदह साल का हो गया। उधर बौना किसान के बेटे को लेने आ पहुँचा। बेटा तो था नहीं, वह किसान को ही ले गया।

ठीक इसी दिन राजकुमारी भी राजमहल से गायब हो गई। राजा राजकुमारी को बहुत प्यार करता था। उसने तुरंत घोषणा करवा दी – "जो व्यक्ति राजकुमारी का पता बताएगा उसका विवाह राजकुमारी के साथ कर दिया जाएगा। आधा राज्य भी उसे दे दिया जाएगा।"

एक दिन किसान का बेटा अपनी माँ से मिल गया। माँ ने उसे बताया कि बौना किसान को अपने साथ ले गया है।

किसान को छुड़ाने के लिए उसका बेटा निकल पड़ा। पता-ठिकाना तो था नहीं... वह जंगलों में बौने को ख़ोजता भटकता रहा। जंगल में उसे एक बूढ़ी औरत दिखाई दी। वह लकड़ियों का गट्ठर लेकर जा रही थी। किसान के बेटे ने उससे कहा, "लाओ दादी माँ, मैं पहुँचा दूँ।"

किसान के बेटे ने लकड़ी का गट्ठर दादी माँ के घर पहुँचा दिया। दादी माँ ने उससे पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो बेटे?"

"बौने से लड़ने।" किसान के बेटे ने बताया, "वह मेरे पिता को उठा ले गया है।"

यह सुनकर दादी माँ ने उसे एक थैला दिया। थैले में एक रीछ का बाल, मछली की खाल और चिड़िया का पंख था।

ये तीनों चीज़ें अनोखी थीं।

बाल को दबाने से रीछों का राजा सामने आ जाता था। खाल को दबाने से मछलियों की

महारानी आ जाती थी। पंख को दबाने से पक्षियों का राजा आ खड़ा होता था।

किसान का बेटा थैला लेकर जंगल में आ पहुँचा। उसने सबसे पहले मछली की खाल दबाई। तुरंत मछलियों की महारानी सामने आ गई। किसान के बेटे ने उसे बौने की कहानी सुनाई। मछलियों की महारानी ने बताया, "बौने को तो एक ही तलवार से मारा जा सकता है। वह तलवार पहाड़ों के राजा के पास है।"

अब किसान के बेटे ने रीछ का बाल दबाया। रीछों का राजा आ खड़ा हुआ। किसान का बेटा उसकी पीठ पर बैठ गया। पलक झपकते ही वह पहाड़ों के राजा के महल के सामने खड़ा था।

पहाड़ों के राजा की तलवार लेकर वह अब बौने के पास जाना चाहता था। उसे थैले में रखे पंख की याद आई। पंख दबाते ही पक्षियों का राजा आ गया। उसने किसान के बेटे को बताया कि बौना एक द्वीप में रहता है। किसान का बेटा पक्षियों के राजा की मदद से उस द्वीप में जा पहुँचा।

बौना सामने ही खड़ा था। किसान के बेटे ने बौने को तलवार से मार गिराया।

राजकुमारी भी वहीं क़ैद थी। पिता और राजकुमारी को छुड़ाकर वह सीधा राजमहल आया।

राजा ने किसान के बेटे की वीरता से खुश होकर राजकुमारी का विवाह उसके साथ कर दिया।

29. देवदूत और तीन भाई

तीन भाई थे। तीनों मिल-जुलकर काम करते। दो भाई खेत पर काम करने जाते, तो एक घर पर रहता। जो घर पर रहता वह नाशपाती के पेड़ की रखवाली करता।

एक दिन स्वर्ग से एक देवदूत आया। बड़ा भाई बैठा नाशपाती के पेड़ की रखवाली कर रहा था। भिखारी बने देवदूत ने कहा, "क्या तुम मुझे एक पकी नाशपाती खाने को दोगे?"

बड़े भाई ने उसे अपने हिस्से की एक नाशपाती दे दी। देवदूत ने उसे धन्यवाद दिया और चला गया।

दूसरे दिन मझला भाई पेड़ के पहरे पर बैठा था। भिखारी पहले दिन की तरह फिर आया। उसने मझले भाई से कहा, "क्या तुम मुझे कुछ पकी नाशपातियाँ दे दोगे?"

मझले भाई ने भिखारी को एक नाशपाती दे दी। उसने भिखारी को बताया, "देखो, तुम एक नाशपाती ले लो। यह मेरे हिस्से की थी. मैंने दे दी। अब मैं और नहीं दे सकता।"

भिखारी नाशपाती लेकर चलता बना।

तीसरे दिन फिर भिखारी बना देवदूत आ पहुँचा। इस दिन सबसे छोटा भाई पहरे पर बैठा हुआ था।

भिखारी ने उससे भी नाशपाती माँगी। छोटे भाई ने भी एक नाशपाती दे दी। उसने बताया, "बाबा, यही मेरे हिस्से की थी। और मैं नहीं दे सकता।"

भिखारी ने छोटे भाई को धन्यवाद दिया और चला गया।

कुछ दिनों बाद भिखारी फिर वहाँ पहुँचा। इस समय तीनों भाई घर पर ही थे। भिखारी ने भाइयों से कहा, "बच्चों, तुम मेरे साथ आओ! मैं तुम्हें अच्छा काम बताऊँगा।"

तीनो भाई भिखारी के साथ चल दिए। थोड़ी देर बाद एक नदी दिखाई दी।

नदी देखकर बड़े भाई ने कहा, "काश यह नदी शहद से भर जाए! मैं इसका मालिक बन जाऊँ।"

देखते ही देखते नदी शहद से भर गई। खरीददारों की भीड़ लग गई।

भिखारी बने देवदूत ने बड़े भाई से कहा, "देखो, अब तुम अपना व्यापार सँभालो। हम जाते हैं। पर गरीबों का हमेशा ख्याल रखना।"

भिखारी मझले और छोटे भाई को लेकर आगे चल दिया। थोड़ी देर बाद एक मैदान दिखाई दिया। मैदान में कबूतर दाना चुग रहे थे।

भिखारी ने मझले भाई से पूछा, "तुम क्या चाहते हो?"

मझले भाई ने कहा, "काश, ये कबूतर भेड़ें बन जाएँ। मैं इनका मालिक बन जाऊँ।"

देखते ही देखते कबूतर भेड़ों में बदल गए।

भिखारी ने कहा, "लो, अब अपनी भेड़ें सँभालो। हम चलते हैं। पर याद रहे गरीबों का भला ही करना।"

भिखारी और छोटा भाई आगे चल दिए। थोड़ी दूर पहुँचकर भिखारी ने छोटे भाई से पूछा, "क्यों भाई, तुम क्या चाहते हो?"

छोटे भाई ने कहा, "मुझे तो धर्मपरायण स्त्री चाहिए।"

भिखारी ने उस देश की राजकुमारी से उसका विवाह करवा दिया। चलते-चलते उससे भी भिखारी ने वही बात कही।

कई वर्षों बाद देवदूत फिर धरती पर आया। उसे तीनों भाइयों की याद आई। रूप बदलकर वह एक गरीब बन गया। सबसे पहले वह बड़े भाई के पास गया। उसने रोते हुए कहा, "बाबू गरीब को थोड़ा-सा शहद दे दो।"

बड़ा भाई चिल्लाया। "चल हट, भिखारी कहीं का। ऐसे दान करने लगा तो व्यापार कैसे चलेगा!"

देवदूत ने ज़मीन पर लकड़ी से कुछ लकीरें खींच दीं। बस, देखते ही देखते शहद भरी नदी गायब हो गई। उसकी जगह पानी की नदी बह रही थी। देवदूत ने बड़े भाई को डाँटा, "तुम पैसे वाले हो गए थे न। तुम्हारा ध्यान गरीबों पर कैसे टिकता। जाओ अपने नाशपाती के पेड़ की रखवाली करो।"

अब देवदूत मझले भाई के पास गया। यह भाई दूध और भेड़ों का व्यापार कर रहा था।

भिखारी ने उसके पास जाकर कहा, "क्यों भाई, तुम मुझे जरा-सा दूध दे दोगे क्या?"

मझला भाई चिल्लाया, "चल हट तेरे जैसे आदमी को कौन दूध देगा।"

भिखारी ने ज़मीन पर कुछ लकीरें खींचीं।

दूसरे ही पल सब कुछ गायब हो गया। भिखारी ने मझले भाई से कहा, "जाओ, नाशपाती के पेड़ की रखवाली करो। तुम और कुछ नहीं कर सकते..."

अब भिखारी छोटे भाई के पास जा पहुँचा। वह अपनी पत्नी के साथ एक झोंपड़े में रहता था। भिखारी ने दरवाज़े पर पहुँचकर कहा, "भूखे बाबा को कुछ खाने को दे दो। ईश्वर तुम्हें और देगा।"

छोटे भाई ने कहा, "बाबा, हम लोग बहुत गरीब हैं। हमारे पास रूखा-सूखा जो भी है, आपके लिए है। आप भोजन कीजिए और आराम से दो-एक दिन ठहरिए।"

छोटे भाई की पत्नी भोजन लेकर आई। उसने क्षमा माँगते हुए कहा, "बाबा, क्षमा कीजिएगा। हमारे यहाँ गेहूँ के आटे की रोटी नहीं है। आपको जंगली भोजन करना पड़ेगा।"

भिखारी ने कहा, "कोई बात नहीं, सब ठीक हो जाएगा..." छोटे भाई की पत्नी रसोई में गई तो दंग रह गईं। आटे की बोरियों का ढेर लगा था। वह बहुत खुश हुई। उसने मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद दिया। झरने से पानी लेकर आई तो वह शहद बन गया। छोटा भाई भी यह सब देखकर भोचक्का-सा रह गया।

भोजन करने के बाद भिखारी बने देवदूत ने कहा, "तुमने गरीबों को भुलाया नहीं है। ईश्वर तुम्हारा भला करे।"

इसके बाद देवदूत ने ज़मीन पर कुछ लकीरें खींची। देखते-देखते झोंपड़ी महल में बदल गई। नौकर-चाकर काम करने लगे। छोटा भाई और उसकी पत्नी आँखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे।

भिखारी ने कहा, "बेटा ये सब तुम्हें ईश्वर ने दिया है। जब तक गरीबों को याद रखोगे, सुखी रहोगे..."

अब पति-पत्नी सुख से रहने लगे।

30. करामाती टोपी

एक था गरीब और बेसहारा लड़का। अकेला होने पर भी वह घबराता नहीं था। उसे एक किसान के यहाँ काम मिल गया। वह दिन भर मेहनत करता। शाम को किसान से अनाज लेकर खाना बनाता।

लड़के की मेहनत और ईमानदारी से किसान खुश था। कुछ दिनों बाद किसान ने उसे एक बैल दे दिया।

बैल पाकर लड़का बहुत खुश हुआ। सोचने लगा, "अब मैं बेकार पड़ी ज़मीन को जोतूँगा। फसल उगाकर अमीर बन जाऊँगा।" वह बैल लेकर बहुत दूर निकल गया।

दोपहर की तेज़ धूप थी। लड़का अपनी धुन में बैल को हाँकता हुआ जा रहा था। उसे आवाज़ सुनाई दी, "ऐ लड़के!" उसने पलटकर देखा। तीन आदमी खड़े दिखाई दिए, एक आदमी बोला, "यह बकरा कितने का खरीदा तुमने?"

"श्रीमान् यह बकरा नहीं बैल है। मेरे मालिक ने मुझे भेंट में दिया है।" लड़के ने अनजान आदमी को समझाया।

तीनों आदमी हँसने लगे।

पहला बोला, "देखो इस पागल को। यह जरूर नशे में है। बकरे को बैल बता रहा है..."

दूसरा बोला, "तगड़ा बकरा हो, तब भी कोई बात हो। ये तो है भी कितना कमज़ोर। इसे तो कोई मुफ़्त में भी न लेगा। कौन जाने कब दम तोड़ दे?"

तीसरे ने सहानुभूति जताते हुए कहा, "देखो, यह लड़का गरीब मालूम पड़ता है। इस बेचारे की हमें मदद करनी चाहिए। चलो चार-पाँच रुपये देकर यह मरियल-सा बकरा खरीद लेते हैं।"

पहले आदमी ने अपनी जेब से पाँच रुपये का नोट निकाला और लड़के के हाथ में पकड़ा दिया। लड़का कुछ समझ न पाया। दूसरे आदमी ने बैल की रस्सी अपने हाथ में ले ली।

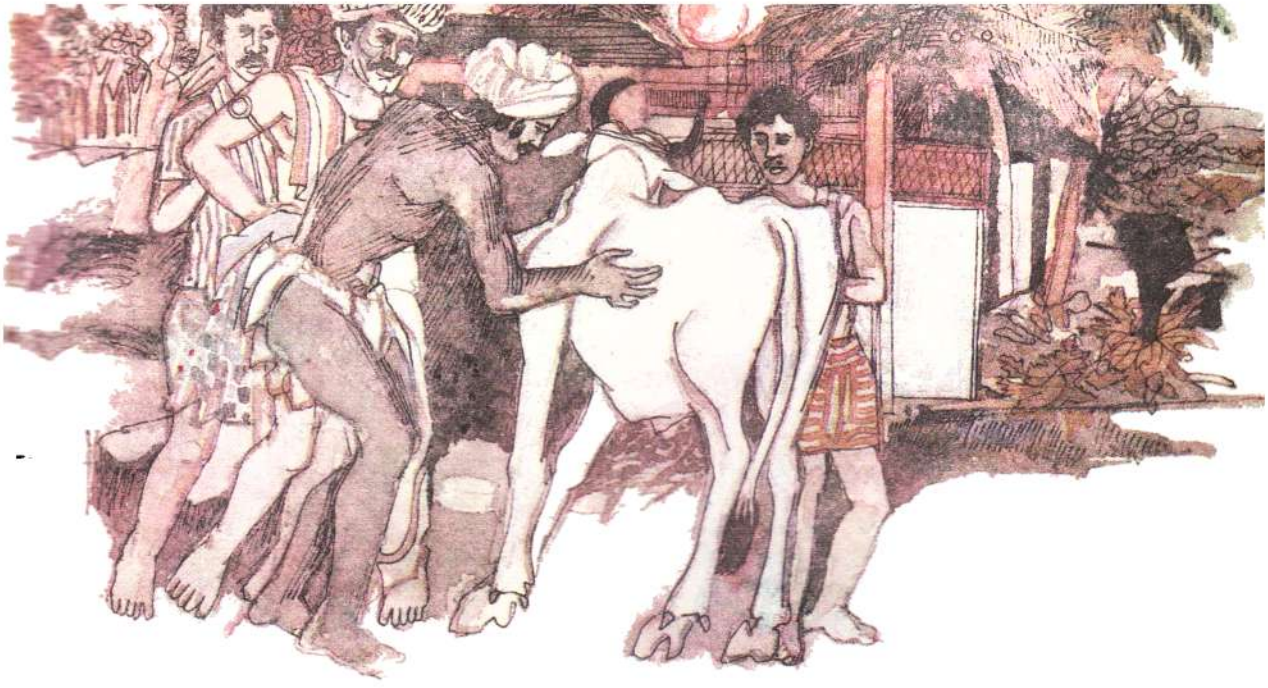

लड़का भोचक्का-सा देखता रह गया। वह चिल्लाना चाहता था। पर बेचारा गुम-सुम खड़ा रहा।

तीनों आदमी बैल लेकर दूसरी दिशा की ओर बढ़ गए। लड़का दौड़ता हुआ उनके पास पहुँचा, "आप लोग कितने दयालु हैं। आप मेरे बकरे को न खरीदते तो मैं भूखा मर जाता। मैं अकेला और बेसहारा हूँ। क्या आप लोग मुझे अपना नौकर बनाकर रख सकते हैं?"

तीनों आदमी लड़के की बात से बड़े प्रसन्न हुए। मुफ़्त का नौकर मिलता देख उन्होंने हामी भर दी और उसे अपने साथ ले लिया।

लड़का मेहनती और ईमानदार तो था ही। कुछ ही दिनों में उसने तीनों का दिल जीत लिया। सुबह उठते ही वह मशीन की तरह काम पर लग जाता। सूरज डूबते समय काम छोड़ कर खाना-पानी जुटाता।

एक दिन लड़का गाँव के मेले में गया। लौटा तो उसके सिर पर जोकरों वाली लंबी टोपी थी। तीनों आदमी टोपी देखकर हँसने लगे।

पहले ने पूछा, "अरे यह जोकरों की टोपी कहाँ से उठा लाया"। "यह जोकरों की टोपी नहीं है। यह तो करामाती टोपी है। इसे पहनकर मनचाही मुराद पूरी हो सकती है। यह तो मैं छिपाकर रखता था। आज मेले में गया, तो सोचा लगाता जाऊँ।" लड़के ने गंभीर होकर बताया।

तीनों आदमी चुप। वे मन ही मन कुछ सोच रहे थे। तभी लड़का बोला, "लगता है,

आप लोगों को मेरा विश्वास नहीं। कभी मेरे साथ बाज़ार चलिए तो देखिए। करामाती टोपी किस तरह कमाल दिखाती है।"

तीनों आदमी एक साथ बोल पड़े, "हाँ यह ठीक है... हम परसों तुम्हारे साथ बाज़ार चलेंगे।"

तीनों अपने काम पर चल दिए। उधर लड़का टोपी पहने बाज़ार की ओर चल दिया। उसने तीन बड़ी दुकानों के मालिकों को रुपए थमा दिए। उसने कहा, "कल मैं अपने दोस्तों के साथ आऊँगा। वे जो कुछ भी माँगें उन्हें दे देना... जो कुछ खाना चाहें, खिला देना पर उनसे पैसे मत माँगना। यह पेशगी इसीलिए है।"

दुकानदार खुश था कि अच्छा ग्राहक फँसा है आज इतनी मोटी रकम, वह भी पेशगी।

लड़का भी खुश था कि उन आदमियों के रुपयों से ही उन्हें बेवकूफ बनाएगा।

दूसरे दिन लड़के ने टोपी पहनी और तीनों आदमियों को लेकर बाज़ार जा पहुँचा।

बाज़ार के सभी दुकानदार उसे कोई पागल रईस समझ बैठे थे। टोपी वाला जिस दुकान के सामने से होकर गुजरता दुकानदार उठकर सलाम करता।

पूरे बाज़ार में घूमने के बाद टोपीवाला एक बड़ी दुकान में घुस गया। सबने अपनी-अपनी पसंद का सामान खरीदा। दुकानदार टोपीवाले के आगे सिर झुकाए खड़ा रहा।

तीनों आदमी हैरान थे कि यह टोपी तो सचमुच करामाती है! लड़का मुसकराया। उसने अपनी टोपी ठीक की और आगे-आगे चल दिया।

अब वे चारों एक होटल में घुस गए। टोपी वाले को देखकर होटल का मालिक दौड़ा-दौड़ा आया और सिर झुकाकर बोला, "बताइए सरकार आपकी क्या सेवा करूँ? यह होटल आपका ही है।"

चारों ने छककर खाना खाया और चार मिठाई के डिब्बे बँधवाकर चल दिए। होटल का मालिक उन्हें दरवाज़े तक छोड़ने आया। बोला, "यह होटल आपका ही है। आप लोग फिर आइएगा।"

तीनों आदमी हैरान थे। यह नौकर बनकर हमारे साथ रहता है और बाहर रईस बन जाता है। बाज़ार भर में उनका खूब स्वागत हुआ। किसी दुकानदार ने पलटकर पैसे नहीं माँगे।

अँधेरा घिरने लगा तो वे चारों घर लौट आए।

घर पहुँचकर तीनों ने टोपीवाले से कहा, "यह टोपी हमें दे दो।"

लड़के ने साफ मना कर दिया। जब तीनों आदमियों ने बहुत ज़िद की तो वह बोला, "ठीक है, आप मुझे अपनी संपत्ति सौंप दें। मैं आपको टोपी सौंप दूँगा।"

रात होते ही तीनों ने अपनी जमा-पूँजी टोपीवाले लड़के को सौंप दी। लड़के ने टोपी उन्हें दे दी। अब वे सुबह की प्रतीक्षा करने लगे।

लड़के ने सुबह की प्रतीक्षा नहीं की। उसने सारा सामान बैल पर लादा और अँधेरे में ही निकल गया! सुबह होने तक लड़का बहुत दूर चला गया था। अब उसे नई जिंदगी शुरू करनी थी।

सुबह होते ही तीनों आदमी टोपी लेकर बाज़ार चल दिए। वहाँ उन्होंने एक होटल में खूब छककर खाना खाया। जब होटल वाले ने बिल थमाया तो आश्चर्य से उनकी आँखें फटी रह गईं।

"अरे, देखते नहीं हमारे पास करामाती टोपी है! हमसे पैसे क्यों माँग रहे हो?" तीनों एक साथ बोले।

"टोपी से हमें क्या लेना-देना? चुपचाप पैसे निकालो, वरना तीनों को जेल भिजवा दूँगा।" होटल के मालिक ने धमकी दी।

तीनों आदमी ऐसे खड़े थे जैसे साँप ने काट खाया हो।

31. लालच का फल

बरसों पुरानी बात है। समुद्र के किनारे एक झोंपड़ी बनी थी। उसमें एक बूढ़ा मछुआरा अपनी पत्नी के साथ रहता था। बूढ़ा गरीब जरूर था पर दिल का साफ था। पत्नी का स्वभाव उसके जैसा नहीं था। वह बात-बात पर लड़ती रहती थी। लालची भी कम नहीं थी। बूढ़ा बेचारा दिनभर मछलियाँ पकड़ता। थका-हारा शाम को घर लौटता तो बुढ़िया लड़ना शुरू कर देती।

एक दिन बूढ़े के हाथ एक भी मछली न लगी। उसने आखिरी बार जाल फेंका। इस बार एक छोटी-सी मछली फँस गई। बूढ़े ने मछली को उठाया ही था कि वह बोलने लगी। मछुआरा हैरान था। मछली आदमी की तरह कैसे बोल रही है!

मछली कह रही थी, "मछुआरे, मैं समुद्र की राजकुमारी हूँ। तू मुझे छोड़ दे। मैं तेरी सभी इच्छाएँ पूरी करूँगी।" मछुआरे को मछली पर दया आ गई। उसने मछली को पानी में छोड़ दिया।

घर पहुँचा तो बुढ़िया ने पूरा घर सिर पर उठा लिया। वह बार-बार मछुआरे को कोस रही थी। अंत में उसने कहा, "अच्छा, तुम अपनी मछली से कह कर एक लकड़ी की नाँद ही मँगवा दो।"

मछुआरा समुद्र के पास जा पहुँचा। उसने मछली राजकुमारी को आवाज़ लगाई। मछली उसके पास आ गई।

मछुआरे ने कहा, "मेरी पत्नी लकड़ी की नाँद माँग रही है।"

"अच्छा बाबा, तुम घर जाओ। तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी" मछली ने कहा और पानी में उतर गई।

मछुआरा घर पहुँचा तो नाँद देखकर बहुत खुश हुआ। पर उसकी पत्नी चिल्लाए जा रही थी? "अरे माँगना ही था तो मकान माँगा होता!"

मछुआरा दुखी मन से समुद्र की ओर चल दिया। समुद्र के किनारे पहुँचकर उसने मछली राजकुमारी को आवाज़ लगाई मछली पहले की तरह बाहर आ गई, "क्या बात है बाबा?"

"क्या बताऊँ, मेरी पत्नी मकान के लिए ज़िद कर रही है।" मछुआरा दु खी होकर बोला।

"जाओ बाबा तुम्हारी इच्छा पूरी होगी।" मछली ने कहा और पानी में उतर गई।

मछुआरा लौटकर घर आया तो देखता रह गया। झोंपड़ी की जगह एक बड़ा मकान खड़ा था। मकान देखकर मछुआरा बहुत खुश हुआ। उसने मन ही मन राजकुमारी मछली को धन्यवाद दिया। पर यह क्या, उसकी पत्नी अब भी परेशान थी।

"क्या बात है? अब तो तुम्हें खुश रहना चाहिए।" मछुआरे ने पत्नी से कहा।

"हाँ-हाँ सारे घर का काम करते-करते थक जाती हूँ। एक भी नौकर नहीं है। मैं अमीरों की तरह रहना चाहती हूँ समझे!"

बेचारा मछुआरा फिर समुद्र के पास जा पहुँचा। राजकुमारी मछली को उसने पत्नी की इच्छा बता दी।

मछली ने पहले की तरह कहा, "जाओ बाबा, तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी।"

घर लौटने पर मछुआरे के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। पूरा घर महल की तरह जगमगा रहा था – नौकर-चाकर अपने-अपने कामों में लगे थे।

मछुआरे की पत्नी अब ठाट-बाट से रहने लगी। वह कभी किसी के साथ अच्छी तरह बात न करती। पति को भी बात-बात पर डाँटती रहती।

एक दिन मछुआरे की पत्नी ने महारानी की सवारी जाते हुए देख ली। बस, फिर क्या था! उसने मछुआरे से कहा, "अपनी राजकुमारी मछली से कहकर मुझे महारानी बनवा दो।"

मछुआरे ने बहुत समझाया पर वह न मानी। हारकर मछुआरा फिर राजकुमारी मछली के पास पहुँचा। उसने उसे अपनी पत्नी की इच्छा बताई।

राजकुमारी मछली ने फिर वही जवाब दिया, "जाओ बाबा, तुम्हारी इच्छा पूरी हो।"

मछुआरा घर पहुँचा तो उसे चमकता हुआ महल नज़र आया। मछुआरे की पत्नी रानी बनी बैठी थी दास-दासियाँ उसकी सेवा में जुटी थीं। मछुआरे को देखते ही उसकी पत्नी चिल्लाई, "इसे अस्तबल में बंद कर दो।"

बूढ़ा मछुआरा कई दिनों तक अस्तबल में पड़ा रहा। फिर एक दिन उसकी पत्नी ने उसे अपने पास बुलवाया। इस बार वह चाहती थी कि उसे समुद्र की रानी बना दिया जाए। राजकुमारी मछली उसकी दासी बनकर रहे। उसने मछुआरे से कहा, "जाओ, उस मूर्ख राजकुमारी मछली के पास..."

मछुआरे ने बहुत समझाया पर बुढ़िया कहाँ मानतीं! हारकर मछुआरा फिर राजकुमारी मछली के पास पहुँचा।

राजकुमारी मछली ने पूछा, "कहो बाबा, अब क्या बात है?"

मछुआरे ने बताया, "अब मेरी पत्नी चाहती है कि वह समुद्र की रानी बन जाए... और तुम उसकी दासी बनकर रहो। मैंने उसे बहुत समझाया पर उसने एक न सुनी।"

राजकुमारी मछली बिना कुछ कहे पानी में चली गई। मछुआरा बहुत देर तक खड़ा रहा पर मछली ऊपर न आई। हारकर बूढ़ा वापस लौट आया। पर यह क्या, उसके महल के स्थान पर पुरानी झोंपड़ी खड़ी थी। उसकी पत्नी दरवाज़े पर बैठी रो रही थी।

32. तीन बातें

कई वर्ष पहले की बात है। रोम में डोमीटियन नाम का एक राजा राज करता था। उसके न्याय के किस्सों की धूम मची रहती थी। अपराधी तो उसका नाम सुनते ही काँपने लगते थे।

एक दिन डोमीटियन के दरबार में एक सौदागर आया। सौदागर ने बताया, "सरकार, मेरे पास कुछ बहुमूल्य चीज़ें हैं।"

राजा ने कहा, "पहले ये बताओ कि वे चीज़ें हैं किस काम की?"

सौदागर बोला, "सरकार तीनों चीज़ें तर्क और ज्ञान की बातें हैं। क्या आप खरीदना चाहेंगे?"

"पहले बताओ तुम उनकी कीमत क्या लोगे?" राजा ने पूछा।

"सिर्फ एक हज़ार स्वर्ण मुद्राएँ!" सौदागर ने मुसकराते हुए कहा, "ये चीज़ें बेकार साबित हुईं तो आपका पैसा वापस।"

"ठीक है। बताओ, वे बातें क्या हैं?" राजा ने उत्साह से पूछा।

सौदागर ने गंभीरता से तीनों बातें बता दीं, "नंबर एक – हर काम करने से पहले उसका परिणाम सोच लो। नंबर दो–बड़े रास्ते को छोड़कर पगडंडियों पर न जाओ। नंबर तीन – ऐसे घर के मेहमान न बनो जहाँ मालकिन युवा हो। अगर आप इन तीनों चीज़ों पर चलेंगे तो सुखी रहेंगे।"

राजा ने एक हज़ार स्वर्ण मुद्राएँ दे दीं। सौदागर चला गया।

धीरे-धीरे राजा के कुछ शत्रु पैदा हो गए। उन्होंने राजा को जान से मार डालने की योजना बनाई। इस काम के लिए राजा के नाई को चुना गया। नाई पहले तो इस काम के लिए तैयार न हुआ। राजा के शत्रुओं ने नाई को बहला-फुसला कर राजी कर लिया। तय हुआ कि दाढ़ी बनाते समय राजा का गला काट दिया जाएगा।

नाई राजा की दाढ़ी बनाने गया। राजा ने गले पर एक तौलिया लपेट रखा था। उस पर

लिखा था – "हर काम को करने से पहले उसका परिणाम सोच लो!"

नाई ने तौलिये पर लिखा यह वाक्य पढ़ लिया। वह सोचने लगा – राजा को मार कर तो मैं भी न बचूँगा। यह सोचते ही उसके हाथ से उस्तरा गिर पड़ा।

राजा ने नाई से पूछा, "क्या बात है? क्यों घबरा रहे हो?"

नाई ने राजा को सारा किस्सा सुना दिया। राजा ने नाई को सच बोलने पर क्षमा कर दिया।

कुछ दिनों बाद राजा किसी शहर की यात्रा पर गया। शत्रुओं ने रास्ते में ही उसे मार डालने की योजना बनाई। शहर जाने वाली पगडंडी पर वे छुपकर खड़े हो गए।

पगडंडी के पास पहुँचकर राजा के सेवकों ने कहा, "सरकार, इस पगडंडी से हम जल्दी पहुँच सकते हैं।"

राजा कुछ देर सोचता रहा। अचानक उसे सौदागर की बात याद आई, "बड़े रास्ते को छोड़कर पगडंडियों पर न जाओ।"

राजा ने सेवकों से कहा, "मैं तो बड़े रास्ते से ही जाऊँगा।

तुम लोग चाहो तो छोटे रास्ते से जा सकते हो।"

कुछ सेवक पगडंडी के रास्ते से चले गए। कुछ सेवक राजा के साथ बड़े रास्ते से गए।

पगडंडी पर खड़े शत्रुओं ने आहट सुनते ही आक्रमण कर दिया, राजा के कई सेवक मारे गए। उधर राजा बड़े रास्ते से आराम से शहर जा पहुँचा।

राजा ने मन ही मन सौदागर को याद किया। राजा खुश था कि दूसरी बार वह मरते-मरते बचा।

शत्रु बड़े परेशान हुए। हर बार राजा बच कैसे जाता है!

कुछ दिनों बाद राजा किसी गाँव में गया। ख़बर मिलते ही शत्रु वहाँ भी पहुँच गए।

राजा को गाँव में एक अच्छे घर में ठहराया गया। राजा को सौदागर की तीसरी बात याद आ गई। उसने घर की मालकिन को बुलवाया। कुछ ही देर में एक युवती ने आकर सिर झुकाया।

राजा ने पूछा, "क्या तुम इस घर की मालकिन हो?"

"जी सरकार, मैं ही इस घर की मालकिन हूँ।" युवती ने जवाब दिया।

रात होते ही राजा ने सेवकों से कहा, "मैं इस घर में नहीं ठहर सकता। मुझे तो किसी झोंपड़ी में ही टिका दो।"

सेवक तो वहीं रह गए लेकिन राजा झोंपड़ी में जाकर ठहरा। शत्रु घर की मालकिन से मिले हुए थे।

दूसरे दिन सुबह राजा तो सुरक्षित था। उसके बहुत से सेवकों को घर की मालकिन ने रात में ही मरवा डाला था।

राजा को सौदागर याद आ रहा था। उसकी तीन बातों ने राजा की तीन बार जान बचाई थी।

33. ठगों के बीच

छोटा-मोटा व्यापार करते हुए सौदागर तंग आ गया था। इस बार उसने सोचा, लंबा हाथ मारा जाए। किसी जानकार ने उसे बताया कि तेहरान में चंदन बेचो और बेहिसाब पैसा कमाओ। सौदागर को बात जँच गई। उसने अपने पास की तमाम चीज़ें बेच डालीं। ढेर सारा चंदन खरीदकर तेहरान की ओर चल दिया।

तेहरान का चंदन का व्यापारी घबराया। उसने सोचा, "अगर यह अपना व्यापार जमा गया तो मेरा व्यापार चौपट हो जाएगा।" उसने सौदागर को फँसाने की चालें सोचनी शुरू कर दीं।

तरकीब दिमाग में आते ही वह उछल पड़ा। चंदन की कुछ लकड़ियाँ लेकर वह सौदागर के पड़ाव की ओर चल दिया। रात के समय उसने अपने साथ रखी चंदन की लकड़ियाँ जलानी शुरू कर दीं।

लकड़ियों की महक सौदागर तक पहुँची। उसने बाहर निकलकर देखा तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। तेहरान का व्यापारी चंदन की लकड़ियाँ जलाकर रोटी सेक रहा था। सौदागर उसके पास जा पहुँचा और विनम्र भाव से बोला, "मैं चंदन का व्यापार करने के लिए तेहरान आया हूँ। मैंने तो सुना था कि चंदन यहाँ ऊँचे दामों पर बिकता है...

सौदागर को धीरज बँधाते हुए ईरानी व्यापारी बोला, "दोस्त, तुम तो बुरी तरह मारे गए। यहाँ तो चंदन कौड़ियों के ही भाव मिलता है। मगर तुम चिंता मत करो। मैं तुम्हारी मदद करूँगा। वैसे भी तुम मेरे मेहमान हो।"

सौदागर परेशान तो था ही। उसने अपने घाटे का हिसाब लगाना शुरू कर दिया। तभी तेहरान के व्यापारी ने उसके सामने प्रस्ताव रखा, "देखो दोस्त, तुम्हारी हालत पर मैं बहुत दुखी हूँ। तुम मेरे साथ चलो। अपना चंदन मुझे दे दो। बदले में जो चीज़ चाहो वह ले लेना। पर इसका इकरारनामा अभी लिखना होगा।"

बेचारा सौदागर... भूखा मरता क्या न करता! उसने हामी भर दी। इकरारनामा तैयार हो गया। उस पर दोनों के दस्तख़त भी हो गए। अब वे दोनों तेहरान पहुँचे।

तेहरान आकर सौदागर एक सराय में रहने लगा। तेहरानी व्यापारी अपने घर चला गया।

एक दिन बातों-बातों में सौदागर को पता चला कि चंदन का भाव तो तेहरान में बहुत ऊँचा है। सौदागर तेहरानी व्यापारी की चाल समझ गया। पर अब क्या हो?

एक दिन सौदागर घूमने के लिए शहर की तरफ निकल गया। वहाँ देखता क्या है कि कुछ लोग चौकड़ी लगाए बैठे शतरंज खेल रहे हैं। सौदागर ने पास पहुँचकर पूछा, "दोस्तो, हमें भी शतरंज खेलने का मौका मिलेगा?"

"क्यों नहीं, जरूर खेलिए मगर शर्त याद रखिए, हारने वाले को जीतने वाले की बात माननी पड़ेगी!" जवाब में सभी लोग एक साथ बोले। बरबादी के दिनों में भला बुद्धि का क्या काम! सौदागर ने तुरंत हामी भर दी। खेल पूरा हुआ तो सौदागर हार गया। जीतने वाले ने सौदागर से कहा, "अब तुम मेरे हुक्म का पालन करो। मैं चाहता हूँ तुम समुद्र का सारा पानी पी जाओ।"

सौदागर चकराया, "अरे भाई, तुम होश में तो हो। समुद्र का पानी और मेरा पेट... जरा अक्ल से तो काम लो। ऐसा हुक्म दे रहे हो जो पूरा ही न हो सके।" कहा-सुनी बढ़ गई तो काफी लोग आ खड़े हुए। भीड़ में से एक आदमी आगे आया और बोला, "दोस्तो मैं काना हूँ। यह सौदागर बहुत धूर्त किस्म का आदमी है। इसने मेरी एक आँख छीन ली है..." काने की बात अभी अधूरी ही थी कि एक आदमी और आगे आया और बोला, "यह आदमी बहुत मक्कार है साहब, इससे मेरा पत्थर का पायजामा वापस दिलवा दीजिए...."

यह सब सुनकर सौदागर तो वैसे ही परेशान हो गया था... भीड़ ने उसे और घेर लिया। लोग उसकी पिटाई शुरू करने वाले ही थे कि सराय का मालिक उधर से गुजरा। उसने सौदागर को लोगों में घिरा देखा तो पूरा किस्सा पता किया। सराय के मालिक की पूरे शहर में इज्जत थी। उसने सौदागर को अपनी जमानत पर छुड़ाया और कहा, "मैं इन्हें लेकर अदालत में आ जाऊँगा।"

लौटते हुए सराय के मालिक ने सौदागर को असलियत से परिचित कराया, "देखो दोस्त, यह शहर लुटेरों और ठगों का है। तुम्हें नया समझकर इन लोगों ने फँसा लिया है। घबराओ नहीं, शाम तक मैं तुम्हें बचाने की पूरी कोशिश करूँगा।"

दिन भर सौदागर ने न खाया न पिया, बैठा-बैठा सोचता ही रहा। शाम को सराय का मालिक आया तो उसने बताया, "सुनो, शहर के ठगों का नेता दोनों आँखों से अंधा है। रात

होने पर सारे ठग उसके पास जाकर अपनी कारस्तानियों का बयान करते हैं। तुम ऐसा करो, किसी तरह उसके अड्डे पर जा पहुँचो। वे सब वहाँ पहुँचेंगे और अपने करिश्मे नेता को सुनाएँगे। वह इन लोगों को जो कुछ बताए उसे गौर से सुन लेना। तुम्हारी मुसीबतें टल जाएँगी।"

सौदागर को तो अपने नुकसान की चिंता थी। उसने ठग का वेश बनाया और सीधा ठगों के नेता के ठिकाने की ओर चल दिया। दूसरे ठगों के पहुँचने से पहले ही वह पहुँच गया।

सौदागर चुपचाप दम साधे एक कोने में बैठा था। किसी का ध्यान उस तरफ नहीं गया।

एक-एक करके सभी ठग अपने-अपने करिश्मे सुनाने लगे।

सबसे पहले आया चंदन का व्यापारी। उसने अपना किस्सा सुनाया तो अंधे नेता ने उसे डाँटा, "मूर्ख, अगर सौदागर ने तुझसे चंदन के तोल के बराबर पिस्सू माँग लिए तो?"

इसके बाद आया शतरंज का खिलाड़ी। उसने भी अपना किस्सा सुनाया। अंधा नेता फिर गरजा, "तुम लोग तो धीरे-धीरे दिमाग से कमजोर होते जा रहे हो। अगर सौदागर ने समुद्र में गिरनेवाली नदियों का पानी रोकने को कह दिया तो...?"

अब आया तीसरा ठग। उसने अपनी बात बढ़ा-चढ़ाकर सुनाई और नेता की भी भली-बुरी सुनी, "मूर्ख, अगर सौदागर तुझसे कहे कि पाजामा सीने के लिए पत्थर का धागा लाकर दे दो... तब?"

अब काने की बारी थी। वह आगे आकर अपनी ठगी सुनाने लगा। कोने में बैठा सौदागर सब सुन रहा था।

काने की बात खत्म हुई तो नेता चीखा, "अगर सौदागर चाहे तो तुम्हारी दूसरी आँख भी जाती रहे। वह अगर तुमसे दूसरी आँख निकाल कर देने को कहे तो, क्या करोगे तुम बताओ?"

काने के तो होश ही उड़ गए।

अंत में नेता ने कहा, "देखो मैंने तो तुम्हें बता दिया है। हो सकता है मूर्ख सौदागर यह सब न सोच सके।"

कुछ ही दिनों बाद मुकदमे की तारीख आई। सराय का मालिक भी सौदागर को लेकर कचहरी जा पहुँचा।

काजी ने सबसे पहले चंदन का मामला ही उठाया। उसने सौदागर से पूछा, "चंदन के बराबर वजन का तुम्हें क्या चाहिए?"

सौदागर तो बहुत पहले से तैयार था, "मुझे तो आप चंदन के बराबर पिस्सू तुलवा दीजिए।" तेहरान का व्यापारी जवाब में कुछ न बोल पाया। काजी ने फैसला सुना दिया, "तुम सौदागर को ठगना चाहते थे। ... इसलिए अब तुम्हें हर्जाना देना होगा। सौदागर जिस कीमत पर चाहे चंदन बेच सकता है।"

उसी वक्त सौदागर को तेहरान के व्यापारी से दो हज़ार मोहरें दिलवा दी गईं।

दूसरा मुकदमा पत्थर के पाजामे का था। काजी ने सौदागर से सफाई देने को कहा।

वह बोला, "हुजूर, पहली बात तो यह कि पत्थर के कपड़े होते ही नहीं हैं। फिर भी मुझे पत्थर का धागा सिलने के लिए मिल जाए तो मैं इस आदमी का पाजामा इसे दे सकता हूँ।"

काजी ने उस ठग से पत्थर का धागा लाने को कहा। पर धागा हो तो आए भी।

काजी फौरन पहचान गया कि यह भी धोखाधड़ी का मामला है। उसने ठग पर भारी

जुर्माना किया।

अब बचा काना। सौदागर ने काजी से अनुरोध किया, "आप इस आदमी से अपनी दूसरी आँख निकाल कर देने को कहें तो मैं अपनी आँख के साथ रखकर इसे तोल लूँ।"

काजी को सौदागर की बात में सच्चाई मालूम हुई। उसने फौरन हुक्म जारी कर दिया कि आँख निकाल कर सौदागर को दी जाए।

काने ने यह सुना तो उसके होश उड़ गए। वह गिड़गिड़ाने लगा, "हुजूर, इस बार माफ कर दीजिए। फिर कभी ऐसा नहीं होगा।"

काजी कहाँ मानने वाला था। उसने बीस कोड़ों और तीन महीने के लिए जेल की सजा सुनाई।

अंत में जब शतरंज का खिलाड़ी खड़ा हुआ। सौदागर ने कहा, "काजी साहब, यह आदमी मुझसे समुद्र का सारा पानी पीने को कहता है। इससे कहिए कि यह नदियों का पानी समुद्र में गिरने से रोक दे। तभी मैं समुद्र का पानी पी सकूँगा।"

काजी को यह बात पसंद आई। काजी ने ठग से ऐसा ही करने को कहा, ठग तो डर से काँपने लगा।

काजी उसे कड़ी सजा सुनाने वाला था कि सौदागर बोला, "हुजूर, आपका इंसाफ सचमुच ऊँचा है। इन लोगों को हिदायत देकर छोड़ दें तो कैसा रहे?"

सौदागर की बात सुनकर काजी बहुत खुश हुआ। उसने कहा, "ठीक है, जैसी तुम्हारी इच्छा।"

सभी ठगों ने सौदागर के पैर पकड़ लिए।

34. परोपकारी हुलाची

बहुत पुरानी बात है। पेरू के राजा का एक विश्वासपात्र संदेशवाहक था। उसका नाम हुलाची था। हुलाची बहुत दयावान व्यक्ति था।

राजा अपने गुप्त संदेश हुलाची के हाथों ही भिजवाता था।

एक दिन हुलाची राजा का संदेश लेकर जा रहा था। रास्ता पहाड़ी था। वर्षा हो रही थी। पैर फिसल जाने से एक बुढ़िया रास्ते में गिर पड़ी थी। उसके सिर से खून बह रहा था।

हुलाची ने वहीं एक झोंपड़ी बना ली। फिर वह बुढ़िया को झोंपड़ी में ले गया। तीन-चार दिन बुढ़िया की अच्छी देखभाल की। बुढ़िया भली चंगी हो गई।

हुलाची जाने लगा तो बुढ़िया ने उसे ढेरों आशीर्वाद दिए। संदेश पहुँचाने में बहुत देर हो गई थी।

हुलाची राजा के पास लौटा तो राजा बहुत नाराज़ हुआ। उसने हुलाची को नौकरी से हटा दिया और देश छोड़कर चले जाने को कहा।

बेचारा हुलाची क्या करता! चुपचाप जंगलों की तरफ निकल गया। चलते-चलते जब वह थक गया तो उसे एक झोंपड़ी दिखाई दी। हुलाची झोंपड़ी के अंदर चला गया। झोंपड़ी में एक बुढ़िया बैठी थी। हुलाची बुढ़िया को देखते ही पहचान गया। यह वही बुढ़िया थी जिसकी उसने सेवा की थी।

बुढ़िया ने उसे पेट भर भोजन कराया। खाना खाते-खाते हुलाची की आँखों में आँसू आ गए। बुढ़िया ने पूछा तो हुलाची ने सारा हाल कह सुनाया।

बुढ़िया ने हुलाची को जादुई चप्पलें दीं, चप्पलें ऐसी थीं कि जहाँ चाहे वहाँ पहुँचा दें। बुढ़िया ने हुलाची को बताया, "बेटा, मैं ये चप्पलें किसी परोपकारी को ही देना चाहती थी। अच्छा हुआ तुम आ गए।"

चप्पलें पहनते ही हुलाची हवा में उड़ने लगा। वह सीधे अपने राजा के पास पहुँचा।

राजा का गुस्सा भी ठंडा पड़ चुका था। राजा ने उसे फिर से नौकरी दे दी।

हुलाची खुश था। उसे खोई हुई नौकरी जो मिल गई थी।

एक दिन हुलाची राजा का संदेश लेकर जा रहा था रास्ते में उसे एक घायल आदमी दिखाई दिया। हुलाची से न रहा गया। उसने घायल की ख़ूब सेवा की। जब वह ठीक हो गया तो हुलाची आगे बढ़ा। वापस लौटने पर राजा ने उसे ख़ूब डाँटा।

अब हुलाची ने फैसला कर लिया। वह अपने काम से मतलब रखेगा। बार-बार राजा को नाराज़ करना भी ठीक नहीं।

एक दिन वह एक जंगल से गुजर रहा था। ज़मीन पर एक घायल चिड़िया पड़ी थी। हुलाची ने सोच लिया था – पहले अपना काम पूरा करेगा। पर यह क्या, वह तो उड़ ही नहीं सका। उसी समय बुढ़िया वहाँ आ पहुँची।

हुलाची ने बुढ़िया को बताया, "चप्पलें बेकार हो गई हैं। मैं उड़ नहीं पा रहा हूँ।"

बुढ़िया ने चप्पलें पहनीं तो वह उड़ने लगी। हुलाची देखता रह गया। उसके पैरों में तो चप्पलें बेजान हो गई थीं। थोड़ी देर बाद बुढ़िया नीचे उतर आई।

"चप्पलें तो ठीक हैं।" बुढ़िया ने कहा।

हुलाची घायल चिड़िया के पास बैठा था। उसने उसका घाव साफ किया और दवाई

लगाई। ठीक होने पर चिड़िया उड़ गई।

अब हुलाची बुढ़िया के पास गया। उसने फिर से चप्पलें पहनीं। इस बार वह आकाश में उड़ने लगा।

थोड़ी देर बाद वह नीचे उतर आया। उसने चप्पलें बुढ़िया को लौटा दीं। वह समझ गया था कि चप्पलों ने उड़ना क्यों बंद कर दिया था।

हुलाची ने बुढ़िया को बताया, "मैंने घायल चिड़िया की सेवा नहीं की। इसलिए चप्पलें नहीं उड़ीं। अब मैं जीवन भर दीन-दुखियों के सेवा किया करूँगा..."

हुलाची तभी से अमर है।

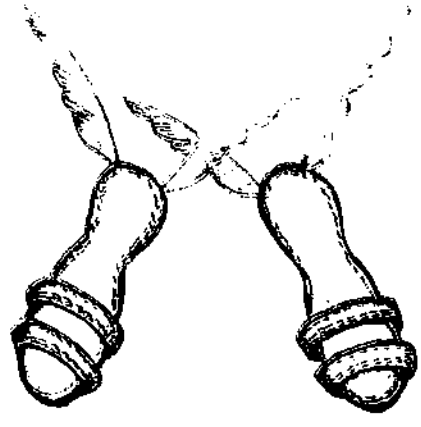

35. नया राजा

किसी गाँव में एक बुढ़िया अपने बेटे के साथ रहती थी। बेटे का स्वभाव बहुत अच्छा था। दिन भर खेतों में मेहनत करता और शाम को घर आ जाता। गाँव के सभी लोग उससे बहुत खुश थे।

अचानक देश में एक राक्षस का आतंक फैल गया। उसके आदेश को टालने का साहस कोई न कर पाता। राजा तक डर के मारे देश छोड़कर भाग गया। जिसे जहाँ जगह मिली वहीं जा छिपा। पूरे देश में भगदड़ मच गई।

बेचारी बुढ़िया और उसका बेटा कहाँ जाते। गाँव में वे ही दो प्राणी बचे रह गए।

एक दिन ख़बर आयी कि राक्षस माँ-बेटे को खाना चाहता है। बुढ़िया डर के मारे काँपने लगी। बेटे ने माँ को समझाया। उसने कहा, "तुम घबराओ मत माँ! मैं राक्षस को हराकर रहूँगा।"

बेटे की बात सुनकर माँ घबरा गई। उसने पूछा, "तुम्हारे पास तो कोई हथियार भी नहीं है। तुम अकेले उससे लड़ोगे कैसे?"

बेटा तो लड़ने की ठान चुका था। उसने उत्साह में भरकर कहा "तुम चिंता न करो। मैं अकेला नहीं लड़ूँगा।"

बेटे का उत्साह देखकर बुढ़िया ने कहा, "जा बेटा, ईश्वर तेरी सहायता करेगा।"

बेटा दूसरे दिन चल पड़ा। चलते-चलते वह एक चौराहे पर पहुँचा। वह चौराहे पर बैठ गया और चाकू तेज़ करने लगा। जो भी उसे देखता, पूछता, "क्यों भाई यह क्या कर रहे हो?"

"मैं तेज़ धारवाले चाकू से राक्षस को मारूँगा। क्या तुम मेरी सहायता करोगे?" ज़वाब में बुढ़िया का बेटा पूछता। लोग घबराकर भाग जाते।

कोई आदमी उसकी सहायता को तैयार न था। हारकर वह जंगल की तरफ चल दिया,

जंगल में उसे नागराज मिला।

नागराज को उसने पूरी कहानी सुना डाली। लड़के का साहस देखकर नागराज बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपनी पूरी सेना सहायता के लिए दे दी।

लड़का कुछ और आगे गया। वहाँ उसे बिच्छुओं का राजा मिल गया। बिच्छुओं के राजा को भी उसने पूरी कहानी बता दी। इस पर वह भी तैयार हो गया। उसने कहा, "साहसी लड़के, मैं अपनी पूरी सेना तुम्हें सौंपता हूँ। जाओ उस दुष्ट राक्षस को मार डालो।"

लड़का आगे बढ़ता गया। कुछ आगे चलकर मधुमक्खियों की रानी मिली। वह भी साहसी लड़के की सहायता को तैयार हो गई।

लड़का कुछ और आगे गया। अब उसे सियारों का सरदार मिला। उसने भी साथ देने का वचन दिया।

देखते-देखते ऊँट, हाथी, भैंस, गाय, बैल, सुअर, गधा और बंदर भी उसके साथ हो लिए।

खेत में लगी हरी मिर्चों की रानी को भी पता लगा वह भी सब्जियों की फौज़ लेकर तैयार हो गई।

अब राक्षस से बदला लेने का दिन भी आ गया।

पूरी सेना के साथ लड़का चल दिया। उसके हाथ में तेज़ धार वाला चाकू था। राक्षस नदी के पार पहाड़ पर रहता था।

नदी के किनारे आकर सेना रुक गई। नदी पार करने की तरकीबें सोची गईं। तभी हाथियों ने किनारे के बड़े पेड़ों को गिराना शुरू कर दिया। दूसरे जानवर मिट्टी ढोने लगे। धीरे-धीरे नदी पर पुल तैयार हो गया। सेना ने पुल पर चढ़कर नदी पार कर ली। देखते-देखते रात हो गई। चारों ओर अँधेरा छा गया। तभी जुगनू आगे आ गए। उनकी रोशनी में सेना आगे बढ़ने लगी।

अब सेना राक्षस के पहाड़ी किले पर जा पहुँची। किले के दरवाज़े बंद थे। राक्षस उस समय गहरी नींद में सोया पड़ा था। सेना किले के भीतर जाए तो जाए कैसे? तभी कद्दू और लौकी की बेलें सामने आ गईं और देखते ही देखते किले की दीवार पर चढ़ने लगीं। नागों की सेना भी रस्सियों की तरह दीवारों पर फैल गई।

थोड़ी देर में पूरी फौज़ किले के अंदर पहुँच गई। किले के सभी दरवाज़े खोल दिये गए। नागों ने राक्षस पर आक्रमण करके उसके पूरे शरीर को जकड़ लिया। फिर बिच्छुओं ने खूब डंक मारे। मिर्च राक्षस की आँखों में जा घुसीं। बुढ़िया के बेटे ने राक्षस का पेट चीर दिया। बचा-खुचा काम हाथियों, घोड़ों और गधों ने पूरा कर दिया। राक्षस का काम तमाम हो गया

पूरे देश में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। बुढ़िया के लड़के को सभी ने मिलकर देश का नया राजा बना दिया। बुढ़िया राजमाता बन गई।

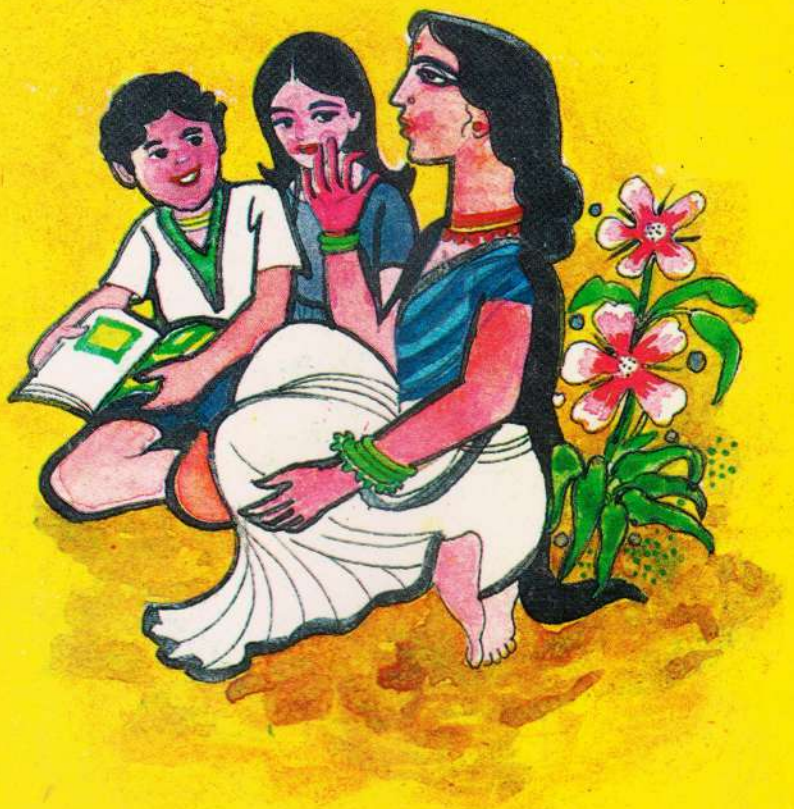

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING